



I ISSN 2229-547X VI DEHA



'बिदेह' १२८ म अंक १५ अप्रैल २०१३ (वर्ष ६ मास ६४ अंक १२८)

ए अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य

—



२.१. गिरिशं चन्द्र सा- 'दिवस कव' :: सर्वेय समाजक अतिदुःखीय सकावात्मक प्रसव



२.२. जाति टोधी-एक हांग: छट रूड - भाग-४



२.३. नरेंद्र कुमार सा- रॉशन गेन मैथिली: रवत मिथिला

३. गद्य



३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अग्नि'-गजन १-२



३.२. सुमित मिश्र- ललित गजव



३.३. जगदीश्वर सा 'सम्य'- गजव



३.४. १. जगदीश्वर प्रसाद मजुवर २.



महाज कमार मजुवर



३.३. बिजयेश्वर मजुवर



३.६. सुमित मिश्र- प्रसाद



प्रसाद मजुवर- रौत उंगलाम- ले धाड़-ए

विदेह वृत्त अंक भाषाशास्त्र बचनलेखन-



मानवीयटिबुनाधुनिकजीवनयोर्गिथिः सम्पुष्कः । रिद्यारचम्पति डा. मदनमदनः VI DEHA
MAI TH LI SANSKRIT EDUCATI ON (cont d.)



बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट



VI DEHA MAI THI LI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

बिदेह इ-पत्रिकाक सभ्दा प्रवाण अंक (ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीटाँक लिंकपव उगएँ अछि । All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link .

बिदेह इ-पत्रिकाक सभ्दा प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी कएमे Videha e journal 's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह इ-पत्रिकाक पहिन ३० अंक

बिदेह इ-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



बिदेह आब.एस.एस.एल.डी एनीमेष्टबलेँ अपन साइट/ रीगपव नगाडु ।



रीगप "लेआउट" पव "एड गाडजेट" मे "हरीड" सेलेक्ट कए "हरीड यु.आब.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठीगप केनसँ सेहो बिदेह हरीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल रीडरमे पठरौ लेन <http://reader.google.com/> पव जा क२ Add a Subscription रैषन लिंक कक आ खानी स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कक आ Add रैषन दराडु ।



Join official Videha facebook group.



Join Videha googl egroups



बिदेह वेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिन पोडकास्ट साइट

<http://videha123radiowordpress.com/>



मैथिली देरणागरी रा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि बहन छी, (cannot see/write Maitthili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीटाँक लिंक सभ पब जाई । संगहि बिदेहक सुँत मैथिली भाषापाक/ बरना लेखक नर-प्रवास अंक पढ़ू ।
<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीँकमे आँनताँग देरणागरी ठाँगप कक, रीँकमे कापी कक आ रई डाक्यूमेन्टमे पोस्ट कए रई फाँगलकेँ मेर कक । बिशेष जानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब सम्पर्क कक ।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM) / Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 / Flock 2.0 / Google Chrome for best view of 'Videha' Maitthili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maitthili e magazine in .pdf format and Maitthili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. बिदेहक प्रवास अंक आ अँडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकना/ ह्याँठे सभक फाँगल सभ (उँटाका, रीड सुँथ साव आ दूरक्षित मँत्र सहित) डाँडलनाड कवरौक हेतु नीटाँक लिंक पब जाई ।

VI DEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



जातिबिधेव पुरी महाकरि बिद्यापति । भावत आ लपानक मष्टिमे पसबन मिथिलाक धवती प्राचीन कानहिसँ महाण प्रकय ओ महिना लोकनिक कर्मतमि बहन अछि । मिथिलाक महाण प्रकय ओ महिना लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखु ।



लौबी-नीकबक पानरुमी कानक मुर्ति, एहिमे मिथिलाक्षरमे (१२०० बर्य पुरीक) अलिखेथ अकित अछि । मिथिलाक भावत आ लपानक मष्टिमे पसबन एहि तबहक अत्याच प्राचीन आ नर स्वाप, चित्र, अलिखेथ आ मुर्तिकनाक हेतु देखु मिथिलाक खोज



मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, श्रद्धासञ्चय संगति बिदेहक सर्ट-ऑनलाइन आ ब्यूज सर्भिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित लेखसभक सभक समग्र संकलनक लेल देखु बिदेह सूचना सम्पर्क श्रद्धासञ्चय

बिदेह ज्ञानरत्नक डिस्कसन होबक लेल जाँउ ।

"मैथिल आब मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरत्न) पब जाँउ ।

संपादकीय

१



गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

अपन मतेर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

२. गद्य



२.१. शिरकमार मा 'दिव्य कला' :: सर्वेभ समाजक अतिदुर्लभ सहायक श्रद्धासञ्चय



२.२. जाति टोखरी-एक सगः ४८ बूड - भाग-४



२.३. नरेंद्र कुमार सा-रॉष्ट्र गेल मैथिली: रॉवत मिथिला



निरुपमा सा 'ष्ट्र कवा :: सर्व समाजक अंतर्द्वेषन सकारात्मक प्रसंग

साम्यवाद मात्र कोला राजनीतिक चेतना ले अतिशयारीदी रोरमथाक बिकरु एकठा समाजरादी रिटावधावा थिक । मैथिली साहित्यक रंग अ रॉड पौघ रिडमरणा बहन जे रचनमँ तँ रॉत वाम बचणाकाव अणुकारेँ साम्यरादी मालेत छथि रूदा जखन कर्मक रॉव अरॉत छुनहि तँ कतौ कोला सार्थकता ले । गतिहास साझी अछि कोला भाषा साहित्यक विकास ओकव रिटावधावाक सम्यक समुपायणपव निर्भर बहन अछि । युवाणी साहित्यकाव होमवक गजियड आ ओडेसी, कार्मि मार्क्सक दाम कैरिष्ठनमँ न२ क२ मैक्सिम गोकी मदव आ माओतमे तुंगक आनकण्ट्राडिक्शन सन सावगर्भित रिदेशी पौथी सम्यरादादक सथाणकाक जेन क्रांतिक द्यातक थिक । नियो ठाकुरास आ लेनि ए दर्शनमे सुव्याक काज केनमि । आर्यारिठक गतिहास सेहो एमँ अक्काप ले । वामाचरित मानसमे वामराज्यक पबिकनणवा आ सरवीक मिलेह सम्यरादादक द्यातक थिक । मात्र टोपांगक कावणे अ ग्रन्थ जलथिय ले भेन । श्री मद्धागरत गीतामे प्रयाक उपदेशे निश्चित कपमँ शीतिक जेन ह्यरुक प्रतीक रूदा ए क्रांतिये सेहो समाजमे सम्यरादादक आशि नगाओन गेल । “देसिन रगणा सत जल मिष्टा”क कतेको प्रमाण कएन जाए रूदा हमर साहित्यक गतिहास श्री गाव आ यमोगाणमँ आगु ले रॉठि बहन छन । ए उपक्रमे ननित आ धुमकेतु सन आधुनिक बचणाकाव अरमेल सम्यरादादक आशि न२ क२ एनाह । एमँ पुरक साहित्य अणुण समाजमे केतरौ प्रमाणक धरुजकेँ जाजरनयमान कवए रूदा आन केरुक जेन मात्र मधु भाषा रॉनि क२ बहि गेल जागमे पग-पग पौथरि माड मथाममँ रेंसी आशि बाथरँ अलखन छन । कर्मरादिताक आधारणव जौ निर्णय कएन जाए तँ साहित्यमँ साम्यरादादक घृतरण मात्र किछुए साहित्यकावक लेखनीमँ महरैत भेटैत, जगमे प्ररुथ छथि जगदीश प्रसाद माडन, रेंगनाथ मिश्री याली, चतुवाण मिश्री, ननित, धुमकेतु, गजेन्द्र ठाकुर, स्वर्ण शिखर टोषरी, कुमार परण आ श्रीमती कमला टोषरी । रास्रतमे मैथिली उपन्यास र्मिमे साम्यरादादक संस्थापक रेंगनाथ मिश्री याली (प्रति- पारो) आ चतुवाण मिश्री (प्रति- कना) केँ मानन जा सकैछ । अ मात्र संयोग मानन जाए जे दुनु साहित्यकावक प्रति एकहि रर्य सन 1947 अमे प्रकाशित भेन । ओही कानमे याली परिपकर बचणाकाव त२ गेल छनाह, रूदा चतुवाण एकठा काँट क्रांतिरादी हरक बहथि । एकठा मजदुर आण्दोनक लेह्र केनिहाव 21 रर्यक नरहरकक लेखनीमँ निकसन ए उपन्यास ले समाजक जेन निखन क्रांतियीतकेँ पूर्ण रेटाविक मान्यता क्किक ले भेटैत

अ रिचावणीय प्रथम थिक । कनाक अतिरिक्त चतुर्वाण मशिीजी रिकाम, संसा माए, जागवा आदि नयु उंगन्याम लिखल छथि द्दा सामान्य पाठकक लेन साहित्यकाव ले माणन जागत छथि । कनाक पहिलक प्रकाशिन 1948 अमे लेन । मैथिली अकादमी म 1948 अमे ए पौथीके ह्येवम प्रकाशिन लेनक । हिवयोहण सा आ गात्री म चर्चित लोकनि एकव सावगर्भितम ह्यित लेनाह, द्दा पाग प्रथाण मिथिनामे “कना”के कहे जे राहरीक द्दवेठा मेहो ले लेठेन । समाजोचक लोकनि केतो-केतो मर्दादरमे उनेखे त कलेत छथि द्दा “जातिरीव” कहरोमे सकोच होगत छन्हि किएक त अ माग्यरादी बाजनीतिर कानम पूरिह लिखर जोडा देनक ।

आर प्रथम उठेत अछि जे चतुर्वाणके साहित्यक महिमा मडनक पिबली ले देन जाए किएक त पविपकर लेनाह राद लिखाण जोडा देनक आ मंग-मंग दोहरी चबि जे जगदीमे प्रसाद मडनके मेहो महतर ले देन जाए किएक त ओ पविपकर लेनाक राद लिखनक आ लिख बहन अछि की अ उचित... ?

एकठा समग्रयरादपव आघात माणन जाए । अ दू केलवो मशोगाण आ केलवो तगेदाम ले लिखनक । एकव एकव गतीव पकियाम जे जगदीमे प्रसाद मडनके “ठेगोव साहित्य मयाण” म समाण लेठेन द्दा मिथिनाक कोला समाचाव पत्रमे अ प्रकाशित ले लेन । मैथिली भाया मात्रमे ए प्रकावक अर्धतद्वगद्व मंतर लेक । समग्रयरादमे हमरा मरहक ओत किएक डोलि जागत अछि ? एकव अर्थ मग्यष्ट जे भायाक प्रचावक आ मरहक लोकनिमे पावदर्शितक मंग-मंग प्रतिभा मेहो ले छन्हि आ आतगनामि (complexion) मे अमित छथि ।

मात्र 54 पृथक एकठा लेठ-डीण जेकवा अतिरादी समाजोचकक दृष्टिमे मनुखाण मेहो कहन जा सकेछ, उंगन्यामिक प्रति “कना” मिथिनाक निवापद समाजक नावी दोहनक वृति छि थिक । मैथिलीमे वचनाक संख्या रैन आगानक तान वचनाकावक म्त्वक मुनाधाव होगछ । “कना” पठनाक राद अ मरहक प्रसाति त २ लेन । जग समाजमे अखला रिबरा रिखाह अमान्य माणन जागछ । ओ ग समाजक एकठा नावीमे चेतना आ सकारात्मक पकियामक मंग उद्वमेय प्रापतिक आमि नगभग 66 रय पूरि बाखर एकठा जातिरादी रिचावधावाक कावण माणन जा सकेछ । महमे राँरु गवीर द्दा उँट-नीट रूमनिहाव रयकति छथि । ओ अण 10 रयक जयेथ कया “कना”क रिखाह ले कव चहित छथि, द्दा पारिवारिक मथिति आ समाजक दमो-दिमो महमे राँरुक द्दथ रैन क २ देनकनि 50 रीया जमीनक माजिक रूठ रव मलजव भागमे कनाक रिखाह कव पडननि ।

अपवाधरोध नीक लोकके अरमेय होगछ । पविमथितरमे आर्थिक दृष्टिमे निःशिकृत महन्दे राँरु लेठीक रिखाहमे पूरिह अण कनिगाँक नाँमे समाजक आ पविमथितिक देन पीड लेके पतिया मरकप लिख निगता त २ लेनाह । एकठा रूठ रवक कनिगाँ जे मरहक पर काट कया डनीह आर रयममे ले द्दा जीरण शीलीमे पविमथितमे रयमथित आ लेमाहू त २ लेनीह । एक रयक दामपत्य जीरण रयतीत केनाक राद अत्रात योरणा रीनिका छिवाक “रूठ रव” करिताक नागिका जकाँ रिवा त २ लेनीह । द्दा “जो ले बाह्यम, जो ले पकय जाति । तोले मावलि हमरा मत मवि बहन डी... ।” केव उद्वय ले केनीह । माए-राँग आ समाजक देन अरमित रीधरुके मुक मरीकावोक्ति कनाक पविपकरताक ले पविमथितिक निम्यकय त २ लेन । “कना” रीधरुके कथमे काणि त बहथि द्दा लेठ रयमक कावणे जीरणमे एतेक भावी रिपतिक आगमन केव पूर्ण भाण ले लेन छननि । “अत्रात मर योरणा” कोला बाजकमानक कथागिका ले मिथिनाक गणगाण कव रँड । द्दम बाह्य जातिक कया) रिबरा मरकठी रनि लेनी । मरकिक दूहदूलीमे तवण कनाके देख मान् कहनथि-



“रौशनि कब बिबरक शोभा ले सकंठे थिक तँए हमर रिटाव जे कहरो बितहू ? ”

होब रंगा कातमे कनाक मुडल भेल । ई मिथिलाक तादात्म्य, मैथिल ज्ञानक शक्तिके की मागल जाए ? गहए कावण थिक जे सम्पूर्ण भावतमे धर्म सुवाव आनन्दोत्सव भेल, हृदा मिथिलामे ले । उना ए तबहक प्रवृत्ति आन ठामक ज्ञानमे सेहो छुनि, हृदा एतेक कष्टवता ले । अरनाक शोभितसँ जाति तरादी हथियावकेँ पिजा कइ कहिया धरि अप्पनाकेँ “सरणी” कहैत बहत, ई तँ अरशक्ति जेन ग्राह ले । जेँ एतरेँ ठामे “कना”क नजित कनाक गतिशील भइ गेल बहितए तँ निश्चये गण ले छन । अरना शिरना कनाकेँ हृदक दिखव सुन्दर रौनु जे रसममे कनाक शिताक समाज छथि चरित्र हण कइ कलकला पतिता आ कर्कशता मात्रक रूप दइ देनथि । कना गर्भरती भइ गेलीह । भवि दिनक गारि आ शोभसँ कना अमहज भइ मासुकेँ जेँर देनथि-

“अपण कोथि केहन भेलनि जे एहन सुख जे जगमगननि । शोख केहन भेलनि जे पचास रयिक रूठ रोँठी जे नख । रयिक कनियाँ तकेत छनीह... । ”

सुन्दर रौनु जे पलिल कनाक चरित्रता खननायक छनाह आर मर्यादा प्रकृषेत्तम रनि मागक आदेशेपव कनाकेँ मुडित कइ देननि ।

जखन ब्रियति अरोछ तँ सगरो दिने अहोब जेहले जेँर जेँरक प्रथमे कबेछ तेहले सकंठ । कना भाग कइ रेषावम चलि गेलीह । एकठा तखाकथित मैथिल भद्रमहिना सोमदाग कनाकेँ यडावसँ गनिका रेषा कइ रोँछए चाहैत छनीह । एकठा ज्ञानगी सहायतासँ कना चरित्र दोहसँ रूँटि तँ गेलीह हृदा पीड । अग्रहण भइ गेलनि । परिणाम भेल आत्महत्याक प्रथाम, हृदा अभागनिकेँ मवणाग सेहो कर्तन होगछ । सात दिन असुगतानमे बहनाक रौद जखन किछ सुवाव भेलनि तँ डा. कनारुदसँ साक्षात्कार जेँरमे सुखद अनुभूति नइ कइ आएन । हरक डा. कनारुद आत्महत्याकेँ उचित ले मालैत छथि । ओ सुवावरादी ज्ञान छथि । बिबरकेँ रेषाह कइ जेँरक चली... । डा. कनारुदक तर्क कनाकेँ अमहज नगननि । ए समाजमे बिबरक नावकीय स्थितिसेँ उद्धनित कना “सती प्रथा”केँ उचित मालैत छथि । केहेन बिकठ परिस्थिति थिक जेँगठामक गारी अरना जेँरक अतिशोभसँ रोँडी चरित्र हणक डकसँ सती हएँ उचित रूँवेत छथि । तखाकथित प्रकृषप्रधान सरन रक्षक गारी दिन भवि खँठैत बहए सत दैनिकीमे परिवारक सहयोगी हृदा यात्राकानमे अशुभ । आशुच्य अति समाजक अग्र आमणपव रैसन धर्म निर्माता आ रैरस्थाक कथाकथित मन्वरादी प्रवृत्ति ओ दर्शन । जेँ मन्वरादकेँ हृदसँ मालैत छथि तेयो एहेन दृष्टिकोण हएँ उचित ले । मल तँ एकव समर्थन कथमपि ले कएल हेत । जेँ हृदको गहए दृष्टिकोण छननि तँ एहेन रयकृतिक निखन स्मृति समाजपव कर्क मागल जाए । ए फ्रामे सभसँ नीक मागन चतुवाण जेँक समन्वयरादी रिटाववाक जेँरक रिश्या । डा. कनारुद अन्तवजातीय आ अन्तवर्णातीय रिश्याक समर्थक छथि कनारुदक ए दृष्टिकोणकेँ साम्यरादी रिटाववाक अनुशीलन हेतु चतुवाण जेँक आत्म उद्धार मागल जाए ।

उपस्थामक शिष्यकर्म सकावात्मक अति । डा. “कनारुद” कनारुदसँ “कनाकान्त” अर्थात् कना दागक पति भइ गेलीह । दंतलीन मैलजव भाग जकाँ ले सुन्दररौनुसँ समस्त शिक्षा ग्रहण करैरानी “कना”क सुयोग्य पति- डा. कनारुद । कनाक जिज्ञासा छननि जे बिबरा ट्रेनिंग केम्प चलैत बहए । ओ पूर्ण भेलनि । डा. कनारुद आर उषधानय खोनि बाजनीतिमे कुदए चाहैत छथि । उषधानयसँ जे आमदनी हेतनि ओसँ परिवारक भवण-पोषण डा. साहेरक मुन उद्देश्य छननि । बचकाक बाजनीतिक जेन प्रश्न ठाठ कइ देननि जे बाजनीतिमे बेहरना लोक समाज सेरकेँ अण उद्देश्य रेषारू । बाज्यक



धरमँ परिवारक शोषा ले जे तँ “आँसवेरी सरिस” हेरौक छली । कना मोनह रँथक रौद अणख लेहव एनीह दूदा सभ किछु नयष्ट भऽ गेल छननि । एँ उगण्यासमे महाजनरादी सुदिखोरी प्रथाक विरोध सेहो कएल गेल अछि ।

नियकर्यतः जे उगण्यास रिस्याक दृष्टिसँ किछु रिशेय ले किएक तँ मैथिलीमे कथोपकथनसँ रैसी रिस्यासक महत होगत छैक । छेष्टगव आ वसगव गणप एमे ले छैक तँ जे समाजोदक लोकनिके ले पचननि । जेँ चतुवाणन जीक एँ तबहक दृष्टिकोण जे अखन धरि मात्र कनषा थिक, समाज द्वारा अर्धतमसँ सरीकाव कऽ जेन जेए तँ चतुवाणन जीक लेखनीक सार्थकता परिवर्तित होएत ।

एँ मौलिक प्रतिक प्रार्थनिकता समाजमे अखला अछि । जे रक्षा सरसकेँ समर्पक कहत छथि ओगमे अखन धरि समाक सामररादी तत्रक विकासमे नागन धुन अखन धरि र्याप्त अछि । ओना स्थिति रँदनि बहलै आ रौन-रिखाह नगभग मिथिनामे न्युन भऽ गेलैक दूदा काँठव प्रथा आ रैधर्य जीरक दाकनीक रँथालेँ अखला सरँन समाजमे माण्यता छैक । लौक्य शिक्षा संप्रोतक मुनाखब बहन छथि तँ एँ बाजतँवीय रँरसथामे पएव पुजेरौक लिसका अधिकार छननि दूदा कि एँ रक्षाक रिहृत लोकनि ओग अधिकारक प्रयोग समाजमे समरररादी रँरसथोक स्थापनाक जेन कऽ सकननि ?

दरिद समाजमे तँ रँहृत हद धरि जाति-पातिक दृष्टिकोणमे कमी आएल दूदा आर्य समूह रिशेय कऽ कऽ मिथिनामे अखन धरि आनक प्रतिमाकेँ प्रात्साहित कवरँ रा सँस्रतिक एरी सामाजिक विकासमे भूमिका देरँएमे सरँन रक्षाकेँ अखला कछेष्ट होगत छननि । जाधरि एँ माणसिकतासँ दूकृति ले भेष्टत चतुवाणनजी सन समरररादी रिटावधावा प्रवाण बहिनो नृतन माणन जाएत । रिश्यास अछि जे सरसकेँ मुनाकन कएल जेए जे हम सभ कतए जा बहन छी गहए “कना”क कनात्माता ओ तादात्माक सार्थक श्रेष्ठाजनि हएत ।

एँ बचनपर अणख मंत्र ggajendr_a@videha.com पर पोछ ।



जाति दोधरी

एक मग : छेष्ट रूड (भाग ४)

हूणका रँमेरँ ले केननि जे के हूणकव पनी छननि । ओना ओ सब हमर रिखाहमे सभसँ अमुना उगहाव, काजक अणुतरक प्रमाण-पत्र देना जे अखन तक हमर सँजीरणी अछि ।

हमर रिखाहमे रँबियाती देवसँ आएल छन । सभ हमरा नग आरि कऽ रौत कवए नालेँ छन जे नडकाक दूह अखन तक कियो ले देखल छथि । हम गस्करसँ उस्कर पड गत बनी । अत्रुतः सँममे रँबियाती आएल तँ सभ हमरा जोडि कऽ छनि गेल । रँस तीरुषी रँटिया बहए जे आरि कऽ रिपोर्ट दऽ बहन छन । एकठा आरि कऽ कहनक जे रबक दूह देखाए ले बहन छनि । हेव कनिक कानमे एकठा रँटिया समाद अणनक जे रबक दूह गोन छनि । हम चूगटाप सुलेत बनी आ नागि बहन छन जे आरि हम एँ



पविरावसँ अलग भऽ बहन छी । ले हँसी आरि बहन छन ले कानि बहन छलौ । दूदा ह्याठे थिचरारौक रँडु शौक छन, से रिडियो आ कैमबामे रँडिया दूदा दग जेन पुवा प्रतिरँड छलौ । आथिब रिखाह दूरावा नहिये करैक छन । संगे अहो नाछी छन जे रिखाहक प्रयोजनमे रँडुत लोकक शौथ शीमिन बहेत छै, तेँ कतेो ह्य उँदुँखन अथरा स्याथी ले प्रमाणीत भऽ जाग, तकव धान बखल बही । पुवा पविराव संगे छन, से रँडुत सौभाग्य छन । सरँहक रीट रारौक आराजक कमी खनि बहन छन । दूदा ह्यव दागज्जी ह्यव जकाँ मज्जुत छनथि । शुभ कार्यमे कनषाग ह्यका ले मज्जुव बहन । आग ह्यका सहित आरो किछ लोक पविरावमे ले बहि गेन छथि, से रँडुत दुखद अछि ।

कवीरँ एक महीना रौद पतिदेरसँ छेँठे भेन छन दूदा पावसपिक पहिबारौमे । ह्य हँसज जा बहन छलौ आ ओ अगन कर्ता नारैक नष्टक करै छनथि, जेना किछ नागि गेन होगल । टारि दिनक अगुणा, लोक सभसँ छेँठे, सरँहक आशीरौदि, ए सभसँ होगत दस दिन कोणा रीतन से ले रँडुमजौ आ सान्धव दिस रिदा ह्यक समथ आरि गेन । एक नरतुविया भाँडजौ अगन ननदिकेँ रिदा करै कान कानि बहन छनी, जिषका जेन ह्य किछ नीक केनियनि से ले रँडुमन अछि । पढ़ागये निखागमे समथ रीत गेन छन । रौदमे ह्य खुरँ जाग लेहव आ कहियनि जे अर्छा कानन बही तेँ एजौँ तँ ओ कहनी जे ह्यका अगन रिदागवी मोष पडि गेन बहन तेँ कानन बहन ।

दूवागमनमे ह्य सान्धवक द्वापव कावमे रँडुमन बही, अगन पतिक संगे । तारँ एकठा रँटि अगन रँगी सभ संगे एनी आ ह्यव दूह देखेनथिन सभकेँ । ह्य खुरँ छेँशिये बही तँ ओ रँटि रँडुनी, अर्छा केँ सटिन छेँडुनकव रँडु नीक नाछी छनथे ले । ह्य परेशीन । नागन जे सभकेँ रँडुमन भऽ गेनथि जे ह्य अगन पतिकेँ देखे जेन परेशीन बही आकि ह्यव कोठनीमे सटिन तेँडुनकवक ह्याठे नागन बह । कोष रौतसँ जूठन बहे अ रौत, से ले रँडुमजिँ । ह्यव पविछन प्रारँभ भेन । पतिदेरकेँ छठी देन गेनथि । कनिये देवमे नागन जे सटिन तेँडुनकव मैथिली रौजि बहन छथि.. “ जन्दी कव, कनिया थाकन हेथिन ।” ह्य ह्यव परेशीन । सभ जे दूहमे गुड दऽ बहन छनथि से टिरारँ नगलौँ तँ सभ कानमे कहनी ..“अ गुड लोक ले खाग छै ।” रँडुमन तँ बहए ह्यवा । परेशीनीमे रँडुमन बही, से मोष पडि गेन । ह्यवमे प्ररेशी केलौ । सभ काजकेँ पुवा जोशिसँ ह्यठह्यठ केलौ, चाहे रौमा हाथे कोठी खोनरौक बह, अहिरँह्यड रँठरौक बह अथरा एके रँडुमे माँड कँरौक । आरँ दूह देखाग शुभ । कियो सिखेनहे ले बहे जे अ थि रँडु कऽ जेर । दौसव सभकेँ देखेन बहिँ, से दूह देखाग रँडुमे ह्य अ थि रँडु केनाग ले रँडुमनलौ ।

ह्यव सभ निखम खतम भेन । सभ स्रतलौँ आ नीद खूजन, तोले-तोव ह्यव सटिन तेँडुनकवक मैथिली रँडुनागसँ । ह्य ह्यव परेशीन । गुणा पारँरना दिस रँडुमि गेजिँ जे अ सटिन तेँडुनकव सनक आराज किषकव छनि । समथ रीतन आ सभ स्रँडुनी सभ अगन-अगन टिकाणा दिस रिदा भेना । ह्यव पतिदेर सेहो अगन काजपव जोष्टि गेना ।

आरँ समथ छन ह्यव बसोअ ह्यवमे प्ररेशीक । ह्यवापव दिवादनीकेँ रिश्रीम ले बहन, से कहनथि किछ मागड रँडु । ह्य कहनियनि- ह्य गनारँजादुन आ रेजिछेँरँन सुग रँडुएरँ । सुगक जेन नग्या निश्ट पकडु नियनि आ गनारँजादुन जेन रेडीमेड मिश्र आनऽ कहनियनि । सभ हँसज नगनथि जे एहेन मिठाग रँडुएरँ । गुणा ह्यव टाशी रँडुिया रँडुन बहए से सभ खुरँ खुशि छनथि । तकव रौद ह्यव छेँस्रँ भेन रौष्टी रँडुएरँगक । कनिये कानमे छेँठे-छेँठे रौष्टीक ठेव नगा कऽ बाथि देनियनि । सभ कहनथि- अगल सनक रौष्टी रँडुलौ । गुणा ह्य सँडुरिद, रौष्टी, पवाठा आ पुवी रँडुएरँगमे पहिलहँसँ नीक बही । सुग जेन ह्यवा ननदि कहनी जे तैया खुशि भऽ जेत एसँ । ह्यव चेहवा चमकि गेन दूदा तखन ह्यव दिवादनी कहनी जे अर्छा क पतिकेँ मसानरँना नोव नीक नाछीत छनि । ह्यव की छन, ह्य तन्या भऽ कऽ सीख नगलौ । गँडुव दिवादनी कहि कहि कऽ सिखारँग छनथि जे अ अर्छा क पतिकेँ नीक नाछी छनि आ उँडुव तँडुव आ सभ खखसनाग ले रँडुमन छनथि ।



हैब हम तिन-संक्रांतिये लैहब गेलौं। उतसँ लौष्ट क२ मासुव आ मासुवसँ मासु-मासुव संगे दूयैग। पतिदेर सृष्टिम आँएन दुवाह लै जेन। घब पँहुँचलौं तँ मास कहनी, चनु आ अँडि अँल क घब। हम रँहुत आँलदित बनी। घब रँहुत नीक बहए दूदा डोँष्ट बहए आ हमवा जेन सतसँ आँशुवजनक बहए जे हँष्टिये रौनकोनी लै बहए। पतिदेर कहना, अतुक्का घब एतेले होग डै। हैब घबकेँ अँगण हिसारसँ रारहित केरौं। मासुमाताक अँसिष्टसँ रँगलौं आ हुँकसँ रँहुत किछ सिखलौं। होनीये पुआ पकराण सिखलौं। पतिदेर रँहुत खुश बहथि। तौले तौब अँसिस्टि चलि जाग डनथि आ हम घबक काज क२ अँगण कोठनीये रँद बँह डलौं। रीच-रीचये मासु-मासुवकेँ बूडो-खेनक लोक-लोक सुलेत बँह डलौं। कतेक शोभियाम समए डन ओ जे रीत गेन।

अँगण रौँक जगदिन मणाक२ मासु-मासुव लौष्ट गेन। हम हैब अँसगब बँह गेलौं। पतिदेरकेँ सुँमन बहथि जे हमवा अँसगब लै नीक नाँतोत अँडि, से ओ अँसिससँ जल्दी आँरि जागत डनथि। रीचये एक रौँब अँसिसक पिकनिकपब सेहो गेलौं। एह हमब सँरहक हनीमूड डन।

ई बचनपब अँगण मँतर ggajendra@videha.com पब पठाँड।



गरेन्दु कुमार झा

रँष्टम लोव मैथिली रँवत मिथिला

रिहाब ये आँयक संग रिासक दारा कबएरँना नीतीये सबकावक शैठ नजबि मिथिला आ मैथिलीपब नागि गेन अँडि। रिासक पिँठा बहन लोनक संगहि प्रदेशिये रिासक रँष्ट खुजन अँडि, दूदा रिासक सीमाकेँ रँहि देन गेन अँडि। उना तँ रिासक धाव पुवा प्रदेशिये रँहि बहन अँडि दूदा रिासक जे परिभाया नानंद जिना आ मगध क्षेत्रये नागु त२ बहन अँडि उँगसँ शैय रिहाब रिशैय क२ मिथिला अँरुष्ट रँचित अँडि। कशीसनक मारि सहन रिहाबये सुशोसनक जे रँष्ट देखाओन गेन अँडि एंये मिथिला आ मैथिलीक परिभाया रँदलि गेन। केन्द्रक सबकाव हुँअ कि प्रदेशिये सबकाव, दूनु मिथिला आ मैथिलीक उँपेका क२ बहन अँडि। केन्द्रीय लेन रँजुष्टक संगहि रिहाबक आँम रँजुष्टये मिथिलाकेँ तँकेत बँहि जाँएरँ। जूँ केन्द्र उँपेका क२ बहन अँडि तँ उँकव कावँ सेहो राजिरँ अँडि। सता प्राँशुक लेन रौँक बाजनीति होगत अँडि। उना संरैधानिक रूपे देशिये लोक कनाशकावी शोसन रारसुा दूदा रिशैय नात उँग क्षेत्र अँथरा सबकाव समर्थक दनकेँ होगत अँडि जकब सहावास सबकाव रँलेत अँडि। एँ हामुँनाये मिथिला अँसहन अँडि। केन्द्रये सताकठ दनकेँ मिथिलाचनसँ खबडि क२ रँहब क२ देन गेन अँडि। प्रदेशिये सताकठ गँठरँधककेँ अँगाव समर्थन देरँ सेहो मिथिलापब भावी पडि बहन अँडि। निर्वकशे लेन सबकाव अँरँ मिथिलाक आ मैथिलीक पहँचाण तिवरँ२ पब नागि गेन अँडि। जगत जलणी माता सीताक भाया मैथिलीपब तनराव चलि गेन अँडि आ जगत जलणीक माहँतुमि मिथिलापब संकठक तनराव लँकि बहन अँडि।

थएव, अ सभ ठँ सत्ताक खेन अछि । सत्ता अणन हिमारेसँ कानीति रैना शोसनक सँटानन करैत अछि । रीनवक रतिमान नीतीनि सबकाव जग कानीतिपव शोसन टना बहन अछि तकर सौमन लोकमान मैथिली केँ भेन अछि आ मिथिलाक लोकमानक रीष्ट धर जेन अछि । मिथिलाक जनता अणन मांगक जेन सँघर्य कइ बहन अछि । ए क्रामे फरक प्रदेशक मांग सेहो उठैत बहैत अछि । सबकावकेँ मिथिलाक आराज ले सुनाग पडि बहन अछि । मिथिलाक नइ गकेँ कमजोव कबरीक जेन सबकाव साजिमे कइ बहन अछि । अ साजिमे आरि हमरा सत्ताक सौमन आरि गेन अछि । जगत जननीक माहताया मैथिलीकेँ रीष्ट मैथिलीक तक जेन टनि बहन सँघर्यकेँ कमजोव कएन गेन अछि । प्राथमिक सुबसँ मैथिली भाषामे पढ़ गइ हूअ, ए जेन कतेको रर्यसँ सँघर्य टनि बहन अछि । कात्रेसक शोसन कानमे ए जेन मैथिली भाषामे शोथी सेहो प्रकाशित कएन गेन छन । दूदा ओ मात्र कागज धरि सीमित बहन, एसँ मैथिलीकेँ कोला नात ले भेन ठँ लोकमान सेहो ले भेन । नीतीनि सबकाव प्राथमिक सुबसँ माहतायामे पढ़ गइ प्रावत कएनक अछि । एमे रीनवक फेद्रीय भाषा मैथिली आ भोजपुरीक संग अणिका आ रीञ्जिकारकेँ जगह दइ मैथिली भाषाक रीष्टरावा कइ मैथिली भाषाक अस्तित्वपव प्रम टिह ठाठ कइ देनक अछि । मैथिली, भोजपुरी भाषाक शोथीक संगहि अणिका आ रीञ्जिका भाषामे सेहो छपनक अछि । माहताया रीष्ट गेन । माहतायामे रीष्टराक साजिमे भइ बहन अछि । मिथिला आ मैथिलीक नागपव बाजनीति कइ बहन बाजलता आ मैथिलि विद्वान सौन धावण कएन छथि । सत्ताकट दनक अंग प्रदेशक एकठा लेताक गनीवापव मैथिलीक महुरकेँ कम कबरीक जेन अणिकारकेँ महुर देन गेन अछि । दोसव दिस अणिकारकेँ सेहो आगाँ कएन गेन अछि । अ जनतर अछि जे प्रति पाँट कसपव भाषाक सुकप रँदनि जागत अछि । अणिका आ रीञ्जिका मैथिली भाषाक रँहिन अछि । अदुद बाजनीतिक नातक जेन मैथिली प्रेमक लोष्टकी कबएरना बाजलता मैथिली भाषाकेँ रीष्ट टैनक रँसुवरी रँजा बहन छथि । हमरा सभ एतेक सैघ रँरकुर छी जे ओग बाजलताकेँ माथपव रँसुरैत छी जे भाषाक रिकर साजिमे करैत अछि । अणिका आ रीञ्जिका फरक भाषाक कपमे कोला एक दिस अस्तित्वमे ले आरि गेन अछि । एमे सत्ताक शीर्य लहदुरक हाथ अरथ बहन हएत । मिथिला आ मैथिलीक पहकआ कबएरना बाजलता सभकेँ एकव जनतर ले भेन हएत अ मासरना गप ले अछि । दरअसन मजगुत सत्ताक आगाँ मिथिलाक रतिमान बाजलता अमहज छथि । सुतवाक ७४ रर्यक रँदो मिथिला आ मैथिली पिछडन अछि । रँरजुद एकव मिथिलारानी अणन हिमारेँ जीरणक गति आगाँ रँद । बहन छथि । मिथिलाक भूमि नीतिक केन्द्र अछि, एठाम उग्रताक कोला जगह ले अछि । देशमे भाषा आ प्रदेशक जेन कतेको उग्र आंदोनन भेन अछि जगमे किछ सफल सेहो भेन । अ जलैत जे सबकाव उग्रताक भाषा रँमेत अछि मिथिलारानी अणन हिमारेँ आंदोनन आ बाजनीति करैत छथि । संगहि बाजनीतिक महुर सेहो अछि । रीनवक रीष्टरावा उग्र आंदोननक परिणाम आ तकोनिक सत्ताक फूसी रँटैरीक जेन ओकव महुरक परिणाम अछि । आंदोननक मिथिला प्रतीक्षा कइ बहन अछि । अदुद बाजनीतिक नातक जेन मैथिलीक अस्तित्वपव जे प्रम ठाठ कएन गेन अछि ओकव दूह तोड उतव देरीक जेन हमरा सभकेँ सजग होम पडत ।

माहतायाकेँ सबकाव रीष्ट देनक अछि ठँ माहतायामे मिथिलाक कपावपव सँकठ अछि । जिनामे पसवन मिथिला अंग, रीञ्जिकारन, सीमाटन आ सुबजापुरीक कपमे रीष्टन जा बहन अछि । एक सभ छन जखन मिथिला किछ रर्यक जेन प्राप्रतिक कावसँ दु फेदरमे रीष्ट गेन छन । कोसीपव पुनक अभासमे मिथिला फरक भइ गेने छन । केन्द्रमे अछेन रीनवरी राजपेयीक लहदुररना बाध्रीय जनतांत्रिक गठरंधन सबकाव कोसीक महामेतुक जे उग्रताक देनक ओसँ मिथिला एक अरथ भेन दूदा रीनवक बाजग सबकाव राजपेयीक ए उग्रताक हिमारेँ मैथिलीक आ मिथिलाकेँ रीष्ट टुकता कबरीपव नागन अछि । मिथिलारानी अणन अणिकावक प्रति सजग भइ जाथि एसँ पहिनहि नीतीनि सबकाव ओकव धवती पकडेरीक जेन तैगाव अछि । कोला संकृतिकेँ षष्ठ कबरीक जेन आरथक अछि जे पहिल ओकव भाषाकेँ षष्ठ कइ देन जाए । जाँ भाषा मरि जाएत ठँ ओकव भु-भाग मेठीय मे कोला सभ ले नागत, से नीतीनि सबकाव पुवा मलायोगसँ कइ बहन अछि । भावतीय संकृतिक बसा कबरीक दारी कबएरना बाजनीतिक दन आ संगठन सेहो नीतीनि सबकावक एमे देगसँ देग गिना कइ टनि बहन अछि । श्री वामक जग भूमिक जेन पुवा देशकेँ अणन माथपव उठरँइ रँना दन आ संगठन जगत जननी



मीताक माहभुमि रैठैत देखि बहन छथि । रोष्टक बाजनीतिक भेष्टे छठि गेन अछि जगत जननीक माहभुमि आ माहभाया । आ बाहुरादी मायूतिरादी सब आथि पब पक्षी राहि निश्चित छथि ।

मैथिली प्रदेसक एकमात्र भाषा अछि जकरा सरिधानक अग्रम् अग्रसूटिमे स्थान भेटैत अछि । ग्री भाषा सबकावक संवस्कक अधिकारी अछि । आष प्रदेसमे कामकाजमे फ्लेव्रीय भाषाक महत्त्व अछि । सरिधानक अग्रसूटिमे स्थान प्राप्त ए भाषाके सबका संवस्क द२ देरै२ मे असफल बहन आ एकब महनके कम कबरोमे कोलो कमबि ले भोडनक अछि । सबकावक नाभसँ ग्री भाषा रचित अछि । कोलो मैथिली पत्र-पत्रिका सबकावक रिक्तापणक नाभ ले उठा सकैत अछि । कि एक तँ सबकावक रिक्तापण नी तमे मैथिली भाषाक कोलो स्थान ले, ज्वा सबकाव भाषाके संवस्क ले द२ सकैत अछि तँ ओकवा खडित कबरोक सेहो ओकवा कोलो अधिकार ले छै ।

हमरा जलैत एखला रहुंथक मैथिली भाषा केँ ए तथक जनतर ले अछि जे हमर भाषाकेँ रैष्टि देन गेन अछि । एमे दोष हमर सभक सेहो अछि । हमरा सभ अगण माहभुमिक संगहि माहभायासँ दुब भ२ बहन छी । उच्छुन भेनाक बाद मैथिली भाषामे गण ले कबर हमरा सभक पिडन हेरौक हीन भारणा प्रदर्शित करैत अछि । ज्वा सूर्य सजग ले बहर तँ एकब नाभ दोसब अरुष्ट उठाओत । दोसब मैथिलीक बाजनीति कएनिहावक जे अछि एसँ ए भाषापब एक खास रक्ताक भाषा हेरौक मोहब नागि बहन अछि । हमरा सभमे अगण भाषाक प्रति समर्पणक भारणाक अंतर आरि गेन अछि आ भाषाक माध्यमसँ मात्र सबकारी नाभ आ पबकाव जेरै२ मे अगण सभष्ठा रिद्धता खर्च क२ बहन छी । एकब नाभ दिग्भ्रमित फ्लेव्रीय रिद्यान उठा, बाजलताक जेन बाजनीतिक अरुसब उंगळ्ठे कवा बहन छथि । मिथिला रवि बहन अछि, मैथिली रैष्टि गेन, हमरा सभ मोष छी । मिथिला नाम जाप क२ बाजनीति कएनिहाव बाजलता, भाषाक रिद्धान हेएरँ आ ए भाषाक महवा न२ जीरण यागण क२ बहन रिद्धत समूहक काणपब ट्रेन धरि ले छलि बहन अछि । सार्थक बाजनीतिमे जगत जननीक माहभुमि आ माहभाया रिहावक नीतीस सबकावक रैनि छठि गेन अछि । नीत पडन मिथिलामे अहबक कोलो सकैत ले भेष्टे बहन अछि । सबकावक गौष एजेडा आरि सभक सोमाँ आरि गेन अछि । भाषा रैष्टन, फ्लेव रैष्टन, गाम रैष्टन, घब रैष्टन । की ए रैष्टरावाकेँ अगण नियति मागि हमरा सभ चुप्प बहर, सम्र अछि जागु हे मिथिला पुत्र । अहाँक प्रतीक्षा अहाँक माहभुमि आ माहभाया क२ बहन अछि । ज्वा से ले भेन तँ देसि आ प्रदेसक माणद्वेपब हमरा सभ दूररीण नगा तकेत बहरँ मिथिला आ मैथिली ।

ए बचनपब अगण मंतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाओ ।

३. पत्र



३.१. जगदीश चहू ठाकुर 'अनिन'-गजन १-२



३२. अग्रित सिने- भक्ति गजव



३३. जगदीश सा 'सम्य' - गजव



३४. १. जगदीश सा 'सम्य' - गजव



गजव सा 'सम्य' - गजव



३५. बिदेह सा 'सम्य' - गजव



३६. अग्रित सिने-सम्य



जगदीश सा 'सम्य' - गजव

गजव

१



547X VIDEHA

बिना बिनाहे घबमे कनियाँ केहेन नछैए

कछु त काकी रँदनन दुनियाँ केहेन नछैए

रब कनियाँ दुनुक हाथमे सेब-तवाजु

दुनु पफ़ रँगन अछि रँनियाँ केहेन नछैए

तारि देनक दुनु फनके पीउ रँनिक२

भोजी अ रँपी नछुगिनियाँ केहेन नछैए

जाहि घबमे का कसन का भुखन हो

उत२ मारि ठोनक हबहुनियाँ केहेन नछैए

अहाँ अरँ त दौडि सकेछी यौ रँौआ

अरँ अहाँके देरँ ठैहूनियाँ केहेन नछैए

हुँ गन्धवासं कृत्रिक किडु हज्जि कक

शुभक घडीमे अ पेशकनियाँ केहेन नछैए

अहाँ सूर्य सामर्थ्यारण छी हे बाजण

ककरो आगु कवरँ खेखनियाँ केहेन नछैए

२

आखब-आखब सुमिते बहजौ



हम अहाँ दिस तकिते बहलौ

आग एत२ छी कहि ओत२ छी

सभदिस सभकेँ ठकिते बहलौ

हंस-गरेँछी हम अणका जग

एसगवमे हम कमिते बहलौ

सभकिछ अथरा किछ ले चाली

सभदिस अहिना कमिते बहलौ

ओ जनराले रैछ रैलौननि

हम पथिक छी चविते बहलौ

एत२ अहुरिया बहलौ सभदिस

मोम जकाँ हम गजिते बहलौ

कमिहग आव कते दिस बहते

सभदिस सभकेँ प्रुछिते बहलौ

ई बचनोपव अणम मंतर ggaj_endra@videha.com पब पठाउ ।



स्मृत मिश्र

करियण , समस्तुप्रव

भक्ति गद्य

हम निर्वृत्ति-गापी रैसम काले डी
प्रव अहीके जगणी ममा गौरी डी

तोहव दुआवि रैड डीड हे मैया
कखन देर दर्शन आर हारे डी

अश्रुतजा नरकप जगदग्निके
दमो दिमो रिबुधित अहाँ साजे डी

ममातामयी नष्ट दया-दृष्टि कर
नार उँरवसँ दुःखियाके उँरारे डी

अबहुन फुन आ ननका चुनवी
असुव रिनामिनी जगके तारे डी

स्मृत रौनक जूनि ज्ञान हे दुर्गे
चवण रैसिक गीत अहीके गारै डी

रर्ष-12

ई बचनपत्र अपन मंत्र ggajendra@videha.com पब पठाई ।



547X VIDEHA



जगदानन्द झा 'मन्न'
ग्राम पौस्ट - हरिपुर डीहठेन, मधुबनी

गज्ज

माँ शीबदे रबदान दिख
हमरो छदगमे त्रान दिख

हरि नी सभक अछार हम
एहण गजोतक दास दिख

सुनि दोख हम कथला अगल
दूथ ले हूँ ओ कास दिख

गारी अहीकेँ सगब पूा
सुब कर्ष एहण तान दिख

बूनि पूत मन्नकेँ माँ अगल

कनिको छदगमे सुन दिख

(रैहने बज्ज, मात्रा एम - २२२२-२२२२)

ई बलागब अगल मतर ggaj_endra@videha.com पब पाठ ।



१. जगदीश प्रसाद मंडल २.



मनोज कुमार मंडल



5



अगदीने असाद फाडव

अगदीने असाद फाडवक दृष्टी अग्रगण्य गीत

भगवती गीत-

एना किअए रललौ हे मगये

एना किअए रललौ ।

दूगियाँ बटे-रसले

दूगियाँ अहाँ रललौ ।

भूमा भोग भगा-भगा

मागयक कोर जोडलौ ।

हे मगये..... ।

सुखन लोठी अलनु सनि सनि

दिन-बाति किअए खूएलौ

बाँकी भगा-भगा क२



547X VIDEHA

बोग-बिगारि पाठेबौ

एना किखए..... ।

जामाते हुन-गाढु सिबजि

जामाते हुन-हन मजेबौ

टिन्ह-गहटिन्ह रिम रिमबा

अग्रखा थावी थिचबौ हे मगये

एना किखए..... ।

बानि बहारी नयन दहाडी

बनरानी बाना पाठेबौ ।

कनपि-तडपि तेयो कह डी

हीखा जोगि जोगेबौ हे मगये

एना किखए..... ।

आनक बौम.....

आनक बौम उगारै खातिब

अगला बौम भडकि गेले ।

दरि-दरि, उंनवि-उंनवि

जूब रीच समडत गेनग ।

मीत यौ, अगला..... ।



पसवत पाणि धाव तबहत्थी

रौतन-अतन रौलेत गेले ।

मिब समवि-समवि सब

अगला पएव पिड्डित गेले ।

मीत यौ, अगला..... ।

बहले ल स्रुमि-रुमि मिमिओ

मोमिआनी रौदलेत गेले ।

उंकर कागज-कनम कहि-स्रुमि

आख कावी अकडित गेले ।

मीत यौ, आख..... ।

घुमि घुव घुडले जखन

मावि मेघ मारैत गेले ।

कष्ट कोदवि कोदवकष्टा भ२ भ२

कग अमारस पडित गेले ।

मीत यौ, जूना रौमि समलेत गेले ।

मीत यौ, आनक..... ।



मलोज्ञ कमार झा

पाँछी रान करिता-

कित -कित

तूँ कित-कित खेन

एक ठगिपर लैग-लैग

टाक कात घुम

दोसर बोपल रैगमे टोवणी

लेँ तँ बाणी रैग

बूँटी तोवा ठगि जेँ दु

एक ठगिसँ बाणी रैलेँ जेँ

दोसर बहल मरुवाणी

एहल जेँ जिनगीक खेन

नीत चमत ओ

पहुँचत लेँ अरैव

ककल-मुकतेँ माथ हवरैव ।



सुन रौंरु सुन

सुन सुन सुन

सुन रौंरु सुन

मीथ एतेन गुा

रौंरुक पगरी आ

रौंरुक माथ ले

कविगनु कहिओ सुन

सुन सुन सुन

सुन दैया सुन

हीवा मोती की चमकते

चमके छै तँ गुा

गुाक गहना जे पहिबत

से रौंरुत गिबथनि

सुन सुन सुन

भिया-गुता सुन

सगतब छिछि आएन छै

गुाक मोती

बुंनि नगा क२

जे भ२ सकौ से रौंरु



सुन सुन सुन

झुंझुं आ झुंझुं सुन

मलक खेतमे

बूँदिक रिखा बूँद

फडतो ओगमे

कएक-ल-कएकठौ फा ।

श्लोक

कतिया दिदिक रिखाहमे

घलरो कता रँबियाती आएल

दोस्त बहनि मुसाजी

तिनको ओ मंगे लल एनाह

मथी-रँहिनपा देखेले एनी

रिनाग मोमी मेहो एनी

मुसाजीकेँ देखते देवी

जीसँ खमनहि पाणि

मुसाजी नग मरुष्टि ओ रँसनी

रँजनि एहेन सुनव कतए

भेष्टत हमरा रव ।



रँक-रँक

कव ले रँक रँक

रँगिहै ले ठक

तूँ एहन महक

खुजि जग

सरँहक भक

हेतौ ले तोवापव

केकरो शिक

तूँ रूमिँ

अगनाकेँ ठक

रँगरेँ आँखिक तावा सरँहक

चलेत बह रँधवक।

गजग

गन्धव-गन्धव गगि बहन डै

दूगये पठवीपव चलि बहन डै

एकठौ गजग केकठौ डिबौ

सभकेँ गजग खीट बहन डै



लेनक जे अद्भुत खेन

सभकेँ सुखव लागि बहन छै

पनि भ२ रनि हम गज्ज

अहिना खीटी अप्पन ज़ीरन

एहेन हमारा लागि बहन छै ।

ई बचनपव अप्पन मतिब ggajendra@videha.com पव गिआउ ।



बाज्जदेर म्छम

बाज्जदेर म्छम

दूरी पत्र

दठकन छी

दूनु हाथ अछि कड़ सिँ रौनहन

उहीपव हम अठकन छी

पएवक नीटाँ उँरिख ।गत सङ्गदव

आसमानमे दठकन छी

डुङगठेनसँ हाड़-गज्जिब दूखागत अछि

रैसी टिचिनासँ कंठ सुखागत अछि

कहूना क२ ज़ीर बहन छी

जिणगीक ज़हव पीर बहन छी



नीटाँ गीवरँ तँ डुमि मवरँ
तँए की हम नष्टकले बहरँ
आरँ ले मागरँ
जेकवा ले देखल डी
तेकरो ज्ञागरँ
रँगहन तोडाँ नीटाँ हागरँ
ले डवरँ कर्ण कावामँ
नडरँ रेगहाकृत धावामँ
कवरँ कवरँ गाव
उँमिआगत तेज धाव
देख बहन डी समुद्रक कडेव
तोडाँ पडत आरँ कडूक घेव
जेकवा कवरँक चाली मरेव
तेकरे केरौ अरेव ।



ईश्वरबिक गीत

किएक क२ बहन छी

एना ठैमम-ठैम यौ

हम लै छी रँकजेल यौ ।

जहक जेल हम छी जोग

तहसँ जेल छी अजोग

किअए ल जेठ बहन अछि

जगह हमरो जेल यौ

हम लै..... ।

हमरो मल डल गरितौ गल

घटले जगत अछि मल-समल

कयठमे बहत जँ मल-प्रल

कतएसँ गएरँ सुख केव गल

दुखसँ लाल अछि

अरँ हमर जूझि जेल यौ

हम लै..... ।

हमरा जेल जगह लै खानी

रुंगसँ रँजलैत अछि सब तानी



547X VIDEHA

अमनी-बकनी कबिते-कबिते

हमरी रैनि गेलौं पूवा ज्ञानी

हमरा सँगे चलि बहन

अ कोन उल्लेखि थोन यौ

हम ले..... ।

अहाँ कहि छी- “बक आस

कक रौबसँ प्रयास

एक दिन कले पड़ते

अहँसँ उल्लेखि थोन यौ

ले बहरँ अहाँ रँकलैन यौ । ”

हम ले..... ।

अ वचनापत्र अलग मतेर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



अमित मिश्र

प्रयास

जेठक निर्मोही दुपहरिगामे
धुँधल-भाँगल एकपेविगापव
दुनियाँ भरिक रिपतिक गहाड
भविष्य रौमनामे राहि उठेल
घामसँ बीजन टिबी-टिबी भेल कपड सँ
भावतक गवीरीक प्रयास दिगारैत
खामिसँ रँकैत, सँकैत जागत
दम रर्यक नडकीकेँ देखि कऽ
प्रयासित भऽ जाग छै एकछी कथन
जे सतमे महागापी छै मन्थक पेठ



ई बलगापव अगल मतिर ggajendra@videha.com पव पत्रिका ।

बौनागा फुते



जगदीश प्रसाद मंडन

ले बाछे

बौन उंगनामक आगाँक फ्या...

8

पवीष्काक मास द्वा पविले प्राग्राम निकनन । उना अखरावो सतमे वई द्वा अमन रिग्यानयमे जे अथन
डन ओकले बुमि बाधामोहन रिग्यानय रिदा भेन । सुनरौमे ओहो एले जे अग्रेजीक तँ पवीष्का हएत
द्वा पाम-हफनक कोला महत ले बहत । एक तँ पवीष्काक जित्तमा दोसव अग्रेजी उठारक खुशी मसमे
बहरेँ करे । अग्रेजी उठारक दसो दुआरि भगवतीक आगमसँ खुजि जाएत, अग्रेजी सतसँ रौमी मसए
रिग्याथीक था लेत अछि । जिनगीक दसो दुआरि खुजेक मैथिलीक पवीष्का, जगमे दसो रिगयक
पठ गयो होगत आ पवीष्का होगत । उना जग हिसारसँ अग्रेजी रिग्याथीक मसए थागए तग हिसारसँ
रापनी नहियेँ होग छे द्वा मोनहरी ले होग छे सेहो रात ले । अफत कम देवता रौमी बहल
रौग-रौग लेचावी मैथिलीकेँ हिसमे कम भए जाग छन्हि । द्वा तँए कि लेचावी निवाशि दुधि ?
ले । निवाशक तँ प्रम मसए ले उठैत छन्हि । कावशो सग्यठेँ अछि । एक तँ गनन कष्टिया नापन
मोड जकाँ सुको-कओजेज अछि तद्दमे किछ-ल-किछ मैथिलीकेँ सेहो भेष्टिये जाग छन्हि, द्वा
अधिकनि मैथिल तँ सुको-कओजेज देखरेँ ल करैत अछि । आथिब, ओहो सतसँ तँ माँ मैथिलियेक
द्विगि । अहूना, जे कतेको करे छन्हि तेकरो जेन मसए कतेको नहियेँ छन्हि, अगल कतरासँ



ह्यत भ२ रैठौ-करैठौ रैनि सकेए ह्दा अण कर्तव्य खूबोनिहारी धवती मण धीवज बखेरानी माए केना ह्माए रैनि सके छथि ।

उना हाग-सुकुन अरैत-अरैत रैछा टेवरौ भ२ जागए, तगसँ पहिल बियय कपी थुन अण-अण शिष्य छुनि जेस बहे छथि । ह्दा जहिया जेरुआ रैखीक गति तहिया रौन-रौधक । ह्दा हाग-ले-हाग करैरमथाक छलैत हिलजिकसक एम.ए. लेन-रैसक एकठ कठनिहार रैनि जरीन-यापन करै छथि । ज्योतिष पढ़ी पुनिसक नठराहि करै छथि तगठाम जिनगीक रिसरामे कते । जखन जिनगीयेक रिसराम ले तखन जिनगी जीनिहारके रिसराम कते । खैव जे होउ... । प्राग्रामक उमकी बाधामोहनक मसमे उमकले बहए, साठे दस रैजे सुकुन खूजेए, पूरल्लिक काज नीक रूमि रिदा भेन । अंतिम हागणक मसए, मास दिसँ उंगलेक रमणत भ२ गेन छन । हागणक उमकीमे जहिया उमकेक रिदाब मसमे उठै छै तहिया बाधामोहनक मसमे सेहो दसो दुखारिक दीप जबरैक उमकी बहरै करै । ह्दा घबसँ निकलि डेगे-डेग जते आगु रैठौत ओते मण पाहु दिस समबए नगले । मसकेँ पढुआगत देखि उमकियो पाहुए दिस ह्दा गेलै । बाधामोहनक मसमे उठलै जिनगी आ पवीक्षा । आकि जिनगीक पवीक्षा ? थुन पाणि ले गणव-पोखबिमे अमथिब बहेए ह्दा जखन ओकरा टीनी रा गुनसँ दूधित कवरै, भनहि ओ जीरलापयोगिये किअए ले हूअए, ह्दा दूधित तँ भेरै कएन ? बाधामोहनक रिदाबमे दू दन अण-अण रिदाब न२ क२ ठाठ भ२ गेन । घंठे-नरुब-मरुब भेजो पढाति, ले ह्दा अएन जे रूमियो जेन छी आकि जेन अ लैक रैठ । रिचित स्थितिमे बाधामोहन ओमवा गेन । जिबाएन आदमी जहिया पहिल मोकमे रैसी दूब दौड नगा नगए ह्दा धीरे-धीरे उतसाहमे कमी हूअए नलै छै तहिया बाधामोहनक सेहो भेन । उतसाह कमिमे देहमे थकथकीक आगमन भेलै जेना-जेना थकथकी रैठौत गेलै तेना-तेना थकाएन रूमि पडए नगले । आधा बसता तँ ठेपि चूकन छन ह्दा आधा ठेपर भावी रूमि पडलै । गाडीक ड्राहि रैहिया कोलैना रैडरैड या गाड नग पहुँच, रैस गेन ।

एक तँ ओहूना खूबण पत-मरुडि नर पत-धाव रैडरैड या गाडक सेखी बहरै करै । तगणव कपी सिहकी सिहकिते बहे, हागण बहल मजब रंग टुकलौ बहे । लौद गवमेल दोहरी रौन बाधामोहनक माथपव चर्छा गेन बहे । ह्दा गाडक ड्राहि जेना बाधामोहनक कोहि ह्दक । नजबि गाडी दिस रैठलै । रैडरैड या आगक गाडक मठमे पतिखानीमे ह्दनी आगक गाड । रैडरैड ये गाडक जर्छा नगसँ देखए नगन । दूनु आमक गाड छी ह्दा, एना किअए अछि जे एकठा किलो भविक आ दसब किलोमे पचाम चठौत । प्रमक ठेहसँ बाधामोहन ठेहियाए नगन । मण घुमि मसए दिस समबलै । टोरीस घंठीक तीतव दिस-वातिमे कते अणतव होग छै । रौबह रैजे दिसमे लोक दुनियाँक कोण-कोण देख सकैए आ रौबह रैजे वाति उडागसँ उठि शेरारौ करैले जागकान रंगीक जकबत पडौ अछि । ह्दा हागण मासमे सुर्योदन आ सुर्यास्त केना एके रंग मसोबहम रैनि जिनगीक रैठ पकडैए । भनहि एकठा अणव दिस रैठौत दसब गजोत दिस ।

रैडरैड या-ह्दनीक रीच बाधामोहन नठकि गेन । किछु ह्दरै ले करै जे गाड-रिबीड लोकक देन छिथ, अ तँ सुछा भगणक देन छिथनि । लोक ओकव मेरा करैए आ गाएक दुब जकाँ अमृत खागए । ह्दा अ तँ अछुत अछि जे दूनु आम बहितो एना अकाम-पतानक अणतव किअए छै । भगण तँ केकरो ले अणना करै छथि आ ले अणना मोटे छथि । मोटरौ केना कबथि अणन शक्तिसँ ले मोटेकेँ शक्ति दग छथि । तहिया हाथ-पएव पोडरे बखल छथि जे कोला काज कवता । अ तँ जकब लोकक कवतत छी । तग रीच रैडरैड या आ ह्दनीक रीच कहा-कही हूअ नगले । हन देखि ह्दनी राजन-



“ले रँडरँडि या, हमर कियो तौवा बाबासँ बम्हले हएत ।”

फैजलीक रात सुनि रँडरँडि या गवसाएन ले, अखन धरि अगला मस मालेत छले जे फैजलीक आगु हमर छिहे ले । जहिया रँनिया दोकानक मंगनी रौस, तहिया डी । ह्दद एकठा गुण तँ हमरोमे अडिये जे अणको-आण गाढक आम जेजो पढाति मगड । ले हूअए दग छिई । ह्दद एकठा फैजली आम, एक डव फशियाव, एक गुड । मथाण कतेक कपाव होडले अडि । मसमे खुशी बहले रँडरँडि या राजन-

“धवसागती राज जे जेहन सोम-साम हमर शीलो आ डारियो अडि तेहेन तोहब डो । केकरो मंग कियो जाएत ले । राज ?”

फैजलीकेँ छुप होगते रँडरँडि या बेरौडि क२ हएव राजन-

“सुनि जे, हमर भाए-भातिज, तौवा डारियो सँष्ट अणन ह्दडि कठा ह्दद देले डो, जगपव तूँ ठाठ छै ।”

दुनुक मगड । देखि बाधामोहन अणन काज -सुकुन जा प्राग्राम निखर- रिसवि गेन । जिलेना पढाति गाढ तवसँ उँटि रिदा भेन । थ-थाएन मस वसते रिसवि गेन जे कतए जाग डुरो । थकथकागत बाधामोहन घबहकेँ भेन । जहिया हवाएन-ठेवाएन गाए-महिंसक रँददा साँनु पहव डिविआगत घब दिस अरौत तहिया बाधामोहन जतेक घब दिसक राँष्ट ठपेते ततेक जेव-जेवसँ मसमे ह्दुहकारि उँटि ।

गाडी आ घबक आ धा राँष्ट ठपेते-ठपेते बाधामोहनक तक खुजन । जेना गुंवाएन, निशेन, तहखाएन गत्यादिक तक खुजेत तहिया वसताक तकमोडि नग आरि तक खुजले । मस पडले हाग ले रौ जाग डुरो पवीष्काक प्राग्राम निथेले आ आरि कतए गेलो । गुना चरि रँजे तक सुकुनक काज छले छै ह्दद ग रावह रँजेक बोद अलले थागले जाएर । ले जाएर तँ पवीष्का केना देर ? ले पवीष्का देर तँ पास केना करर ? दोसव दिस मसमे उँटि जे पास क२ क२ की करर ? जखन आगु पढक आमे ले अडि तँ मैट्रिक पासकेँ मोजले कते होग छै जे रौमी ह्दडत । जेतरेँ मोजव तेतरेँ ल हजो । एसए-बीए तँ ऑफिस-कावथाणामे दवमानी करेए आ मैट्रिककेँ के गुडे छै । तहमे जते पडले तते तँ क्राण भागये गेन अडि तखन अलले एकठा कागज (सेर्टिफिकेट) लेन हवाण हएर । ह्ददमे पडन बाधामोहनक मसमे उँटले- काजक पवीष्का ले जिलगीक पवीष्का अमन पवीष्का डी । ह्दद जिलगी की ? जगनमे जहिया हजारो-नाथो वंगक गाढ-रिविड बहे छै, जे हजारो वंगक हुन-हड दग छै आ बहियो दग छै । तहमे किड हुन एहेन होग छै जे सुगन्धितो होग छै, सुगन्धो होग छै ह्दद हडक कोला दवसे ल होग छै । तहिया किड हड । एहेन होग छै जे रिंगा हुनक हडि जाग छै । किड हड एहला होग छै जे हुनसँ पहिल पडि ये जाग छै । किड हड एहला होग छै जे मंगे-मंग गाढमे निकले छै । किड हुन-सँ-हड होग छै तँ किड एहला होग छै जे हुन केतो हुनाग छै आ हडि केतो जाग । तहिया ल मसुखोक जिलगी अडि । जते मसुख तते वंगक हुन-हड । जहिया रँथक उंगवाणतो आ होगतेथि रूँ-रूँ मलि धावा रँगरेए । तनहँ एक-दोसवमे मिलेत गहीवगव राँष्ट रँगा गहीव दिस रिदा होग । जगसँ चरो-टाँचव, नीचवस थेतो आ गोथरियो-साँथरि तवरौ करेत अडि आ बहियो तरेत अडि । तवरौ तँ अजारे अडि । कतेसँ तवरौ करर सेहो कठिन अडि । किडक तँ जौ सोदर तीन हाथक मसुखकेँ आधा कियो दिस-बाति भोजन मसि जेर तँ पँच-पँच स्र वसगुना केना सँष्टमे अँष्टे । दम-दम कियो गाढ आ दु-दु तौना दही केना पटेए । बाधामोहनक मसमे उँटले अलले रौआग डी । काज डोडि जखन



मस रौंखाएत तखल रँहणी अ रँध नगत । जखल रँहणी आओत तखल धाव-सँ-धावा रँधए नगत ।
 दूदा धावोक तँ ठेकास ले डै । एक तँ ओरूना धावक धावा जकाँ जिनगीक रँहण ले अछि । किछु एहेन
 होखए जे जूग-जूगसँ एके स्थाणपर रौंहति आएन अछि । तँ किछु एहला अछि जे दोसबमे मिलि
 अणन अमतितर मेष्टी लेनक । ततरें ले, एहला तँ कोसी-कमला जकाँ अछिये जे मानमे तीस-
 तडपाण तडपेए । जते बाधामोहन पतान दिस रा अकाम दिस नजरि दोगरेंत तते वंगक दुमियोँ आ
 पतानो मसमे अरेंत जागत । अकाम दिस तके तँ देखे जे फमिगा धवतीसँ उँटि कुदि-कुदि अकाम
 दिस चढए चहैत, घोवण-चुष्टी मलेक पाँथि पलीवि उँडए नलौत । तहिला पतान दिस तकेत तँ एक
 पोखरिमे मत-वंगा माछक जीरण-याणन सुख-टैससँ होगत देखेत । खानक लौटी लौटिया-लौटिया
 खानमे रिंखाह-दुवागमन क२ पनीक नगमे बाथि जीरण-याणन करैत आ फन-खननक धूजा गाडी
 रौंजो-रँचोक उपार्जन करैत । तहिला पानिखेमे माँससँ उँपव बहु-लेन-भाँकरी अणन-अणन सीगा
 लेखा खीटि-खीटि अणन घरो-दुआरि रँनरेंत आ परिवार सग मिलि रँमोकेँ जीरित बखल अछि ।

रौंन मस बाधामोहनक जेम्हव नजरि लौंगरेंत तेम्हव डाते-फमिमे ओमरा जाए । जहिला
 टाणक्य डुथि ले डुनाह आ तहियाक नानदा रिमिरिन्धानय जे फमि उँपटीएरँ शुक लेननि ओ फमि अखला
 धवि गामे-गाम अछिये, रोचाले अमकले कते गामक उँपटीताह । तद्धमे एहेन समाजमे जे सदति
 जमीनदारिये रा जागीवदारिये रँनरें पाडु नागन बहैए । एक वंगक जागीवदारीक रीट समाज पोड
 अछि ।

माओन-भानोक राहक गति भनहै मथव भ२ जाए दूदा टैती-फुला, फुलवाम हरा तँ केतो-
 सँ-केतो उँरि ते अछि । बाधामोहनक मस ओली फुलवाम हरक सग उँरि पकसोत्तम नग पँहूट लेन ।
 दूदा अँठकन ले । दवरारमे रँससँ पहिल मसमे उँटि गेलै जे ब्रेता-जूगक जूखान-जहण वाम टाक
 भाँग भेनाह दूदा समाजक रँठ-रँठ अणनक रिटाव पिताक रिटावक आगु किअए ले माणननि । समाजक
 जते रँठ-रँठ अणन लेननि ओ अणनामे रिटाव किअए ले केननि जे वाम सग पवईरँ समाजक अण
 रँनन बहए । ले कि रँनलो रँगडी जाए । तगसँ नीक जे हुनके (वामेक) बृह पवपितामह दिनीप
 डुथि तिनके दवरार जा अणन उँटिती-रिणती किअए ले कवी जे अणना बाजमे रौंमो देरें कवता ।
 जना कानमे कालो दिनीसँ कोलो तवहक अराज अनासाम प्ररेशे क२ मसकेँ जगा दैत तहिला
 बाधामोहनक मसमे जगन । अणन सँकनपक सग अणन जिनगी रँना जीर । जौं मे ले तँ हारि कि
 भेन ? जाधवि मस्यय दोसवाश्रित बहत (रोटाविक जोडा) ताधवि पर्यारिणमे कमी हेरें कवते ।
 जिनगीक पहिल रिटाव जखन मसमे उँठन तँ कि ओ अधना उँठन । जौं ले अधना तँ किअए ले पानन-
 पोसन कवर । जारें धवि दुध पौदा करैक शक्ति मस्ययामे ले आओत तारें धवि हंसक रौंस केना भ२
 सके डै । जतए दुध बहत ततए ले हंसोक रौंस बहत । दूदा दुध-पानि रँरौंमिहाव हंस मस्ययक देन
 पानि रँरँरेंत अछि आकि भगवानक देन जे गाए-महिसक पोष्टेमे हँठन बहैत अछि तेकरो रँरँरेंत
 अछि ?

रौंन-रौंध रँचो जहिला चले जोगव रँग होगते गजोव ध२ चनए चहैत दूदा टाणिक गति
 पडुखा दोसव रौंठ सेहो ध२ । जागत दूदा रौंठ तँ रौंठे डी । बाधामोहनक मस तहिला रौंठक आशि
 रौंठ पकडी रौंखाए नगत । मस गडले अणन पहिल रौंठ । गाएक पानन-पोसन । मसमे उँटिते उँटि
 लौले परिवारवमे गाए ले पाडैए । तँ पाडैत कि अछि । धाव-माज तखन रँले डै जखन ओगमे मस
 मधुवम आरि मसकेँ पकडी डै । पशुपाननक अणन भेन गाए पोसर । पशुपानन प्ररिंक अणन बहन
 अछि । किसानक देशक विकास रँना किसानी प्रफियसँ सँभर डै ? अणना मिये अणन दुमियोँ रँना-रँना
 रँसि जीरण-यात्रा भविसक सँभर नीक होग डै । जग रीट निरान करैत अणन तन-मस-धनक एकाग्र



करैत अछि । बाधामोहनक जितना आबो रैठन । जितना रैठि ते मसमे उठलै विथित-अविथित रिचाव पकड़ै । केता दिन अखरावक पन्नामे पशुपानक लेख देखै छिथि, हुदा ओकवा पठि कहै छी ? कियो पठि छी जे भावत-अमेरिकाम कते बाम जितनक तँ दोसब कोना पछुवनना देशमे कते बाम बन । तँ कियो पठि तँ पुरा जनकामे लोकक कि कारोबार छै । तँ कियो पठि तँ घोरी-डकैती कते भेन । तँ कियो पठि तँ लेनक भाड़ । रैठि जेन आरि लोक गाड़िमे केना चनत । 3 सभ सद्दाग सामने अरि ते बाधामोहनक मस लोख ए नगले । अफसोट करैत अखरावमे लेडियोपव आरि गेले । जे भाया बुने छी तगमे सकड़ । कार्यक्रम प्रतिदिन प्रथिक अछि । अखराव हुसन तँ हुसन आगयेमे लेडियोक कार्यक्रम सुनै । मस आगु रैठले । प्रथि कउनेज पुसापव गेले । 3 गठाम किमान मेना नले जगमे प्रथिक अधिक-स-अधिक जाणकारी भेटै छै । मतमगे म ल संगति सुधवरो करै छै आ रिगड़रो करै छै । अलारे मस लोखारे छी । जखन रिश्चिन्तानय अडिये तखन आबो कि चारै करी । मस ठमकले । रिश्चिन्तानय जेन उन्नति खेतीक जकवत अछि तगठाम जौ कउनेज कम बहे तहमे सीमित पठि गे होग, ओह सीमितमे कितारीये शिक्षा धरि सगठि जखन रिचाम केना हत ? जकवति अछि प्रथि शिक्षाके खुना रिश्चिन्तानय रैना सभ मतवक किमान पैदा करै । जौ मे ले तँ कि मस-कर्म-रचन समुत्पन्न भन् सकै छै ? आकि प्रवना लोक नरका कम्पनीक अणुवक बम पीरि रैसी तँमिया कहनमि ?

ओमवदन रैठि देख-देख बाधामोहनक मस आबो ओमवा जेन । हुदए सुख नगले । मस तवम नगले । रैकाव रैम हुअ नगले । हुदा कि हली सभ ए देशक भरिय छिथि । जेकव अगले ठेकाण ले छै । कहरि असाण छै जे नरहरकरे तवमारेजे कहन जाग छै हुदा केहेन हरक पैदा भन् बहन अछि ? नगले उछि हिस रैमि जाएरि आ नगले मोडगीक टागि धन् जेरि आ नगले गाडपव रैम उन्नतु जका हुह हुदए नगले । जलिना रैव-रगति पडनागव संगी संग जोडि दग छै तलिना बाधामोहनक मसक सभ संगी संग जोडि नगले । हुदा ओहठाम मत संगियो भेटै छै । जलिना नीष निपता तलिना बुधियो रिना जाग छै । जगमे ल देहमे सक बहे छै आ ल अक चले चले छै । जौ अके ले चनते तँ रैक केना चनते । जौ रैके ले चनते तँ रैतक जका माठि-पाणि एके केना बुमते । अकमडु अरमथामे बाधामोहन लेडियो खोननक । रैहावक पहिन समाचार- “सातम दिन पुसा मेना आबुत हत ।” सुनि ते बाधामोहनक ठेहिआएन मस उरिआएन । सातम दिन प्रथि मेना छी । जकव जाएरि । दुबे कोण अछि । पहिनका जिने तँ छी । असकरो जा सकै छी ले जौ संगरे भेटै जेन तँ आबो नीक । ओना जे मसमे अछि- गाए पौसरि ओल मस केकरो कह देखै छिथि । जखन मस ले तखन काजे की आ संगरे कतए । तँ संगियोक कोण आशि । ओना टोक-टोवाहापव टट कन् देखै ।

सरावीक सुनिवा तगये जेन अछि तहमे डेट रैजे मेनाक उन्नतन हत, तिनसुबको रैम पकड़ल काज चनिये जाएत । तीष दिनक मेना छी तीषु दिन बहरि । गवमी मास छिहे, थाग-पीरैक दोकाण-दोबी हेरै करैते । दृठता अरि ते संयोगके नीक बुमनक । संयोग कोना कि अगले अरि छै आकि काज अले छै । जौ काजे ले तँ संयोग कथिक ।

जलिना कोना अरौध रैट्टा आमक नानचमे निमलेव अणुवियो वातिये माए-रौग नगमे उठि ठेकन आमक गाड नग पछि जागत तलिना बाधामोहन रैम पकड़ि पुसा प्रति मेना रिदा भेन । मेना तँ मेने छी । हुदा मेना की ? आहेए ले जे रिदेशी खेन-तमाशी, नलिचगव रसुत आशि अणव जे प्रवना मेना हुन ओकवा नय छै कन् बहन अछि । सुधाव जकवी अछि हुदा अणवके मोहननी दुमि अणकव अणवा जेरि कि लणमति ले भेन ? कोना रसुतक संग परिवार जुठन छै, ओकव जरीका छिथि, 3 ग



जीरिकाके तोड़सँ पहिले ओहल जीरिका अगिरार्य होगत जे समेक सग चलि सकथ । र्श्व हाथ-पएबक जोक-ठेगी जहिला दोसब गब पकड़ि आगु रैठत अछि तहिला जगतामक किसानी जिनगीक हाथ-पएब ठूठन अछि तगताम उपाए केलेह होग ?

उद्घाटनक समय जहिला दिनगीसँ गाम धरिक लोक तहिला बंग-बंगक रेडियो-अखरावरना दस-दस करैत । दूदा सिपाही कम । तहुमे रैसी ओहल जे उद्घाटनक पञ्जाति चरिये गेल । फेद्रीयता जे केतो अथवा होग छै तँ कतेो नीको छै जकबति अछि फेद्रीय प्रथि त्वाणक । मिथिलाचनक अणहरो-दिठवा रूमैत अछि जे छहठी मृत होग छै आ छरौ वीतक छह सीमा होग छै आ सीमागब किछु हिन मेना नछै छै । ओग मेनाकेँ ओह सजा पारैत जे ओग तेसीसँ चलेत । एके अण एके हन आ एके तबकारी किछु कमो हिनक होगत तँ किछु रैसियो हिनक । हमर स्थिति कि अछि ओकरा पकड़र अछि । जे आन-आन बाज्यक स्थितिसँ भिन्न अछि । कितारी दौड़मे देशकेँ जानर अमान अछि दूदा भौगोमिक दौड़मे कठिन अछि । भनहि कठिन अछि दूदा जीरण-दाता तँ ओह छी । जोड़ि केना जीर ?

उद्घाटन भाषा सुनि बाधामोहनक मन शीशा जकाँ चमकि गेल । पाथब गीबन काट जकाँ चमला क२ चमकि गेल । दुनियाँसँ न२ क२ रङ्गआहा माँठ धरिक रात सुननक । दोखरो रङ्ग मोषा पैदा करैत अछि से तँ बाधामोहन पहिन दिन सुननक । गुना पहिला सुनल बह्ये जे रङ्गसँ तेन भले निकलि जाउ दूदा रातसँ हठ लै सकै छी । दूदा ओकरा कहलिये रूमै छन ।

मिथिलात तौरपब गुण-गुणमे रैठि कार्यक्रम शुक भेल । एक सग अलको गुण । केतो अणक खेतीक तँ केतो तबकारीक, केतो हूनक तँ कतेो हनक । केतो पशुपालन तँ केतो दूगी पालन । जहिला मेनामे प्रेमिकालेँ देख आबो मेनाक चूहचूही (बीणक) रैठि जागत तहिला बाधामोहनकेँ सेहो चूहचूही भवन मेना रूमि पड़न । रीटक जे आधा घंठी समय खानी अछि तगमे था-पी जेरै नीक बहत । चाबि घंठीक गोयठी अछि ।

पशुपालन गोयठीमे बाधामोहन रैसन । तीन शिक्षकक रीट गोयठी संचालित भेल । दूदा बाधामोहनकेँ रैसावक गप-सपसँ रूमि पड़ए नगले जे भविसक अणवा गनाकक असकले छी । किअक तँ मनुयक पहिन परिचय भये कहलै छै । रैगुसबाय आ रैकसबिया रैसी रूमि पड़ले । दूदा असकरेमे असकब लै रूमि पड़ । कहनिहब शिक्षक छथिये, सुनिहब जहिला सभ तहिला हमरूँ बहर ।

तीनु शिक्षक पशुपालनक लेन पशुक देखलेख, रीमावीक गनाज आ नमनक चर्च केननि । चाबि घंठीक गोयठीमे तीन-टोखाग समय निकलि गेल । शेष समेमे ओ सभ (तीनु शिक्षक) समस्या सुलेक समय देनथि । एका-एकी समस्यागब चर्च हुअए नगन । दूदा अणकब भोज सुनहनि कि नअ सजिया अँटाब छन । बाधामोहनक मनमे सेहो प्रश्न उठए नगन । गनछिया जकाँ घौदे-घौदा । दूदा रान मन बाधामोहनक थकथका गेल । हिन्दीमे सरान जरार चलेत छन । भाषाक गन्ती रसुतक (रिषयक) गन्ती रना दैत अछि । अष्टम सूटिमे मैथिली बहिले मिथिलाचनक केठ-कचहरीसँ न२ क२ सकुन-कओलेजमे हिन्दीमे चलेए । अण हिया-पुतारकेँ अंग्रेजिया रैसावर अणुआएन जिनगीक नमन रूमन जा बहन अछि । जकबति अछि जगत-जीर-अश्विकेँ जानर । बाधामोहन अण मनक रात मनमे बथि लेनक । संयोग भेल । तीनु शिक्षक अतिमा पाँट मिठमे के कतअसँ अथन छी प्छनथि । फेद सुनि बाधामोहनकेँ छुरा भेल । अण देशे अण भेय अण भाया तँ सगी अछिये । ओ अण परिचय मधुरनी जिना नाँसँ देनक । पड़ सी गामक एकठी शिक्षक । ओ मैथिलीमे बाधामोहनकेँ प्छनथि-



“अहाँक गाम ? ”

गामक नाँ उ सुनिते उ कहनखिन-

“अहाँक पड़ानी छी तँ तीनु दिन अगल देवापव बहरै । ”

देवाक नाँ सुनि दोसर शिक्षक हुनका आँखि-पव-आँखि देनकनि । आँखियेक गमिावामे ज़रार देनखिन-

“मिथिनाक धर्या । ”

साम्प्रतिक कार्यक्रम होगमँ पहिल धविक डूठीमे पी.एन. राँडू डनाह । उना गौघठीक तीनु शिक्षकक देवा सठेजे-सठेन मेहो डुनहिले । तीनुक एकठाँमे देवा बहल सँम-भोव एकठाँमे रैन चाले पीरै डुधि आ अगल-अगल देमै-कोसक गपौ करै डुधि । रीचक एक घँठी सम्य रितरैक क्रामे पी.एन. राँडू बाधामोहनकेँ कहनखिन-

“बाधामोहन, अहाँ मेना देखए एलौ, घुमि-खिब देख लिउ आ हमहाँ डूठी समाप्त कऽ जेरै । ”

“रैडरैटा या । ” कहि बाधामोहन मेना दिस रैठन आ पी.एन. राँडू अँखिस दिस । अँखिस पहुँचते अगला खूपक चर्च उठन । गौघठीक नीक कार्यक्रम भेल ।

रैगकेँ अँखिसमे बखल बाधामोहनक देहो हनखक भेल । आगु रैटा ते लोक दिस ठिकिया कऽ तकनक उँ रूमि पडले जे ओहल लोक रैसा डुधि जे रँमरैया कनाकार जकाँ जेहल जोकव तेहल हीरो हीरो जकाँ डुधि । नावद भगराण जकाँ जतए स्वावण कवरै ततए गामक रीषाक संग पहुँचनाहक राँडून्य । किसान कम था कऽ मेहनत करैरैना । दूदा, एँठाँमेक जे प्रथिक प्रतियुष्ठा रँनन बहन उँ उँ बग-बग पकडनहि अँडि, जगमँ किसान परिवार आ किसानक ठेकाल अमेबिको-गँलौडमे दैते डुधि । तँ समेक डुख अँडि जे किसानक परिवारया आधुनिक कएन जाए ।

साम्प्रतिक कार्यक्रम शुक भेल । बाधामोहनकेँ संग केल पी.एन. राँडू देवा दिस रैठकेँ रिटाव केलनि । उना सिनेरियानये केँमसमे देवा । देवाक संग पान-सात कष्टक राँडू यो माड ी ।

पी.एन. राँडूक घब मरुँनी जिनाक भगराणखर गाम, सुबेणुद राँडूक घब धरुँखर मराद जिना आ दीनासाथ राँडूक रँकुसब जिना । तीनुक तीनु भये फेव ले भौगैनिक फेव मेहो । एँगीकनचवसँ जूडन तीनु गौठे तँ तीनु फेवक जाणकारी तीनु गौठेकेँ बहरै कवनि । उना भायाक रीच कोला रिराद ले बहन, कावणो मण्युठे अँडि । गाम-गाम आ घब-घबक जीना अँडि जे मैथिली भायाकेँ मणहिये आ भोजपुरियो फेवमे कथा-कथुँमेती होगत आरि बहन अँडि । कोला घबक पकय मैथिल तँ भोजपुरवनी घबरानी आ भोजपुरिया घबरनाक मणहिली घबरानी । उना शैरुदक कर्कषण मणहिक अँपेक्षा मैथिली-भोजपुरीमे कम अँडि ।

कम ज़रारदेही बहल पी.एन. राँडू समेपव अँखिसमँ निकलि देवा दिस रैठकेँ रिटाव केलनि । दूदा सुबेणुद राँडू ज़रारदेहीमे आ दीनासाथ राँडू विपौठे दगमे पडुअएजे बहि गेना । दिसक एक गाड ी रिनम भेल दिस भविक गाड ी रिनमिते चनत । दूदा तैयो पी.एन. राँडू दुनु गौठेकेँ कहि देनखिन-



“शौर्खँ आएन छथि । किछ हान-दानक समाचार तँ आरिसे गेल हएत । जेठे-फेठे एकठाम रैस चाह पीरौ कवरौ ।”

आगु रैठौ ते जेना पी.एन. राँवु बाधामोहनक शौर्खँ भऽ गेलथि । खुदबखि-

“बाधामोहन, अहाँ गामक पजबेमे सुखेत अछि, ओतै हमब मान्ब छी ।”

परौसी गाम मान्ब सुनि बाधामोहनक मनमे मनियठता जगल । एकरँछ (एकरँछु) गाम, एक उंगजा एक खास-पास । उँलौत उंगना जकाँ रिबोव होगत बाधामोहन राजन-

“श्रीमान्, अपन लोकनि तँ सब तवहँ पौघ भेजिअ, अपनहि लोकनि ल रौहि पकड़ि आगु रैठरौ ।”

बाधामोहनक रात समाप्तो ल भेल छल आकि रीचेमे पी.एन. राँवु ठगकना-

“जहिना अहाँ अखन नर-तुबिया छी तहिना जखन हमजँ बही तही दिनसँ जले छी जे एक-दोसबाक रौहि पकड़ि गवा-जोड़ ी कऽ ज़ीरन-यात्रा कवरौ नीक होग छै । दूदा से लै भऽ परौत अछि । दिन-बाति देखे छी जे ठक ठकि रौहि पकड़ि धकेल-धकेल गवगोष्टिया दगए, तगठाम केकरो रौहि पकड़ि जेर छोड़ ी-छोड़ ीक खेन लै ल छी ।”

पी.एन. राँवुक रिचवक गंभीरताकेँ बाधामोहन लै परेथि सकल दूदा मनमे तँ ओल खुशी जागिये गेल बहै जे भवि भेष्टे भोजन, बाति-रीच बहक जगह देननि ओ जकब नीक रौजो देरौ कवता ।

माझ मात रैजे तीनु गोठे पी.एन. राँवु, सुलेन्द्र राँवु आ दीनानाथ राँवु एकठाम भेला । देवाक छतेपव रैसाव । एक दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमक गीत-गात तँ दोसब दिन गाम-घबक फ़ोन-समाचार । चाह छनिते पी.एन. राँवुक पनौ सुनेखा सेहो चाह पीरौ रैसावमे शानि भऽ गेली । ओना जग दिन दीनानाथ राँवुक दूहेँ मिचगकेँ तीत सुननि तग दिनसँ जेना लिका देखिते रहल मन पड़ि जाग छनि जगसँ अलेने हँसी निकनि जाग छनि ।

चाह पीरौ दीनानाथ राँवु रैजना- “सभसँ कम उंगस्थिति मिथिनाचनेक बहन ?”

सरीकारित पी.एन. राँवु रैजना- “हँ, से तँ छन । अपन तीनु गोठेक केव तीन बंगक अछि । माष्टिक (केवक) असुविधा जग कपे अहाँ दूनु गोठे केवक अछि ओगसँ तिन मिथिनाचनेक अछि । एक तँ माष्टि बक अछि तग रीच तेज धबक कठारक संग ज़ोवगव रैखिक संग तमकमो केवकेँ नष्ट करैत बहन अछि ।”

पी.एन. राँवुक उत्तर पढाति, टुगा-टुगी भऽ गेल । अका-अकी, रका-रकी सब सरहक दूह देखे नगना । खटा या रैटा जकाँ बाधामोहन आँखि-कास-दूह ठाठ केन, जे सीधेक मग भेठेन किछ सीखरौ । पी.एन. राँवु मग जे अपन गनाकाक उखाली कवरौ उचित लै तँ टुगे बहरौ नीक । दूदा दीनानाथ राँवु जेहल काज करेमे चडफ़ड तेहल रैजेयोमे फ़डकोव । मनमे उँठनि जखन पी.एन. राँवुक शौर्खँ एननि, ओना हुनका अपनो गाम छोड़ना पछेस रैखिसँ रैसिये भेल हेतनि, तखन रहल ल अपन रात उँठौता । तग रीच हम सब अपन केवक गप कवी ज़ रूँडि पावा हएत । रूँडि पावा ए नेल जे तीनु शिक्षकक रीच एकठा दूबदूह रैटाक चाबक ओबिष लै कऽ अपन सब सब द्वा गप



जे ए मकीमे एते स्वतवन् । पुर्विमा द्मिक लोत दग छी । ले तँ मासुवक अमवाक अँटावक गग कवर । ले तद्धर्म तँ शिवटागके तीत कहि गृहिणीसँ झूठ द्मा जेर । सत किछु समाहारेत दीनाथाथ रौरू रँजना-

“भाय, गोघृष्टीमे जे अँथिक गशिवा केलौं से अपन अघुत्तरक आधावगव, तँए एकवा अपना ठगसँ ले जेर । ”

पी.एन. रौरू प्रदत्तखि-

“कि अपना ठगसँ ? ”

दीनाथाथ रौरू- “हमरो पनी ओमहुवके छथि । तते पुजा-पाठ आगत-भागत करै छथि जे घबक जूतिये स्वममा देलियनि । हाँठे-रँजाव दौड-रँवहा तते करैरतथि जे कमोनहो कि था क२ गटा दितथि । तगसँ नीक जते कमाग छी पाकेठ खट काँष्ट क२ द२ दग छियनि । तग रीट कर्जा केलौं तँ अपन ज्ञानी, नग जौं महाजनी केलौं सेहो अपन ज्ञानी । ”

झुमकी दैत रीटमे पी.एन. रौरू छँपननि-

“तखन तँ सोनहो आषा हिसारँ घबसँ रौड । लल छी ? ”

दीनाथाथ रौरू- “ले ल रौड एन होगए, हुनका (पनी) नाँठक जे कियो अरौं छथि ओ तँ मासुवक पछी भेना किल किछु-ल-किछु रँजा जागते अछि । जगसँ घुमा-हिट । क२ दोखी भगये जाग छी । से सत छोडि क२”

पी.एन. रौरू गंजीवतसँ प्रश्न दोहनोननि । प्रश्नक गंजीवतके देखेत दीनाथाथ रौरू रँजना-

“देखियो भाय महाएरँ, अपना रिटाव ओहन जेहन पनीक, तँए अत्र्यागती परिवारमे रैसी रँडा गेन । झुदा आगक समेमे जे रीगड िँ आरि गेन अछि ओ तँ सोना-सोनी सामनेमे ठाठ भ२ गेन अछि । नर पीठक रोनमे कते मुँठ हँपी गेन अछि जे सत रूमरँ कठिन भ२ गेन अछि । जेना-जेना अत्र्यागती रँडते गेन तेना-तेना घबक रसुत् रिडहागत गेन । तँए गशिवा केलौं । ”

दीनाथाथ रौरू उतवक पछाति ह्रव सत गमा-गमा भ२ गेना । सुलेन्द्र रौरू ए-ताकमे जे अपन प्रवास नगसँ पी.एन. रौरू प्रश्न उठौता भनहि बाधामोहनक जनमसँ पहिले गाम छोडि देल होथि, झुदा जहल मएह । पी.एन. रौरूक मनमे उठि गेन जे सोना-सोनी तीष स्केवक तीषु गोष्टे छी तँए हुनका सतके प्रश्न उठैरौक चाहियनि जगमे हम रीटक कडक काज कवर । दीनाथाथ रौरू गव नगरैत बाधामोहनके प्रश्न देनखि-

“भवि मेना बहरँ किल ? ”

आग्रह देख बाधामोहनक रिटावक रौंह छुँष्टते ततुआ गेन-



“श्रीमानक, मासुव आ हमार गाम अकूठास अछि । अकरधुए छी । लिकव मासुव सरहक पुरबिया रौध हमार गामक पडरुर्छा या रौध छी ।”

अ गण सुमिते रैगनमे रैसन सुलेखाक दुदमे अण लैहक दुर्गापुजा देखर मल पडि गेलनि । लेना मंगी सरहक हँजमे चारिये रजे दिखारी न२ क२ माँस दगले जाग छुलौ मे दोसबि-तेसरि माँसमे घुमि क२ अरौ छुलौ । सतमी-माँ-दसमी धरि तँ ठेकाले ल वहे छन जे कखन अणनामे छी आ कखन दुर्गा-सुखामे । दूदा अखन किछ जौँ रौजर तँ राते अरना-दरना भ२ जाएत । मे ले तँ निचेमे जखन गव नगत तखन गण कवर । कियो कि अण छी लैहक भाए-रौध छी । हमार सरहक कि क ओ गण-जुमाणा छन जे लैहमेँ याव उँजियेले मासुव अरौ छुलौ । समाजक कियो छी भाए-रौध छी । दीनाथाथ रौरु प्रम दोहवरेत रैजना-

“पुरबिया या पडरुर्छा या रौध कथी कहनि ।”

बाधामोहन- “एक रैग खेत बहल माल माष्टक सतह एक रैग बहल एके रैगक उंगजो-रौड ी होग छे आ रौदिया-दली । ओही रौधमे गनबह कष्टा खेत अणला अछि । अणले खेतक रैगनमे अण सभ घामोक खेती कले छथि, तँ रिटाव भेल जे पुना मेना जाग छी, जहाँ धरि जे हएत रूमि-सुमि अणु कवर ।”

उतबक आशामे बाधामोहन दुप भ२ गेल । दूदा तीनु गोठे -पी.एन. रौरु, सुलेख रौरु आ दीनाथाथ रौरु-क रीच प्रमक गड उलठा-सुलठा पकड । गेल । एक दिस दैमिक स्थितिक चर्च उठल तँ दोसव दिस गामक । तेसव दिस एक-एक किसान परिवारक । प्रम-प्रम उतरे-उतव गँडि -दुर्छा या हूअ नगन । गणे-सपक फामे एहेन गँडि -दुर्छा या भ२ गेल जे तीनु गोठे अणले उँरनि हूअ नगना । दूदमेँ रौध निकनिते जहाँ नजरि उँरथि आकि अणले हीआ ठारि दलहि जे ओ गडरुँड भ२ गेल । एकाएकी तीनु गोठेक दूह रिंधुआ गेलनि । रैसावक वसे समाप्त भ२ गेल । दोहवा क२ चाहो पीर उँटित ले, हमार सरहक दुखारे तबिसक घबरालिनी भागसो कव ले जाग छथि तदुमे भवि दिसक ठाठ दुष्टी लेनिहार सेहो छथि । तगमेँ नीक जे रैसारे तोरि देन जाए । दूदा तीनुक रीच कष्टाओम तँ बाधामोहना सुनक । ओग लेटावक मलमे कि उँठते । दूदा रौडा क हँठन रौध होग आकि ठेठ नगाउन वस्ता, ठेपर तँ कठिन अछिये । सुलेख रौरु आ पी.एन. रौरुक अपेक्षा दीनाथाथ रौरुक चपटगी कम बहनि । मल गराही दलहि जे कहूना भेना तँ दुनु गोले सुलेख रौरु आ पी.एन. रौरु सीनियरे भेना किल । गन्ती तँ सभमेँ होग छे । हमारोँ भेल हएत जे अणले प्रमक जरारमे अणले ओमवा गेलौ । दूदा किछ रौजरौ तँ घापव गुले छीठर हएत किल । एक तँ ओहना दुनु गोठेक मल वर-वरौगत हेतनि तगपव किछ रौजि आरो तक-तका दिखनि मे नीक ले । दूदा रैगनमे रैसन सिथिलिनी-सुलेखा तीनु गोठेक दमा देख रीचमे गगाजन छीठर उँटित रूमि, दिख । वक जेहाजमेँ गवगोष्टियरेत दीनाथाथकेँ कहनिथि-

“मेहनति क२ क२ पडल छी आकि कपेआ-पेसा द२ क२ ?”

दिओव-भोजक गण-सपक फामे दीनाथाथ रैजना-

“गाग-कौड ी तँ खर्चा ले लेल छी दूदा दहेजक रैदना मासुवमेँ नीक विजनठे आ लाकवी जकव लेल छी ।”



दीलभाथक उँतव सुनि सुलेखा रँजनी-

“अखल रँसव तौड़ु भवि दिन खँलौहँ । हव कलि सेहो अमुके जकाँ खँए पड़त तँ सरेव-
सकान ओझागणव चलि जाएँ नीक बहत ।”

एक तँ बाकसि दोसव लोतन हरे-हरे क२ तीनु गोठे मारि गेला ।

सुलेखा भास कवए रँजनी । बाधामोहन आ पी.एन. राँरु डतपव सँ निट्टाँ उँतवि कोठवीमे रँस
गण-सण कवए नगना । बाधामोहन-

“श्रीमान्, कते दिनसँ एँठाम छिँ ?”

बाधामोहनक प्रश्न सुनि पी.एन. राँरु विस्मित हुँए नगना । मस पड़नसि लोकवीक पहिन दिन, कओलेजक
पठ १७, हाँ-सुकुनक पठ १७, पाठन-पोसन गत्यादि । मिलमाक बीन जकाँ जिनगी पाछु दूहँ
समवनि । ओही जिनगीक हल ल अखल धरि भोगि बहन छी । दूदा... ? जे गाम-समाज हमरा सण
मसुख रँना ठाँठ केनक ओकवा ले हम कि केनिँ ? प्रतियुँठिँ किमान परिवारक रँषी बहिनो कि ओग
प्रतियुँठाक हकदाव रँसि सोनिँ । भक खुँजनि । मसमे एनसि मसया तँ एहिा सभठाम ओनवएन अछि
दूदा गामसँ आँन नरातुविया रँट्टाकेँ जौँ आँरौँ मंगतुविया ले रँनएँ तँ सेरा-निवृत्तिक पछाति कते
जाएँ । मसमे अरिँते पी.एन. राँरुक दूहमे दूसकी एनसि । जेना अणरवत चलेत सँसक जगह जोकसँ
सँस लेना पछाति षाति तक गतिमान भ२ जागत तहिा पी.एन. राँरुकेँ सेहो भेनसि । रँजनी-

“बाधामोहन, मानक पछाति सेरा-निवृत्त भ२ बहन छी, गामेमे बहरँ । अखला गामेमे एते खेत-पखाव
अछि जे जौँ ओकवा सविया क२ कवी तँ लोकवीसँ रँसी हएत । दूदा कि कबितौँ ? गाम-समाजक
कहुँ-चलि रँन सुनि पठन-निखन लोकराणकेँ गाम छोड़िक अलको कावामे एकठौँ कावण गूहो अछि
जे जौँ कियो एगीकनचव प्रेजुँएँ खेतक गोना हफाँडि तबकावी खेती कबधि तँ समाजक लोक
किटाँडि क२ समाजसँ भगा देतसि । कियो कोणव तँ कियो फजवा कहुँ नगतसि । भनहँ ओ
रँवोजगारीक मुँटमे षाखाँ * निखा दिनगीमे फनगी-कराडीक काज किखए ले कबधि ।”

पी.एन. राँरुक रिटाव सुनि बाधामोहन दूडी डोनरौँत किछ मारौँ कवेत आ किछ नहियौँ मालेत ।
दूदा दूह रँन केले बहल पी.एन. राँरु ले पलेधि पाँनसि जे मससँ कते मानक । तँग रीच पनेी
सुलेखा आँरिँ कहनकसि-

“अणल सभ ल वातिकेँ रोषी खग छी दूदा पव-पाहुँकेँ खुँआएँ नीक हएत ? मस असकतागए तँ
अणला दूनु गोठे भाते खा लेरँ ।”

भातक षाँ सुनि पी.एन. राँरुक मसमे खौँम उँठनसि जे एक तँ भवि दिन एहव-ओहव करीमे देह-
हाथ रँखा गेन तँगणव भात खुँआ भवि वाति उँठ-रँस कलौतीह । दूदा तेसव नग रँजनी केलेह
हएत । पाँशी रँदलेत रँजनी-

“अहाँ जे एहेन छी, से सरेले किखए ले कहलौँ जे चाहे माछे न२ अणितौँ कि अण्डे ।”

रीटमे बाधामोहन रँजनी-



“खागले अलले बक्का-ठैकी करे जी, जे सत दिन परिवारमे छैए सएह हमरूँ थाएँ । अखन जूखन-जलन जी अखन ले सत टिज पटाएँ तँ कहिया पटाएँ ।”

सह गारि अणन गोष्ठी घूमकरौत स्वलेखा आंगु रँठनी ।

लैस-चुलिक भानस, गण-सण पोवाएजो ले डन कि तैयार भ२ गेल । खेलाग तैयार होगते कोठबीमे नगन गोन मेजणव सत रसंत बाधि पतिकेँ स्वलेखा कहनथिष-

“चनु, पहिले भोजन क२ निख ।”

एके ठैरुनणव तीनु गोले लैस तीनु गोष्टे खेलाग थाए नगना । बाधामोहनकेँ नर रँरहाव रूमि पडन । किछु रौजरुँ उँटित ले रूमि चुपे बहन दूदा गुँववागत मणमे उँपकले जे आरो जे होड दूदा सोनामे खेल तँ नुँगी मिवटाग आ अँटावक उँपदर तँ कहिते अछि । तग रंग अहो तँ होगते अछि जे सोना-सोनी सरहक थाएँ नणागते अछि । रएह नाप ले काजो नागत । आकि खागले दानि-भात आ... ?

प्रात भले आठ रँजिते पी.एन. रौरुकेँ कार्यक्रमक तैयारीक लेन रिदा होगसँ पहिले मणमे उँठननि जे अखन अलले बाधामोहनकेँ किअए रंग लेल जाएँ । रौवह रँजेसँ कार्यक्रम शुक हएत । डेवासँ निकलेत बाधामोहनकेँ कहनथिष-

“बाधामोहन, अखन अहाँ ले जाड । रौवह रँजेसँ गोष्ठी चनत, तगमे शोमिन हएँ ।”

परिवारक भीतव ले खाट्टी हिमारसँ भाए-रँलिन, रौप-पिती, दादा-दादी, नाना-नानी रँठन अछि दूदा समाज खोडे परिवारक रिटावकेँ उँपव माणत ओ तँ रहए माणत जे समाजक कन्याशार्थ होग । ओ तँ उँमेले हिमारसँ ले माणत । केशे-दाट्टी पाकन दादा-रौरौक श्रेणीमे एजोँ समबथ-सकबथ बहले रौप-पितीक श्रेणीमे एजोँ, एक उँमबिया बहले भाए-रँलिन, रंगी, रँलिया, मीत-याव, भजाव गतुआदिक श्रेणी अलेत तगसँ निट्टाँ रौखा-देया अलेत । पटास-पटाण रँथक स्वलेखा आ पणवह-सोनह रँथक बाधामोहन । तद्वमे बाधामोहनसँ दोरव उँमेवक रौन-रँट्टाँ सेहो डनहिलेँ । ओना बाधामोहनकेँ अणले रंग जनथे कवा पी.एन. रौरुँ रँतुयष्ट भ२ गेल डनह जे नहियौँ बहले पाहुँन भुखन नहियेँ बहत । अखाम करेक रँरसथा डगहेँ जे नीक नगते से कवत ।

स्वलेखाक रौत स्वनि बाधामोहन रौजन-

“खेत-पखाव केकवो जिमामे ले देले छिँ ?”

“देले किअए ले बहर । दूदा एतरौ तँ ओनी लेटावकेँ कहिँ जे कहयो कान जे अलेँए तँ गोष्टे किजो महिसक घीए लेल आएन, गोष्टे मष्टकुव दहिये ।”

स्वलेखाकेँ तँसिखागत देथि बाधामोहन रौजन-

“अहाँ गामसँ हमर गाम रँहुत पडुआ गेल अछि ।”



“की गढुआ गेन अछि ? ”

बाधामोहन- “हमर गौआँ तँ तेहेन वगड ङ-मगड ङ भ२ गेन अछि जे सदिखन मगड-मगडी करैत बहन आ ङगजाक कोष गग जे खेतो-पथाव रौच कोठ-कचहरीकेँ दैत बहन । ह्नुदा एकठा धरि भेन अछि जे जग जहनकेँ आन समाजक लोक पाप रूमेँ ओग ब्याकवाकेँ ङण्टी, धवम रँगा देनक । जे एको रँव जहन ले गेन ओ अरवमी एँ दूआले रूमन जागत जे धर्म प्रागत करैक एको मीठ ी ङुगव ले ङठन अछि । ”

बाधामोहनक रात सुनि सुनेखाक बजुरि बाधामोहनकेँ मंगतुरिया जकाँ बजुरव नगननि । सतबह रँथक अरमथामे रिखाह भेन बहए, तगसँ पहिले तँ बाधामोहन जकाँ ले राप-मागक रीच हमाँ ह्नुदो । ङमेवोक तँ किछु ग्ना-धर्म छै । जौँ से ले छै तँ किअए मेनामे एक ङमेरिये लोक रँमी बहए । रिथगत होगत रँजनी-

“रौआ, एक दिसक घष्टना ओह्ना मल अछि । ”

घष्टना सुनि बाधामोहनक जिउनामा जगन । ह्नुह रौरि रौजन-

“से की, से की ? ”

सुनेखा- “तोवा गाममे दुर्गापूजा तहियो होग छेनह, अथला होगते छह । मगड ङ तोहव गौआँ मल दिसक । दुर्गापूजाक मेना एतए ह्नुअ कि ओतए ह्नुअ, अहीले मगड ङ भ२ गेन । कोला गाममे एकोठाम पूजा ले होग छै मगव तोवा गाममे दुर्गाम शुकसेँ पूजा होग छै । एकरँवु हमर गाम, जह्ना पचागतक गाम सरहक दुरी होग छै तगसँ नगे हमर गाम अछि । एकादिसिया ले रूमि पडए जे दु गाम दोसव छी अगल गाम दोसव । खेतो-पथावमे एँ गामक लोक ओग गाम ओग गामक लोक एँ गाम काज करिते अछि । जराव, सौजनियाँ, मेषजनी, गत्यादिक भोजो-भातक होगते अछि । ”

सुनेखाकेँ तँसिआगत देख बाधामोहन रौजन-

“किदैन घष्टना कहए नगनि ? ”

जह्ना धक दनि आनि ह्नुठैए, हरा-रिहाडा ङठै छै तह्ना सुनेखाक मलमे ङठन । रँजनी-

“रौआ, तहिसक मिना पूजाक दिस बह । गाच-तमाशा शुक होगते बह आकि धुक द२ पछिमसँ रिहाडा ङठले । पाणि-पाथव सेनो मंगे एले । मेनामे ह्नुड भ२ गेन । जह-पठाव लोक जेमहव-तेमहव पड एन । अगला गामक तीष गोले बही । गामे दिस पडले जौँ, ह्नुदा दसो डेग आगु ले रँठले आकि पाथव तड-तड ङ गेन । भेन जे जाष ले रौचत । कपाव ह्नुष्ट जधत, तेहेन-तेहेन पाथव बहए । वसूते कातक एक गोलेक मानक घब चनि गेलो । हरा तेहेन तेज बह जे घबक चाव ङरिया दगतए । ह्नुदा तीषु गोले चावक रँती पकडा नठकि गेलो । कहूना जाष रँचन । किदैन रौजन छेनह जे अहाँक गाम नीक अछि ? ”

सुनेखाक प्रम सुनि बाधामोहन ओह्ना अक-रँका गेन, जह्ना कियो रँजिते-रँजिते रिसवि जागत । ओना दूनु गोठेक गग-मग जूगो पाडु ह्नुसुकि चनि गेन छन जे एकक भोगन दोसवक



बिस्मा रैनि चलि बहन छन दूदा प्रेम-उत्तव ओकवा समाधि अलगक । पाछु उँगटते बाधामोहनक मसमे
सुरेखाक प्रेम धरै द२ खसल । राजन-

“है, है, कहे छलौ जे अहाँक गामक किसानि हमरा गामसँ अग्रखा गेल अछि । ”

अग्रखा-पछुखा सुरेखा दोहबरोत पछुनखि-

“एकठाम दूनु जोठेक गाम अछि । एकरधु खेत अछि, एक बग उँरजा-रौडी तखन किअए एना
भेल ? ”

सुरेखाक प्रेम सुरेखा बाधामोहन अगनाकेँ ठेठेनए नगल तँ बुमि पडले जे प्रेमक उत्तव ठगसँ ले द२
पएरै, दूदा आतावाम कहलके जे ले पाण तँ पाणक उँटियो आकि गाछोक उँटिसँ काज चलिते अछि ।
तखन जोँ उत्तवक नगलो-तीउन जरौर भ२ सकत तैयो तँ किछ-ल-किछ तालिक रात आरियो
जाएत । पहिले तह तखन ल एकतर आकि मसतर । राजन-

“दीदी, अग्रखाएन-पछुखाएन तँ खेलाग-गीलाग, ओछाग-पलीकियाग आकि घरे-दूखाव देखल ल बुने
छी । ”

सुरेखा अगल मसकेँ, गोधुनि रैना जकाँ रँहठारि बाधामोहनक रिटाव नग ठाठ केननि । जलिना ग्वक-
शियर रीट एक-दोसबाकेँ उँकठी-पैटी होगत तलिना सुरेखा पछुनखि-

“जखन दूनु गामक लोक खेतिये करै छथि, तखन किअए भगरान दू बग रँगा देनखि ? ”

सुरेखाक प्रेम बाधामोहनकेँ ओलिना भविअएन बुमि पडल जलिना हानिरमिठी रा रौडी परीकामे प्रथम
मथान परैरैना छत्र मेहो किछ प्रेमसँ निकतव देख अगनाकेँ अलग क२ नगए, तँए कि ओकवा तसकोन
कहलै मेहो तँ उँटित बहियेँ हएत । हमसि क२ ही खोनि बाधामोहन राजन-

“दीदी, आन टिज तँ नजबिपव ले चट-ए दूदा एकठी चट-ए । ”

नजबिपव चट-रैना रात सुरेखाक मस राजन नजबिपव चट-रैना रातकेँ जोँ नजबि चट । ले
चट एरै तँ ओ ठनागव छिँटिनिये जाएत । तँए एकतर भ२ सृणए पडत । रँजनीह-

“रौखा, हमरा-तोवा रीट कोन नजेरौ-धकेरौ अछि । हम जेठ रँहल मागये-दाखिन भेलिअ, तँु भाए-
रौण रौग-दाखिन सीमा पवक सिगाहिये जकाँ जिनगीक भेलह । तखन किअए धक-मकाग छह । ”

सुरेखाक भार देख बाधामोहन भरलोक पहुँच गेल दूदा अखाह भरसागव देख राजन-

“दीदी, अहाँ गामक रैसी किसानि एकाजू छथि । खेती करै छथि, गाए-मसिस पोसि छथि गत्यादि-
गत्यादि दूदा हमरा गामक रैसी जोतदार दू-दिसिया काज करै छथि । अखा-पाणिक खेती करै छथि
आ सामाजिक रँषक रीट मेहो करै छथि । रँषल ल समाजकेँ रँषलि रँकतोकेँ रँषलत अछि । अगना
काजक मसए समाजक काजमे नगरै छथि तगसँ खेतीक उँटित देख-भान ले क२ परैत छथि ।



जगमँ कम आमदनीक जिनगी रँनि गेन छन्हि । दूदा अहाँ गामक किसानी रँष्ट मजगुत रँनि गेन अछि । ”

बाधामोहनक रात सुनि सुनेथार्लेँ मामा मन पड़नि । मामा मन पड़ि ते मन पड़नि रौंड़ी-माड़ाी आ मांगक संग मायार्लेँ भाँ-रँलिक ओ कप जे दूनु मिलि जिनगीक जेन ठाँ छथि । कि मामा पाहुँ ली जे मांगक रौंड़ी-तामि-कोड़ा तीमल-तबकावीसँ फन-फनहवी धरि क गाँ-रिबीड नगा दैत । बाधामोहन कियो आष डी, जेँ कबजानमे केवाक योव पाकन हएत तँ चाँ डीमी खुँआगयो देरँ आ दू हत्था गामो लल जागने कहरँ । दू पवणी कते खाँएँ, पछीस-पछीस-तीस-ती हत्थाक केवा योव । जे तीमियेँ दिसमे दुबियो भँ जाँए । रँजनि-

“रौंआ, चनह । गाम जकाँ तँ रीया-रीये रौंड़ी-माड़ाी आकि गाँडी-रिबीडी नहियेँ अछि दूदा जतरेँ अछि से चलि कइ देखनक जे अषा जोकव दुनियाँ रँलोल डी की ली । ”

रौंड़ी-माड़ाीक नाँ सुनि बाधामोहनक मन आवो चमकन । थोलियापव बाखन हँसुआ हाथमे लल सुनेआ आ पाँडू-पाँडू बाधामोहन डेवामँ निकलि रौंड़ी पहुँचन । जलिा मरुडमे हँडी-रिदेसबक मेना पहुँच याली फरिक्कसँ हिया कइ देखेँ जे कतए कोष तबहक कप छै तलिा रौंड़ीक रँष्ट खुँजिते बाधामोहन हिया कइ देखनक तँ अजरी दुनियाँ रँमि पड़ले ।

पानिक नानीक रँगनमे पाँट रँष्ट केवा पाँट वंगक देखनक । गाँडेमे एकठाँ पकजो । रँष्टक डुँपव जान नगन । टिडक कोला डले ली जे चोवा कइ अँत । सुखन डपोव कँष्टे सुनेआ रँजनीह-

“रौंआ, कहूना भेनह तँ तूँ पकथे पाँट भेनह किल ओविया कइ ओग योवकेँ कँह । ”

पाकन केवा योव कँष्टेक नाँ सुनिते बाधामोहन चपटगा गेन, कहूना तँ पहुँगमे डीहे ल । उँटित-उँपकाव दूनु । रँजनि-

“दीदी, हँसुआ दिख, आ अहाँ हँष्ट जाँड, केवाक पानि रँड खवारँ लोँ छै, कपडामे एहेन दाँग नगा दग छै जे कपडामे फँष्ट जाँएत दूदा छुँत ली । ”

बाधामोहनक बक-डुक रिटाव सुनि सुनेआ रँजनी-

“तखन हएव लोक ओग दाँगकेँ जोडरँ केना छै ? ”

जलिा पवीक्षा भरणमे पहिलक प्रमकेँ हनुक रँमिते अगिलो रिसरि हाँग-हाँग पवीक्षार्थी लिखए नहोत तलिा बाधामोहन रँजनि-

“दीदी, दुनियाँमे एहेन कोष दुख अछि जेकव दराँग ली छै, तखन तँ... । ”

डोलेत घबसे जलिा घबरावी सौंगव नगा-नगा ठाँ बखँ चहित तलिा सुनेआ अष जिनगी संग बाधामोहनकेँ खुँडी ली सौंगले रँण चहनी । दूदा बाधामोहनक रँष्टागत दूँह देख रँजनी-



“है तँ किदेस कहे छैनह ? ”

ठेँगीकेँ ठेँठिये कोदवि भाव थहै छै । रँडका हकछि जाग छै । तहिना ल केरो दगक दराग
अछि । रँजन-

“दीदी, केहना दग किअए ल होय, हूदा दरागयो संगे छै । ”

संगे दराग स्रनि स्रलेखा रँजनी-

“से की ? ”

“आण जीरित गाढमे ल दुध आकि नसुमा होग छै, हूदा केवा तँ डी गाढक नड । तँए एकवा एकले
सुखन डसोव जे छै, ओकवा आगिमे जवा क२ ओही डाँवसँ बगडनागव दग छुटै छै । ”

केवाक घोव काष्टि थगुकेँ सेहो काष्टि-थोष्टि कात क२ देनक । हैसुखाये नागन पाणि माष्टिगव
बगडि माह केनक । आगु रँडा ते कष्टि भविक हनक गाढो आ नार्डा यो देखनक । गयैथा आग-
जाहक गाढ जकाँ तँ एकोठी हनक गाढ ले हूदा कामधेय जकाँ सानो भवि हन दगरना सत । आर
कहू जे हडक भाव जेकवा नहियो छै तहू गाढ सतमे हड नठकन छै । अलले मल घुबिआएन
अछि । हूदा ले गाढोमे अणवलेरा पडित अछिये । हुन भनहि होड, हडरँ पाग रूमिमे अछि । हूदा
तँए कि धारीस मण सारिनी पोडछे अछि जे रिय सतगराल हडरँ ल कवत । है से तँ अछिये भनहि
ठेँठ-हडक, आडा-धुव, घाँठ-रँठ दूखाले माष्टिक रँठ किअए ल रँन होड, हूदा अकामक रँठ तँ खूजन
डगले तँए ल कहे छै जे हे प्रियतम देह भनहि तीस कोस छठजे किअए ल होय हूदा मण तँ दूनु
गोठेक संग गिनि बटिते-रँमिमे अछि ।

सहृदित भोजनक लेन जहिना आण-आण रसतुक महत अछि तहिना ल हनोक अछि । हूदा
हनक दूदनी जिनगीकेँ सुदनी दिस रँडए देत । जे मिथिनाचन हकाठ-सुकाठक संग टाणन मण रूक
पैदा करैक उँरव शक्ति संयोगले अछि कि ओग शक्तिकेँ गुजा केले रिया कन्याशक असीवरद भेटै
जाएत । जेँ हूथोठे होगते तँ काँट माष्टिक एकठी दिखारी लेमि, हाथ-जोडा मिहोवा केनासँ
भेटैते तँ अदोसँ होगत आएन आ मिथिनाचन गीचे हूकेँ किअक धसत गेन । सानो भवि चलेरना हन
जगठाम छै, तगठाम... ? खीवा नती देख बाधामोहन रँजन-

“दीदी, खीड । नती रीचमे देखे छी ? ”

बाधामोहनक जिह्वासाकेँ स्रलेखा परेथि गेली । जहिना छुटै-रँटोकेँ माए-रौप, भाए-रँलिन ओगरीक
गणिवसँ कोथा-मेना देखा ओकव नाँउ सिखरैत तहिना स्रलेखा बाधामोहनकेँ सिखरैत रँजनी-

“रौथा, खीड । हने छी । हनेक गुण ओकरोमे छै, हूदा अणन पाविराविक जिनगी तेहेन रँना लेन
अछि जे तीस-तवकारी-सँ-हनाहाव धरि पडरैत अछि । ”

स्रलेखाक रँठ बाधामोहनकेँ छुछन रूमि पडले । छुछन ग जे माष्टिगव पसवन नती आ नतीक हड, केना
हनाहाव हेते । है एते तँ देखे छिअ जे कलेना-सुमली-सजमनि जकाँ हडए, सजमनिसँ भनहि होष्ट
हूअ हूदा करैना-सुमलीक तँ संग-तुबिया अछिये । तवकारी माणन जा सकैए । तवकारीकेँ केना हन



मानि जेरै फड तँ तबकाबियो फड ए द्वादा नगले मल पनष्ट महकावी नग पडूट गेलै । ओकब तबक रीखा जते तीत होगए ओते तँ करैलोक ल होग छै । कर्न बाजा भोज कर्न तजुखा तेनी । करैलोक ग्वादा-कम भनहि तीत होड द्वादा ओगर्न पानन-पोसन रीखा कर्न तीत होग छै । दुनुमे अकाम-पतानक अश्वत होग छै । गोन-गोन, हरिखब-हरिखब, नान-नान फडक रीट महकावीक रीखा थेरौ-कान थनहोकेँ रौकवा दगए, से केना करैलोक पडतब कबत । उँष्ट जकाँ भनहि देह उँरब-थारब होड, बसो आ ग्वादा तितेस किखए ल होड, गनि-गटि अगल किखए ल सर्जि जाए द्वादा ओहन रीखा तँ दैते अछि जे सर्गी-साथी जकाँ मय्यक भोज्य रनि छेत आरि बहन अछि आ आगुओ छेत बहत ।

थेलौणा दोकाषणब, बग-बगक थेलौणा देख जेँ रँछा ग्वादी नानि दिखए तँ किड काकाक आशीका होगते छै । सरञ्ज सदृश रौड-रौड ी बहितो बाधामोहनकेँ अणष रिटाबक दुगियाँमे रिटडते देख सुलेखाक मयमे भेननि जे भविसक रोड 1-रोड ीक ठेस ल ननि गेलै । रौजनी-

“रौखा, कि कबर, जेतरेँ छुँपी बहत तेतरेँ ठी ल दुगियाँ रँसएरँ । गदुडा केकवा ल होग छै जे गद्दासनक आसनणब रैनी, द्वादा गदुडे भेल थोड होग छै । अली सुथक जोतमे ल एकठा रौणा आरि हरिचन्द्रकेँ बाज-पाष्ट ठकि जेनकनि । अखुका रियतनाम बाज थोड छी जे मानक-मान, दमीकक-दमीक बगडते बहत । कद्द जे जग बाजाकेँ एतरो दया ले जे आमजनक बाजाकेँ अणषा सरार्थमे केना नगा देरै । ”

ओना सुलेखा बाधामोहनक मल रँछाए चहनी द्वादा जिदीयाह गा-रँड जकाँ गाडक द्वादीयेणब बाधामोहनक नजरि अँकन । बाधामोहन रौजन-

“दीदी, अहाँ तँ खीड लकेँ फन कहे छिँ, एते तक मालेमे शिका ले अछि जे फड ले होग छै, द्वादा फड-तँ-फड भेन आ आमोक गाडक फड भेन भनहि कोशी धविकेँ फड कहिँ । जिगगीक नीक फन सभ छै आकि नीक फड कदीयोसँ नहमब छै ? ”

जलिा रौन मल रा जूली फन, परोड गत्यादि कोला नर गाडक सरारि सदृश सब-सबा क२ आगु धरि रँडि जागत तलिा बाधामोहनक प्रश्न आगु रँडन द्वादा ओगिया क२ द्वादीकेँ मोडि सुलेखा रँजनी-

“रौखा, खीड ीक तबमे तीष फाँक होग छै, द्वादा होग छै तीषु रँवारब । उँगबका जे आरबा होग छै ओ ओहन होग छै जे दिठा-दृश देख ल दैत छै । ओकवा हथौना गडातिये देख पड छै । द्वादा जेँ ओकवा कतसँ गोन-गोन कष्टन जाग छै तँ कर्न तीषुमे सँ कियो कहत जे कम छी । ”

कहि सुलेखा मोछ नगनी जे भविसक बाधामोहनक मल उँचष्ट गेन अछि । जारै तक दोसब दिन ले तकाएरँ, तारै नजरि ले घुगते । तँ दोसब दिन तकाएरँ नीक छत । दोहबरेत रँजनी-

“रौखा, मेरो जागक मय नगिटा गेनह । नगागत-खागत मय भैये जयत । हमरँ जयँ किल ? ”

दोसब दिनक सँन । शिष्य प्रफियाक समाप्ति । कालि रिसर्जन छी । भोज-भात आ मसिह्रतिक कार्यक्रम बहत । बाधामोहन आ पी.एन. रौनु गाएक घबक बौड देखेत बहि । मडुडबक



धनधनशांति रूमि पडवनि जे घुबक झकवत अछि । दूनु गोठे गागये घबमे बहथि तखल सुबेन्द्रा
राँवु आ दीनाशांथो राँवु संगे पहुँच रँजना-

“गाएक घबमे अखल किअ छी ? ”

अ गग सुनि पी.एन. राँवुकेँ संकोच ले भेननि । ओना तीनु गोठेक डेवो एकठाँम आ राँवु यो-माडि
एकबगाले, तँए प्रम रँरहाविके छन । पी.एन. राँवु रँजना-

“तीन-चारि दिनसँ एते ब्यसतता रँठि गेन जे अपन जिनगीये छिडि या-रितिया गेन । रूमि पड-ए
जे तीनिये-चारि दिनक रीच तते मच्छुव रँठि गेन जे अरघात कवत । दूदा आगयो तँ आर
करिके सम्य बहिये अछि । कान्हि रूमन जेते । ”

दीनाशांथ राँवु- “कान्हियो कि तबि दिन छुड़ी हएत, भोज-भात आकि षाट-तमाशी देखिनिहार-थेनिहार
ले ले, दूदा रिदांग-समारोह सेहो छी किल ? ”

“हँ से तँ छी । दूदा ओ तँ भोज-भातक पछातिये ले हएत तग रीच तँ सम्य रँटिजे अछि । ”

कनकव हएत-पएव धोंग बाधामोहला आ पी.एनो. राँवु नग पहुँचरे केना आकि ओम्हबसँ सुबेखा चाहे
लल एनी । ठाँउ सभ कियो चह पीरँ नगना । दीनाशांथ राँवु बाधामोहनकेँ कहनिथि-

“कौकूका लात-हकाव दग छी । खेरौ कवरँ आ देखरौ कवरँ । ”

दीनाशांथ राँवु गग तँ चलि देननि, दूदा भोजेत तँ ले छन । भोजेत सुबेन्द्र राँवु दूदा
जलिा घाँपव चेकरौक चानिये लला हँसि जांगए, तलिा रगनये रँसन सुबेन्द्र राँवुकेँ भेननि ।
दीनाशांथ राँवु तँ पठौन ले छेनथि जे मदी हेतनि । अपला दूह खोजए पडतनि, तनहि बाधामोहन
ले रूमि पडेत दूदा दूनु पवानी पी.एन. राँवु तँ छथिये । प्रमिक आंगु अलले पड एरँ नीक ले होग
छे, खेहारी क२ पकडि खडि या मोव मारि पकडि ये लेत आ जौँ पकडि लेत तँ सभ ठेली
माडि देत । बाज-भोज छिँ, जते खएत तगसँ रँसि छिडि खएत । रँजना-

“बाधामोहन समिया बतहारी हेत । ”

जलिा भोज-काजमे पहिले योजना रँलेत पछाति हिमरँ-राँडि होगत । दूदा रँसाव दूनु
दिन चलेत । एक तँ रँसावमे बतक रँटिवावा तखल बतहारीक चट ले । दूदा दोसराक पाहुनकेँ गहो
पुडरँ उचित ले जे केम्हव एने । दूदा जलिा परिवावक छेँ भएकेँ अलको कोहरवक बस्ता खुजले
बहे छे तलिा दीनाशांथ राँवु । जेठ नग जेहले गन्ती तेहले सली । जौँ सली अछि तँ दूदा
मूजौता जौँ गन्ती अछि तँ सुधारि देत । रँजना-

“बाधामोहन, अहाँ पठरौ करे छी । ”

दीनाशांथ राँवुक प्रमसँ बाधामोहन ठमकि गेन । केना कहरँनि जे पवीष्कारेँ अखल जोडि आंगु रँठ ।
देखिँ, आ अखल घबक पाडु । दूदा उतसुक मग रँजना-



“पढ़ा तो छी, आ परिवारक जे दशा छति ओकरा जेँ ले लोकक तँ कते दूर ठलेक क२ छनि जखन तेकर कोणा ठीक ले । तँ किछ करैक रिटाव सेहो छति ।”

बाधामोहनक सह पारि दोहबरीत दीनाराथ राँव पढ़नखि-

“परिवार कतेछाँ छति ?”

“उना कहले तीन गोले छी दूदा... ।”

“दूदा की ?”

“पिता अतिम अरस्थामे छथि, अर-तर करै छथि, कखन छथि कखन ले तेकर कोणा ठीक ले ।”

“कते उमेर हेतनि ?”

“सेहो नीक जकाँ ले बुझे छी । मुड़-मुड़ शरीर भेन छनि । तगसँ तँ अस्मीसँ उपलेक कहबनि, दूदा मांगक जे गतिशीलता देखे छी तगसँ बुझि पड़ैए जे घबक टिनरालेक खुँटा छुँट गेल । आंग कवी कि काहि, कबए तँ हमले पड़त । सह सभ मल लौड-हाँडा देल छति । तँ गाए पौमिक रिटाव करै छी ।”

आँखि गंभीरा सुलेन्द्र राँवक देखिते दीनाराथ राँव छुप भ२ गेला । सुलेन्द्र राँव पढ़नखि-

“बाधामोहन, रिटाव तँ नीक छति, दूदा किछ प्रेमक उत्तर बुझबै जकबी छति । तले सेहोसे एला । भोज-भात खेनिहार सभकेँ खाए-दिओ । दूदा, कहब जे जखनि अपन मल काज करैले ले माँ जेँ, ताँधि बद्ध । जेँ जीरणमे एकेछाँ काजक लोक भेटे जेँ तँ जकब ओग जिगगीकेँ सार्थक मानन जेते ।”

सुलेन्द्र राँवक दूह खूजन देख सुलेखो अपन राँतकेँ बाखर उँटित बुझि राजनी-

“दीना राँव, जखन बाधामोहनसँ गप भेन तँ कहक जे हमरा गामसँ अहाँक गाम नीक छति । पदसँ रँथसँ लेहव गेलाँ ले केलाँहेँ, अँठावह रँथक अरस्थामे जोडल बनी तँ जेँ तँ तब पड़ि गेल छति । तँ सेहो कनी कखना दूनु भाए-रँथक रीट कहि देब ।”

सुलेखक प्रेमसँ सुलेन्द्र राँव घरदूना ले दूदा दिनि तबिक देहक थकाण, तग रीट काहि रिदांग समारोह सेहो छी एहेन ले हूँए जे पड़फड़मे प्राणसभ साहेरक जेकेँ छिनिगन सहएरक डानीमे छनि जखनि आ छिनिगन साहेरक प्राणसभ सहएरमे, तँ मल रौमिन, जे केशा एहेन स्वांग भेटे जेँ जे जेते क२ छति से से तँ छनि जेँ । दूदा परिवारो तँ परिवारो छी । परिवारकेँ टिन बखल रीना एला छन टिन भेटेँ कँटन होग छे । दीना राँवकेँ समारोहित करैत सुलेन्द्र राँव रँजना-

“दीना राँव, एन कक जे एकेछाँ उत्तरमे दूनु प्रेम आँरि जेँ ।”



हूँ हकाबी भलेत दीनाथाथ राँरु रँजना-

“हूँ-हूँ रँरुँ याँ-रँरुँ याँ, हनुमानजी जकाँ पहाड़ छति आओत अगन-अगन सब तकि जेरँ । हूँदा
भाय-सहाएँ एकठाँ राँत गुँडरँ हमारो बहि गेन अछि ? ”

सुलेन्द्र राँरु- “कथी ओहो बाथिये दिउ ? ”

दीनाथाथ राँरु- “बाधामोहन, एकठाँ राँत कछु जे परिवारमे राँहबक जोठाँ दुध अरैए आकि घबक नाठे
राँहब जागए । ”

दीनाथाथ राँरुक प्रश्न सुनि पी.एन. राँरुकें ले बहन गेननि रँजना-

“दीनु राँरु कि कहरँ, रिसबि गेलौँ कमिन्मनी-बामन्मनी । डिंडीक माता जपि-जपि भायाक ज्ञान रँटरेँ
डी । हूँदा फेरवाँ तँ किछु डी । ”

एक संग अलको प्रश्न उठैत देख सुलेन्द्र राँरु रिचावनि जे नीक रूपत सब प्रश्नकें रँहठारि
काहि जेन बाथि नी आ किछु मलारिनाद संग रँसाव उसाव क२ नी । टोअरिणाँ हूँस्की दैत दीनाथाथ
राँरुकें गुँडनथिन-

“अँए हो दीनु, उँडुअँल रँव किअँए हँस२ नगन बहन ? ”

ठँठके राँत, रिसलेयोक तँ बहियेँ कहन जा सकैए । हूँदा एकठाँ जराँरदेहक प्रश्न डी । कि
कहरँनि । हम सब कहूँना भेलौँ तँ घबरारिये भेलौँ किल, किअँए ले थोनि क२ सब गप कवरँ ।
हूँस्कीक जराँरमे ठहाका दैत दीनाथाथ राँरु रँजना-

“भाय, नारी जकाँ डिंडाँ आएन ले, हूँदा डिंडाँ आगरना राँत तँ बहरँ करै ले । ”

दुनु गोठेक रीचक राँतमे सुलेखा नाडनि नाडनि-

“उँडुअँल जखन हँसा गेन, तखन राँकिये कथी बहन ? ”

सुलेखाक प्रश्न सुलेन्द्र राँरु थकमकेना । थकमकागत देख पी.एन. राँरु सम्हारैत रँजना-

“राँत भेन किछु ले आ अलान-रिसलान हूँअँ नगन । ”

अगन भाँज रूमि दीनाथाथ राँरु रँजना-

“भेन अँ बहे जे चाबि गोठेकें चबिहूँनी दीप जेसि उँडुअँल कबक बहे । एकठाँ मोमरती ले ले जे
तीन गोठे डँठे गकडू आ एक गोठे सनाग जेसि नगाँ । चबिहूँनी दीपमे तँ रँठेन टाक गोठेक ।
सबकेँ दीप जवाएँ डुनहि । पहिन गोठे जखन सनाग खबडाँ एकठाँ दीप जेसि देनथिन तखन
दोसब-तेसबकेँ सनाग खबडाँक कोन प्रयोजन । सनाग काठीकेँ तँ दीपमे जेसँ असाण होअँते ।
से ले केननि, केननि अँ जे तेसब गोठे जे बहथि ओ बाथिये बाथि ले काँठ सनाग खबडाँ नगना-



आकि ममन्ना उँडा क२ अर्तापव पडा गेननि तेहेन अर्ता जे ओतरेमे दगा गेननि । सएह हँसी नागन बरह । अरुँ तँ मटेपव बरिँ । अहाँ ले देखिजिँ । ”

दीनाथा रौरूक रातसँ अनेन्द्र रौरूकेँ दूख ले भेननि । रँजना-

“तूँ डुप्री डह, हम रानहन डी, तँए किड... । ”

“अरुँ जे होड, लोका-उगवन रसु-जात हएत ओ भोजो हएत आ बाधामोहनकेँ मोनाक दर्शन सेनो कवा देरनि । अखन जाए दिख, दू घँटी दूनु कातक टेकिंग रेरस्था करेमे आगत । तहमे तीन-तीन टेकिंगमे टोवकठ बस्ता बरिँ जेग छै । ”

ई बरिँपव अणम मतर ggajendra@videha.com पव पठाँ ।

रँडा अरुँकनि द्वावा सवनीय श्लोक

१. प्रातः काल अरुँकनि (सूर्योदयक एक घँटी पहिल) सरप्रथम अणम दूनु हाथ देखरौक टाली, आ ङी श्लोक रँजरौक टाली ।

कवाग्रे रसते नमः कवमया सवस्रती ।

कवमुने हितो अरुँ प्रभाते कवदर्शिम ॥

कवक आगाँ नमः रँसत डधि, कवक मध्यामे सवस्रती, कवक मुनमे अरुँ हित डधि । भोवमे तहि द्वावे कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. संध्या काल दीप जेसरौक काल-

दीपमुने हितो अरुँ दीपमया जगार्दनः ।

दीपाग्रे शरुँवः प्राकतः संध्याज्यातिर्गमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे अरुँ, दीपक मध्याभागे जगार्दन (रिषु) आ २ दीपक अग्र भागमे शरुँव हित डधि । हे संध्याज्याति ! अहाँकेँ नमः ।

३. अतरीक काल-

वार्ग अर्द हनुमं रैणतेर्य बृकोदवम् ।



शेयल यः सारेल्लिहं दुःस्वप्नस्तु नष्टति ॥

जे सभ दिन स्वतंत्रासँ पहिले बाम, फुमारबन्नामी, हनुमान्, गकड आरु भूमिक सारवा कलैत छथि, हुनकव दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छहि ।

४. नहरौक समय-

गर्भ च यद्गले टेर गौदारवि सब्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जलेऽसिन् सल्लिर्षि रुक ॥

हे गर्गा, यद्गला, गौदारवी, सब्रती, नर्मदा, सिङ्गु आरु कारेवी धार । एहि जनमे अरण सल्लिष्या दिश्र ।

३. उतुव गसद्गदश हिमाद्रेश्चर दक्षिणम् ।

रथं तत् भावतं नाम भावती यत्र सप्ततिः ॥

सद्गदक उतुवमे आरु हिमाद्रक दक्षिणमे भावत अछि आरु उतुका सप्तति भावती कहलैत छथि ।

७. अहया द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।

पथकं वा सारेल्लिहं महापातकणिकम् ॥

जे सभ दिन अहया, द्रौपदी, सीता, तारा आरु मन्दोदरी, एहि पाँच सङ्गी-सत्रीक सारवा कलैत छथि, हुनकव सभ पाप नष्ट भऽ जागत छहि ।

१. अग्निथोमा रैजिर्यासो हनुमांश्च रितीयाः ।

प्रपः पवश्वामश्च सप्तते चिबङ्गीरिणः ॥

अग्निथोमा, रैजि, र्यास, हनुमान्, रितीया, प्रपाचार्य आरु पवश्वाम- ङ्र सात ठाँ चिबङ्गीरी कहलैत छथि ।

+साते भरत सुथीता देरी शिखर रामिणी

उत्रेण तपसा अद्रो यया पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः सार्य सतामन्त्रु प्रसादान्तुशु धूर्जटेः

जानरीकेणजेथेर यशुभि शिशिणः कजा ॥

९. रौजोऽहं जगदामन्द न ये रौजा सब्रती ।

अशुर्णे पचमे रथे र्णियासि जगत्त्रयम् ॥

१०. दुराक्षित मरेशुनन यजुर्देद अथाय २२, मत्रि २२)



आ अरुहिवन्धु प्रजापतिवन्दुभिः । निभोकता देवताः । सुवाङ्कृतिवन्दुः । यद्वज्रः सुवः ॥

आ अरुहन् अरुहणो अरुहरत्नी ज्ञायतामा वाङ्मये वाङ्मयः सुवे२ गयरा२ तिर्याधी महावधो ज्ञायता दोग्धी
पुत्रोर्तोडनड्वराणां सन्धिः पुत्रविर्योरा जिष्णु वपेयाः सन्धेयो हराण्य यजमान्य रीरो ज्ञायता निकामे-
निकामे नः पुत्र्या रयितु फनरवा न२ उषयः पछन्ता योषोक्तमो नः कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मन्त्रावथाः । शिव्या रूचिनामो२त्तु मित्राणां दयान्तु ।

ॐ दीर्घाशुभर । ॐ सौभाग्यरती भव ।

हे भगवान् । अणन देमिमे सुयोग्या आ सरित्तु रिद्यार्था उण्ण होथि, आ सुवुके नशि कएनिहाव सैनिक
उण्ण होथि । अणन देमिक गाय खुँ दुध दय रानी, रैवद भाव रहण कवएमे सक्कम होथि आ योड ।
ह्रवित कर्पे दोगय रैना होए । स्त्रीगण नगवक लहन्न कवरामे सक्कम होथि आ हरक सन्धेमे उज्जपूर्ण
भाषण देरयरना आ लहन्न देरामे सक्कम होथि । अणन देमिमे जखन आरुणिक होय रया होए आ
उषधिक-रुष्टी सरिद पविपक्र होगत बहए । एरि एमे सन्धे तवहे हमरा सन्धक कणाण होए । शिवुक
रूचिक नशि होए आ मित्रक उदय होए ॥

मन्त्रार्थके कोन रत्तुक गडा कवरोक चाही तकर रनि एहि मन्त्रेमे कएन गेन अन्ति ।

एहिमे राटकवृत्तापमानड्काव अन्ति ।

अण्य-
अरुहन् - रिद्या आदि ग्राम पविपूर्ण अरुह
वाङ्मये - देमिमे
अरुहरत्नी-अरुह रिद्याक तेजस हकत
आ ज्ञायता- उण्ण होए
वाङ्मयः - वाङ्मा
सुवे२ रिणा डव रैना
गयरा- राण चेरामे निष्ण
तिर्याधी-शिवुके ताका दय रैना
महावधो-पौघ वथ रैना रीव
दोग्धी-कामना(दुध पूर्ण कवए रानी)



पेण्वर्रोतलड्रानाशुः पेण्व-लौ रा राणी र्रोतलड्र- पौघ रँवद षाशुः -आशुः -द्ववित

सष्टिः-योज् १

पुवञ्चिःयोरा- पुवञ्चि- रारलवकेँ धावण कवण रौनी योरा-द्वी

जिःशु-शेवुकेँ जीतए रँना

वपेःश्याः-वथ पव शिव

सुभेयो-उत्तम सभामे

हराशु-हरा जेहण

यज्जमाणशु-वाज्जाक वाज्जामे

रीवो-शेवुकेँ पवाजित कवणरँना

निकामे-निकामे-निशचयशकतु कार्यमे

षः-हमव सभक

पुर्ज्या-मेघ

रयतु-रया होए

हनरवा-उत्तम हन रँना

उययः-उययिः

पट्टुता- पाकए

योःशुयो-अनशु नशु कवेरौक हेतु कएन गेन योःगक वञ्चा

षः'-हमरा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

प्रिथिथक अशुवाद- हे अँरुण, हमव वाज्जामे अँरुण नीक धार्मिक रिद्या रँना, वाज्ज-रीव,तीवँदाज, दुध दए रौनी गाय, दौगय रँना जन्तु, उँगुमी षारी होथि । पाँरुण आरशुकता पडना पव रया देथि, हन देव रँना गाड पाकए, हम सभ सँगति अँरुणित/सवञ्चित कवी ।



बिदेह नूतन अंक भाषापाक बचनावेखन-

गहिनेकोय-मैथिली- / मैथिलीकोय-गहिने- प्रोजेक्टके आगु रैठ छुं, अपन स्वमार आ योगदान ज्ञ-
मेन द्वारा ggaj_endra@videha.com पब पठाउं ।

१.भावत आ लपावक मैथिली भाषा-ऐकानिक लोकनि द्वारा रैनाउव मणक गेवी आ २.मैथिलीमे भाषा
सम्पादन पाठ्यक्रम

१.लपाव आ भावतक मैथिली भाषा-ऐकानिक लोकनि द्वारा रैनाउव मणक गेवी

१.१. लपावक मैथिली भाषा ऐकानिक लोकनि द्वारा रैनाउव मणक उँटाका आ लेखन गेवी

(भाषाशास्त्री डा. बाभारताव यादवक धाकाके पूर्ण कर्णसँ सभ न२ निर्धारित)

मैथिलीमे उँटाका तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षराक: पञ्चमाक्षरवास्तुआत ७, ए३, ण, न एरि म अरैत अछि । संकृत भाषाक अक्षराक
निर्देशक अक्षरमे जाहि रक्षक अक्षर बहेत अछि ओही रक्षक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अर्ध (क रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ७ आएन अछि ।)

पञ्च (च रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ए३ आएन अछि ।)

खण्ड (ठ रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ण आएन अछि ।)

सञ्चि (त रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे न आएन अछि ।)

खञ्च (प रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे म आएन अछि ।)

उँपर्याङ रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रैदनामे अरिकाशि जगहपव अक्षराक
प्रयोग देखन जागछ । जेना- अक, पच, खड, सधि, खंड आदि । र्याकवणरिद पण्डित गोरिन्द नाक
कहरि छनि जे करञ्च, चरञ्च आ ठरञ्चसँ पूर्ण अक्षराक लिखन जाए तथा तरञ्च आ परञ्चसँ पूर्ण पञ्चमाक्षर
लिखन जाए । जेना- अक, चकन, अँडा, अक्षु तथा कम्पण । इन्द हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक
एहि रीतके नहि मालेत छथि । ओ लोकनि अक्षु आ कम्पणक जगहपव सेहो अत आ कण्ठ लिखेत
देखन जागत छथि ।

नरीण पञ्चति किछु स्वरिधाजनक अरिष्ट छैक । कियेक तँ एहिमे समान आ स्थानक रैचत होगत छैक ।
इन्द कतोक रैव हनुलेखन रा इन्दनामे अक्षराक छोट सन रीन्दु स्पष्ट नहि भेनासँ अर्थक अर्थ होगत
सेहो देखन जागत अछि । अक्षराक प्रयोगमे उँटाका-दोषक सम्भारणा सेहो ततरै देखन जागत
अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परञ्च धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवरि उँटित अछि । यसँ न२ क२ त्र
धरि अक्षरक सभ अक्षराक प्रयोग कवरिमे कतहु कोना बिराद नहि देखन जागछ ।

२.ठ आ ढ : ठक उँटाका “व ह”जकाँ होगत अछि । अतः जतः “व ह”क उँटाका हो ओतः मव
ढ लिखन जाए । आन ठाम खाली ढ लिखन जेवरीक छली । जेना-



ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेउआ, ठम्, ठेवी, ठाकनि, ठाँ आदि ।

ठ = गढ़ 1ग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रूँठरँ, माँठ, गाठ, वीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपह्रास शब्द, सभकेँ देखनासँ ज्ञ स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरुवाते ठ आ मया तथा अन्तमे ठ अरैत अछि । गह मियम ड आ डक सम्बन्ध सेहो नागु होगत अछि ।

३.र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उच्चारण रँ कएन जागत अछि, हुदा ओकरा रँ कएने नहि लिखन जाएरौक चाली । जेना- उच्चारण : रँण्णथ, रँिया, रँर, देरँता, रँिष्, रँि, रँन्दना आदि । एहि सभक स्थानपर फ्रान्से: रँण्णथ, रँिया, रँर, देरता, रँिष्, रँि, रँन्दना लिखरौक चाली । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओहन आदि ।

४.य आ ज : कतहू-कतहू “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत देखन जागत अछि, हुदा ओकरा ज नहि लिखरौक चाली । उच्चारणमे यर, जदि, जङ्गना, जूग, जारँत, जोगी, जदू, जम आदि कहन जाएरौना शब्द, सभकेँ फ्रान्से: यर, यदि, यङ्गना, यग, यारत, योगी, यदू, यम लिखरौक चाली ।

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अछि ।

प्राचीन रतनी- कएन, जाए, हेएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नवीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शब्दक शुरुवाते ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एणा, एकव, एहन आदि । एहि शब्द, सभक स्थानपर यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाली । यद्यपि मैथिलीभाषी थार सहित किछु जातिमे शब्दक आबन्धमे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्बन्धमे प्राचीन पञ्चतक अनुभव कवरँ उपहास मानि एहि पञ्चकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोना सहजता आ दृक्कताक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसधारणक उच्चारण-मैथिली यक अपेक्षा एसँ रँसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएरँ आदि कतिपय शब्दकेँ केन, हेरँ आदि कएने कतहू-कतहू लिखन जाएरँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रँसी स्वीकार प्रमाणीत करैत अछि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पत्रपत्रमे कोना रीतपर रँन दैत कान शब्दक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अणनहू, ओकवहू, तकोनहि, टोष्टहि, आनहू आदि । हुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकाव एरँ हूक स्थानपर ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अणना, तकोन, टोष्ट, आना आदि ।

१.य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकणितः यक उच्चारण थ होगत अछि । जेना- यडल (खडयल), योडनी (खोडनी), यरँकोण (खरँकोण), बृषेण (बृथेण), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।



+ **ध्रुमि-लोग** : निम्नलिखित अरुमाये शिद्धसँ ध्रुमि-लोग भऽ जागत अछि:

(क) फियाव्रयी प्रत्य अयमे य रा ए वृष्टु भऽ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उँचावऱ दीर्घ भऽ जागत अछि । ओकव आगाँ लोप-सूचक चिह्न रा रिकारी (/ २) नगाउन जागछ । जेना-

पुर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उँठए (उँठय) पडतोक ।

अपुर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उँठ पडतोक ।

पठऽ गेनाह, कऽ जेन, उँठऽ पडतोक ।

(ख) पुरिकालिक प्रत आय (आए) प्रत्यमे य (ए) वृष्टु भऽ जागछ, ऋदा लोप-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पुर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाए (ए) देरँ, नहाए (य) अएनाह ।

अपुर्ण कप : था गेन, पठा देरँ, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्ये गक उँचावऱ फियापद, सँज्ञा, ओ विशेषण तीनुमे वृष्टु भऽ जागत अछि । जेना-

पुर्ण कप : दोसबि यानिनि चलि गेलि ।

अपुर्ण कप : दोसब यानिन चलि गेल ।

(घ) रतमान प्रदन्तुक अन्तिम त वृष्टु भऽ जागत अछि । जेना-

पुर्ण कप : पठैत अछि, रँजैत अछि, गरैत अछि ।

अपुर्ण कप : पठै अछि, रँजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) फियापदक अरमाण गक, उँक, एँक तथा हीकमे वृष्टु भऽ जागत अछि । जेना-

पुर्ण कप: छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरिँतेक, होगक ।

अपुर्ण कप : छियो, छिये, छली, छो, छै, अरिँते, होग ।

(च) फियापदीय प्रत्ये ह, हू तथा हकावक लोप भऽ जागछ । जेना-

पुर्ण कप : छहि, कहनहि, कहनहूँ, गेनह, नहि ।

अपुर्ण कप : छनि, कहनि, कहनौँ, गेनऽ, नग, नप्रिऱ, ले ।

९. **ध्रुमि स्थानानुवऱ** : कोला-कोला सुव-ध्रुमि अणवा जगहसँ हष्टि कऽ दोसब ठाम चलि जागत अछि । खाम कऽ दान्न ग आ उँक सङ्गमे ग रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवऱ भऽ गेन शिद्धक मया रा अन्तमे जँ दान्न ग रा उँ आरँए तँ ओकव ध्रुमि स्थानानुवऱित भऽ एक अरुव आगाँ आरिँ जागत अछि । जेना-
मिनि (मिण), पाणि (पाण), दाणि (दाण), माष्टि (मागष्ट), काड्ड (काडुड), मासु (माडुस) आदि । ऋदा तसेम शिद्ध, सभमे ग निखम नागु नहि होगत अछि । जेना- बयिँकेँ वगय आ सुवऱिँकेँ सुवऱुँस नहि कहन जा सकैत अछि ।



१०. हनसु ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनसु ()क आरंभिकता नहि होगत अछि । कावण जे शिद्ध अस्तमे अ उँटावण नहि होगत अछि । हनसु संस्कृत भाषामँ जहिनक तहिन मैथिलीमे आएन (तसेम) शिद्ध सभमे हनसु प्रयोग कएन जागत अछि । एहि शोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिद्धकेँ मैथिली भाषा संस्कृत निश्चय अस्मभव हनसुरिहीन बाखन गेन अछि । हनसु ब्याकवण संस्कृत प्रयोजनक लेन अस्वरभूक स्वरणव कतहू-कतहू हनसु देन गेन अछि । प्रसूत शोथीमे मैथिली लेखक प्राचीन आ नरीन दुनु शैलीक सवन आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेष्टि कऽ रर्षि-रिग्यास कएन गेन अछि । स्वर आ समयमे रँटतक सभसँ हनु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरँरना हिसारँ रर्षि-रिग्यास गिनाओन गेन अछि । रतिमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माधुमँ मैथिलीक त्रान जेरँ पडि बहन परिश्रेष्ममे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक युन विशेषता सभ कृषि नहि होगक, ताहू दिस लेखक-मंडन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादरक कहँ छनि जे सवनताक अस्मकालमे एहन अस्वा किम्लू ले आरँ देरँक टाली जे भाषाक विशेषता छँहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादरक धाकाकेँ पूर्ण कर्पमँ सङ्ग नऽ निर्धारित)

१.२. मैथिली अकार्य, ष्टना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिद्ध, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालमँ आग धरि जाहि रँटनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः तहि रँटनीमे लिखन जाय- उँटावणार्थ-

ब्राह्म

एखन

ठाम

जकव, तकव

तनिकव

अछि

अब्राह्म

अखन, अखनि, एखन, अखनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकव, तेकव

तिनकव । (रैकपिक कर्पेँ ब्राह्म)

अँड, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्प रैकपिकतया अर्पणाओन जाय: भऽ गेन, भय गेन वा भए गेन । जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जए बहन अछि । कव गेनाह, वा कवय गेनाह वा कवए गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखन जाय सकैत अछि यथा कहनि वा कहनिह ।

४. 'ँ' तथा 'ँ' ततय लिखन जाय जत संप्रतः 'अँ' तथा 'अँ' सदृशी उँटावण गँह हो । यथा- देथेत, छलेक, लोखा, छोक गवादि ।



३. मैथिलीक निम्नलिखित शैल, एहि कषे प्रयुक्त होयत: जेह, सेह, गएह, ओह, लेह तथा देह ।

७. ह्रस्व अकारांत शैलमे 'ग' के ब्रुण कवरि सामान्यत: अग्राह यिक । यथा- ग्राह देधि आरिह, मानिनि ङेनि (मन्वया यात्रमे) ।

१. स्वतंत्र क्रम 'ए' रा 'य' प्राटिण मैथिलीक उह्वरणी आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आवृत्तिक प्रयोगमे रैकपिक कषे 'ए' रा 'य' लिखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अएनाह, जाय रा जाए गवदि ।

५. उटावणमे दु स्वक रीट जे 'य' धुनि स्वत: आरि जागत अछि तकरा लेखमे स्थान रैकपिक कषे देन जाय । यथा- धीखा, अठेखा, रिखाह, रा धीया, अठेया, रिगाह ।

९. साधुनामिक स्वतंत्र स्वक स्थान यथार्थर 'अ' लिखन जाय रा साधुनामिक स्व । यथा:- मैअंग, कनिअंग, किवतनिअंग रा मैअँ, कनिअँ, किवतनिअँ ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कष ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । मे मे अणुस्वाव सरिथा लज्जा यिक । 'क' क रैकपिक कष 'केव' बाखन जा सकैत अछि ।

११. पुरिकातिक फियापदक रौद 'क' रा 'कए' अरय रैकपिक कषे नगाउन जा सकैत अछि । यथा:- देधि क' रा देधि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गवदि लिखन जाय ।

१३. अहँ 'ष' ओ अहँ 'श' क रँदना अणुस्वाव बहि लिखन जाय, किंतु भागाक सुरिधारि अहँ 'ँ', 'अं', तथा 'ण' क रँदना अणुस्वारो लिखन जा सकैत अछि । यथा:- अहँ, रा अक, अहन रा अचन, कण रा कँ ।

१४. हनंत छि निअगत: नगाउन जाय, किंतु रिभक्तिक सँग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१३. सत एकन कावक छि शैलमे सँ क लिखन जाय, हँ क बहि, सङ्ग रिभक्तिक हेतु हवाक लिखन जाय, यथा घब पवक ।

१७. अणुनामिककेँ चन्द्ररिन्दू द्वावा रङ्ग कयन जाय । पर्वत द्वावा सुरिधारि हि समान जष्टन मात्रापर अणुस्वावक प्रयोग चन्द्ररिन्दूक रँदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव रँदना हि ।

११. पूर्ण रिवाग पामीसँ (।) सूचित कयन जाय ।

१५. समस्त पद सँ क लिखन जाय, रा हांगफेणसँ जेडि क , हँ क बहि ।

१९. लिख तथा दिख शैलमे रिकारी (२) बहि नगाउन जाय ।

२०. अक देरणागवी कषमे बाखन जाय ।

२५. किंतु धुनिक लेव नरीण छि रँदनाउन जाय । जा अ बहि रँदना अछि तँरत एहि दुनु धुनिक रँदना



पूरिबत् अथ/ आया अथ/ आथ/ आउ/ अउ विखव जाय । आकि ए रा ओ सँ बउ कयव जाय ।

ह.।- लोबिन्द सा ११/५/१७ लोकाशु शंकर ११/५/१७ सुरेन्द्र सा सुमन ११/०५/१७

२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठक्रम

२.१. उच्चारण निर्देशः (बोल्ड कयव कग ब्राह्म):-

दन्तु ण क उच्चारणमे दाँतमे जीह सँ- जेना रौजू नाय , ऋदा ण क उच्चारणमे जीह मुँहमे सँ- (ले सँ- ए तँ उच्चारण दाय अछि)- जेना रौजू गणेशि । तानरा नेमे जीह ताबसँ , यमे मुँहसँ आ दन्तु स्यमे दाँतसँ सँ- । निगाँ, सत आ मोया रौजि कइ देखु । मैथिलीमे ष केँ ऐदिक संस्कृत जकाँ अ सेना उच्चारित कयव जागत अछि, जेना रयाँ, दाय । य अलको स्याणव ज जकाँ उच्चारित होगत अछि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशि संज्ञा) आ

पइसे उच्चारित होगत अछि । मैथिलीमे र क उच्चारण र्, ने क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेना होगत अछि ।

ओहिना दान्न ग ऐशिकान मैथिलीमे पहिल रौजन जागत अछि काका देरनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे दान्न ग अक्षरक पहिल लिखला जागत आ रौजला जयराँक चाली । काका जे हिन्दीमे एकव दायपूर्ण उच्चारण होगत अछि (लिखत तँ पहिल जागत अछि ऋदा रौजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक दायक काका हम सत ओकव उच्चारण दायपूर्ण ठगसँ कइ बहन छी ।

अछि- अ ग ड **अँड (उच्चारण)**

छथि- छ ग थ **छैथ (उच्चारण)**

गहूँ- ग हूँ ग ट **(उच्चारण)**

आरौ अ आ ग ज ए अँ ओ उ अँ अः म अँ सत लेन माना सेना अछि, ऋदा अँमे ज अँ ओ उ अँ अः म केँ संज्ञाक्षर कयमे गत कयमे प्रयुक्त आ उच्चारित कयव जागत अछि । जेना म केँ वी कयमे उच्चारित करव । आ देखियो- अँ लेन देखिओ क प्रयोग अघटित । ऋदा देखिअँ लेन देखियो अघटित । क सँ ह धवि अ समितित लेनसँ क सँ ह रौलेत अछि, ऋदा उच्चारण कान हनुतु हाउ गेहूँक अन्तु उच्चारणक प्रवृत्ति रौठन अछि, ऋदा हम जखन मलाजमे ज अन्तुमे रौजेत छी, तखना थकका लोककेँ रौजेत स्यनरहि- मलाज, राउरमे ओ अ हाउ ज = ज रौजे छथि ।

हयव त अछि ज आ ए क संज्ञा ऋदा गत उच्चारण होगत अछि- गा । ओहिना अछि क आ य क संज्ञा ऋदा उच्चारण होगत अछि छ । हयव न् आ व क संज्ञा अछि ली (जेना ऐशिक) आ स आ व क संज्ञा अछि स (जेना हिन्दी) । ए लेन त+व ।

उच्चारणक आँडियो हागत विदेह आँकगल <http://www.videha.co.in/> गव उँगन अछि । हयव केँ / सँ / पव पूरि अक्षरसँ सँ कइ लिखु ऋदा तँ / कइ ली कइ । अँमे सँ मे पहिल सँ कइ लिखु आ रौदरना ली कइ । अकक रौद थी लिखु सँ कइ ऋदा अथ रौग थी लिखु ली कइ जेना

तलेठी ऋदा सत थी । हयव उअ य सातम लिखु- छथम सातम ले । यवरीयमे रौवा ऋदा यवरीयमे रौवा प्रयुक्त कक ।

बहए-

बहूँ ऋदा सकेँ (उच्चारण सकेँ-ए) ।



ऋदा कथला काज बरुए आ बहे ये अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कन्ना जगहमे पाकिंग कबरीक अन्नास बहे ओकरा । गूढनागव गता जागव जे दुनदुन नामा अ डाागरव कगष्ट बसक पाकिंगमे काज कबेत बरुए ।

डले, डकए ये सेहो अ तबहक भेव । डनए क उँचावण डन-ए सेहो ।

सँयोगल- (उँचावण सँजोगल)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे ले कक , गद्यमे क२ सके छी ।)

क (जेना बायक)

बायक आ सँग (उँचावण बाय के / बाय क२ सेहो)

सँ- स२ (उँचावण)

चन्द्रबिन्दु आ अन्नबाब- अन्नबाबमे कठ धरि प्रयोग होगत अछि ऋदा चन्द्रबिन्दुमे ले । चन्द्रबिन्दुमे कलक एकावक सेहो उँचावण होगत अछि- जेना बायसँ- (उँचावण बाय स२) बायकेँ- (उँचावण बाय क२/ बाय के सेहो) ।

कै जेना बायकेँ भेव हिन्दीक को (बाय को)- बाय को= बायकेँ

क जेना बायक भेव हिन्दीक का (बाय का) बाय का= बायक

क२ जेना जा क२ भेव हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेव हिन्दीक से (बाय से) बाय से= बायसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते टाक शेट् सँरहक प्रयोग अरुद्धित ।

के दोसर अर्थे प्रयाङ्ग भ२ सकेए- जेना, के कहनक ? रिभङ्गि “क”क रँदना एकव प्रयोग अरुद्धित ।

नगि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ अ सभक उँचावण आ लेखन - ले

ओरु क रँदनामे रु जेना महुरूप (महोरुप ले) जतए अर्थ रँदनि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक सँग्राहक प्रयोग उँचित । सम्पति- उँचावण स अ ग त (सम्पति ले- काका सही उँचावण आसागीसँ सञ्चर ले) । ऋदा सँरुतम (सँरुतम ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

शौद्धि/ शौद्धि लेन/ शौद्धि लेन



पोढिअ/ पोढ्य/ (अर्ध परिवर्तन) पोढ्य/ पोढि

उ लोकनि (हठी कर, उ ये रिक्कावी ले)

उअ/ उहि

उहिय/

उहि लय/ उली वर

ऊअरौं/ ऐसरौं

गँचअरौं

देथियेरक/ (देथिओक ले- तहिना अ ये दान्न आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अघटित)

झकाँ / जेकाँ

तँग/ तौं

हेअत / हअत

नमिअ/ नहि/ नँग/ नगँ/ ले

सौंसै/ सौंसे

रँच /

रँची (सोबरअव)

गाए (गांग बहि), रुदा गांगक दुब (गाएक दुब ले।)

बहलौं/ गहियतेँ

हमसि/ असी

सरँ - सभ

सरँरक - सभरक

धवि - तक

गग- रौत

रूसरँ - समयसरँ

रूसलौं/ समयलौं/ रूसलहँ - समयलहँ

हमराँ अँव - हम सभ

आकि- आ कि

सकेड/ कलेड (गद्यमे प्रयोगक आरंभकता ले)



लोग/ लोनि

जाग (जानि ले, जेना देन जाग) क्रम जागि-रूमि (अर्थ परिवर्तन)

गर्भ/ जाग

आँ/ जाँ/ आँ/ जाँ

मे, केँ, सँ, गव (मिदिसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (मिदिसँ सँ क२) क्रम दूरी रा रैसी विभक्ति संग
बहनागव पहिल विभक्ति ठाकेँ सँ। जेना एमे सँ ।

एकरी , दूरी (क्रम क२ थी)

रिक्वायि प्रयोग मिदिसँ अन्तमे, रीटमे अन्वयक कर्षे ले । आकावाञ्च आ अन्तमे अ क रौद रिक्वायि
प्रयोग ले (जेना दिअ

, आ दिअ , आ, आ ले)

अप्राप्तीयक प्रयोग रिक्वायि रौदनामे कवरि अन्वयित आ मात्र शक्यतक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)-
ओगा रिक्वायि सङ्कृत क२ अन्वय कलन जागत अछि आ रतनी आ उचावा दूरी ठाम एकव लोप बहेत
अछि/ बहि सकेत अछि (उचावनामे लोप बहिते अछि) । क्रम अप्राप्तीयक सेहो अन्वयमे गमेसिर
केसमे लोगत अछि आ हरेटमे मिदिसँ जतए एकव प्रयोग लोगत अछि जेना *raison d'etre*
एतए सेहो एकव उचावना बेजेस डेठव लोगत अछि, माले अप्राप्तीयक अन्वयमे ले दैत अछि रवण
जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिक्वायि रौदना देनाग तकनीकी कर्षे सेहो अन्वयित) ।

अगमे, एहिमे/ एमे

जागमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अथन

केँ (के बहि) मे (अन्वय बहित)

त२

मे

द२

तँ (त२, त ले)

सँ (स२ स ले)

गाठ तव

गाठ वग

सॉस खन

जो (जो go, कले जो do)



547X VIDEHA

ते/तथ जेना- ते दूखारे/ तगमे/ तगले

जे/जथ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगले

ए/अथ जेना- ए कावण/ असँ/ अगले/ ऋदा एकव एकठी थाम अयोग- नावति कतेक दिनसँ कहैत बहैत अग

ले/वथ जेना लेसँ/ नगले/ ले दूखारे

नहँ/ लो

गे/गो/ गवँ/ गेनहँ/ गेनहँ/ गेन

जथ/ जाहि/ जे

जहिठाम/ जाहिठाम/ जगठाम/ जेठाम

एहि/ अहि

अग (बोझक अतमे ब्राह्म) / ए

अगड/ अछि/ अड

तथ/ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओग

सोथि/ सोथ

जोरि/ जोरी/ जोर

बनेली/ बवहि

ते/ तँग/ तँ

जापरँ/ जपरँ

नग/ ने

डग/ डे

नहि/ ने/ नग

गग/ गो

डनि/ डनहि ...

समय मेरँदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेपव गत्यादि । असगबमे **द्वन्द्व** आ रिभक्ति जूठल छदे जना छदेसँ छदेमे गत्यादि ।



547X VIDEHA

अग/ जाहि/

जे

जहिठाग/ जाहिठाग/ अगठाग/ जेठाग

एहि/ अहि/ अग/ ए

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीर

भले/ भलेही/

भवहि

ते/ तग/ तग

अधर/ अधर

नग/ न

डग/ ड

नहि/ नै/ नग

गग/

ले

डहि/ डहि

डकन अडि/ लेव गडि

२.२. मेथिलीमे भाषा सम्पादन गार्थक्य

नीचक सूत्रमे देन बिकल्पमेसँ लेखज एडिटर द्वारा कोष कप डकन जेरौक टाली:

रौन्ड कथन कप त्राह:

१. होयरीना/ होरैयरीना/ होयरीना/ हेरैरीना, हेमरीना/ होयरीक/ होरैयरीक / होरैरीक

२. अ/ अ२



547X VIDEHA

खा

३. क जेले/क२ जेले/क३ जेले/क५ जेले/क५ जेले/क५/क२/क५/क५

४. भ गेन/भ२ गेन/भ३ गेन/भ५

गेव

३. कव' गेवाह/कव२

गेवाह/कव३ गेवाह/कव५ गेवाह

७.

बिथ/दिथ बिथ,दिय,बिथ,दिय/

१. कव' रैना/कव२ रैना/ कव५ रैना **कवेरैना/कव' रैना /**

कवेरैना

+ रैना रना (प्रकव), रानी (सूनी) ९

.

खाइव खाइ

१०. प्रायः प्रायह

११. दुःख दुख ९

२. चलि गेन **चव गेव/चैन गेन**

१३. देवबिह देवकिह, देवबिह

१४.

देखवहि देखवनि/ देखवैह

१३. **डबिह/ डनहि डबिह/ डलेन/ डवनि**

१७. **चवेत/दैत चवति/दैति**

११. एथला

प्रथला

१५.

रैठनि रैठण रैठहि

१९. ७/ ७२(सरगाया) ७



२०

. उ (संयोजक) उ/उ२

२१. हांशि/हांशि हांशि/हांशि

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुबव ना-बुबव

२४. केवहि/केवहि/कयवहि

२५. तखनतँ/ तखन तँ

२६. जा

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२७. निकवय/निकवय

वागव/ वगव रँहवाय/ रँहवाय वागव/ वगव निकव/रँहवै वागव

२८. उतय/ जतय जत/ उत/ जतय/ उतय

२९.

की बुबव जे कि बुबव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यादि(मोष पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यादि (मोष)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हंसय/ हंसय हंस२

३४. लो आकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३५. सस-ससव सस-ससव

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

की की/ की२ (दीदीकावसुमे २ रजित)

३८. जरायै जरायै



547X VIDEHA

३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दलाष दिशि दलाष दिशि/दलाष दिशि

४१

. लावाह गववाह/गववाह

४२. किड थीव/ किड थीव/ किड थीव

४३. जाग डव/ जाग डव जाति डव/जेत डव

४४. गहुँटा जेठ जागत डव जेठ जाग डव गहुँटा/ तेष्ट जागत डव

४५.

जराण (शर)/ जराण(शोजी)

४६. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४७. व/व२ कय/

कय

४८. एथल / एथल / एथल / एथल

४९.

थलीके थलीके

५०. गलीव गलीव

५१.

धाव गीव केनाथ धाव गीव केनाथ/केनाथ

५२. जेकाँ जेकाँ/

जकाँ

५३. तहिला तेहिला

५४. एकव अकव

५५. रैहिलु रैहिलाग

५६. रैहिल रैहिलि

५७. रैहिल-रैहिलाग

रैहिल-रैहिलु

५८. नलि/ ले



547X VIDEHA

३९. कबरौ / कबरौय/ कबरौय

३०. ठँ/ त २ तय/तय

३१. डैयारी ये डेर-बाय/डै, डेर-बाय/जय

३२. गितीये दू भाग/भाय/बाँय

३३. अ पोथी दू बाँक/ बाँय/ भाय/ जेव । यारत जारत

३४. याय ये / याय दूद याँक ययत

३५. देहि/ दय दयि/ दयहि/ दयहि दहि/ देहि

३६. द/ द२/ दय

३७. उ (संयोजक) उ२ (सरलाय)

३८. तका कय तकय तकय

३९. पोले (on foot) पयले कयक/ केक

१०.

तहुये तहुये

११.

पुलीक

१२.

रैजा कय कय / क२

१३. रैलाय/रैलाय

१४. लावा

१५.

तिका तिका

१६.

ततहिँ

१७. गवरौवहि/ गवरौवहि/

गवरौवहि/ गवरौवहि

१८. राँव राँव

१९.



547X VIDEHA

देह देह(अक्षर)

+०. दे दे

+१

. सो के सोके

+२. अक्षरका अक्षरका

+३. तुमिलव तुमिलव

+४. सुख

/ सुखका सुख

+५. सखलक सखलक +६.

दुख

+७. कवययो/७ कवयो ल देवक /कवयो-कवयो

+८. सुख

सुख

+९. सुख १-सुख

सुख १-सुख

९०. सुख-सुख सुख-सुख

९१. सुखरक

९२. सुखरक

९३. सुख

९४. सुख- सुख सुख

९५. सुख सुख

९६.

सुख (सुख अर्थमे)

९७. सुख सुख / सुख सुख सुख

९८. सुख

९९. सुख- सुख सुख/ सुख सुख

१००. सुख- सुख



547X VIDEHA

505.

बिबु बिन

50२. **झष झष**

50३.

झष (in different sense)-last word of sentence

50४. **छत गब थामि झष**

50३.

ल

50७. **खेवाष (pl ay) खेवाष**

50१. **शिकाषत- शिकाषत**

50४.

ठग- ठग

5०६

. गठ- गठ

55०. **कमिष/ कमिषे कमिषे**

555. **बाकष- बाकषे**

55२. **होष/ होष होष**

55३. **अडबन्त-**

उबन्त

55४. **बुँसमवहि (different meaning- got understand)**

55३. **बुँसमवहि/बुँसमवहि/ बुँसमवहि (understood himself)**

55७. **चमि- चमि/ चमि लाम**

55१. **खथाष- खथाष**

55४.

मोष पाँचवबिह/ मोष पाँचवबिह/ मोष पाँचवबिह

55६. **कैक- कषक- कषक**



547X VIDEHA

१२०.

वग वग

१२१. **जबेनाग**

१२२. **जबेनाग** जबेनाग- जबेनाग/

जबेनाग

१२३. **होगत**

१२४.

गबरेवहि/ गबरेवनि गबरेवहि/ गबरेवनि

१२५.

टिखेत- (to test) टिखेत

१२६. **कबरेयो** (willing to do) कबरेयो

१२७. **जेकवा- जकवा**

१२८. **तकवा- तेकवा**

१२९.

बिदेसब झामे/ बिदेसबे झामे

१३०. **कबरेनहुँ/ कबरेनहुँ/ कबरेनहुँ कबरेनहुँ**

१३१.

हबिक (डंकावा लबबक)

१३२. **उज्ज रज्ज अथसोचा/ अथसोस कागत/ कागचा/ कागज**

१३३. **थोषे भाग/ थोषे-भाषे**

१३४. **पिटा / पिटाया/ पिटाया**

१३५. **नथ/ ल**

१३६. **रेठा नथ**

(ल) पिटा जाय

१३७. **तखण ल (नथ) कहेत थडि। कहे/ सुले देखे तव दूदा कहेत-कहेत/ सुलेत-सुलेत/ देखेत-देखेत**

१३८.



547X VIDEHA

कतेक लोटे/ कताक लोटे

१३६. कयाँज-धयाँज/ कयाँज- धयाँज

१४०

. वग वग

१४१. खेवाँज (for playing)

१४२.

डबिया डबिया

१४३.

होवाँज होवाँज

१४४. का कियो / कउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.

कस (court -case)

१४७

. रेंनयाँज/ रेंनयाँज/ रेंनयाँज

१४८. झरनाँज

१४९. ककरी कसी

१५०. चवटा चटा

१५१. कर्म कवग

१५२. डुराँरै/ डुराँरै/ डुराँरै डुराँरै/ डुराँरै

१५३. एखनका/

खखनका

१५४. वग/ विखग (राकाक खतिग मोह)- वग

१५५. कखनक/

कवक

१५६. गवग गग



547X VIDEHA

१३.१

रवदी रदी

१३.१. सुना लोवाह सुना/सुना२

१३.२. एनाथ-लोनाथ

१३०.

तेना ल खेववहिल तेना ल खेववनि

१३१. नदी / ले

१३२.

चरो चरो

१३३. कतहु/ कतो कली

१३४. उमविगव-उमेवगव उमवगव

१३५. भविगव

१३६. दोन/दोथय दोएन

१३७. गग/गग

१३८.

के के

१३९. दररौजा/ दररौजा

१४०. ठाय

१४१.

धवि तक

१४२.

धुवि लोष्ट

१४३. खोवखेक

१४४. रहु

१४५. रो/ तु

१४६. रोहि(गद्यमे ग्राह)

१४७. रोली / रोहि



547X VIDEHA

57+

कबरौण्ड कबरौण्डे

57६. एकैठी

5+0. कबितमि / कबतमि

5+5.

गुँटि गुँट

5+२. बाखवहि बखवहि/ बखवनि

5+३.

वगवहि वगवनि वागवहि

5+४.

बुनि (उँटावा बुजा)

5+३. बडि (उँटावा अगड)

5+७. एवमि लोवमि

5+१. रिंतोल/ रिंतोल/

रिंतोल

5+4. कबरौण्डहि/ कबरौवनि

कवेवमिह/ कवेवमि

5+६. कवएवहि/ कवेवनि

5६०.

आकि/ कि

5६5. गुँटि

गुँट

5६२. रँती जवाग/ जवाग जवा (आगि वगा)

5६३.

से से

5६४.



547X VIDEHA

हॉ ये हॉ (लॉये हॉ बिभक्तिमे ल्हा कय)

१७३. ल्यव ल्येव

१७७. श्रुणव(spacious) ल्येव

१७१. लोयतहि/ लोयतहि/ लोयतनि/लेतनि/ लेतहि

१७४. हाथ मटियाएरै/ हाथ मटियाएरै/ हाथ मटियाएरै

१७७. ल्येका ल्येका

२००. देखीए देखी

२०१. देखीए

२०२. सउरि सउव

२०३.

सालेरें सालेरें

२०४. गोलोह/ लोवहि/ लोवनि

२०५. लेरौक/ लेरौक

२०७. केजौ/ कएजहूँ/केजौ/ केजौ

२०१. किछु न किछु/

किछु ल किछु

२०४. घुमेजहूँ/ घुमओजहूँ/ घुमेजौ

२०७. एजाक/ अजाक

२१०. अः/ अह

२११. वय/

वय (अर्थ-गविरुतन) २१२ कनीक/ कलक

२१३. सरौलक/ सलक

२१४. गिला२/ गिला

२१५. क२/ क

२१७. जा२/

जा

२११. अ२/ अ२



२१५. भ२ / भ' (' यण्ठक कमीक द्यातक)

२१६. निथय/ नियग

२२०

.लेबर्दथवा/ लेबर्दयव

२२१. गहिव अफव ठा/ रौदका/ रौचक ठ

२२२. तहि/ तहिं/ तथि/ तै

२२३. कहि/ कही

२२४. तँअ

तै / तअ

२२५. नँग/ नगँ/ नथि/ नहिले

२२६. हे/ ह्य / एवीहै/

२२७. डथि/ डै/ डैक / डग

२२८. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२२९. थी (come)/ थीं (conj unct i on)

२३०.

थी (conj unct i on)/ थीं (come)

२३१. कला/ कोला/ कोना/ कना

२३२. कोलैह-कोवहि-कोवनि

२३३. कोरौक- कोएरौक

२३४. कोलौ- कएलौ- कएनहू/ कोलौ

२३५. किड न किड- किड ल किड

२३६. कोहन- कोहन

२३७. थीं (come)- थीं (conj unct i on -and)/ थीं । थीं- थीं / थींह- थींह

२३८. हएत- हेत

२३९. युमेनहू- युमेनहू- युमेवाट

२४०. एवाक- अएवाक

२४१. कोनि- कोना/ कोहि/



२४२. उ-बाग उ आगक रीट(conjunction), उ२ कहक (he said)/उ

२४३. की ह्य/ कोसी थपवी ह्य/ की हे । की हज

२४४. दृष्टिअँ/ दृष्टियै

२४५.

. गोपिय/ आमेव

२४६. ठै / ठै/ तमि/ तहँ

२४७. जौ

/ जाँ जौ

२४८. सभ/ सरौ

२४९. सभक/ सरौक

२५०. कहि/ कही

२५१. कला/ कोला/ कोलहँ/

२५२. शबकती भ२ लव/ भ३ लव/ भ४ लव

२५३. कोना/ कोना/ कना/ कना

२५४. थः/ थह

२५५. जले/ जगए

२५६. लोवनि/

लोवह (अर्थ परिवर्तन)

२५७. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२५८. नय/ नय/ नयह (अर्थ परिवर्तन)

२५९. कनीक/ कलक/ कनी-मनी

२६०. गठवहि गठवनि/ गठवजल/ गगठवहि/ गठवोवनि/

२६१. निथय/ नियम

२६२. हेबटथव/ हेबटथव

२६३. गहिव अफव कहल ठा रीटमे कहल ठ

२६४. आकावाप्तमे रिंकावीक प्रयोग उचित ले/ अपोद्धातकीक प्रयोग शक्य तर्कीकी न्यूनताक परिचायक
उकव रँदना अरग्रह (रिंकावी) क प्रयोग उचित



547X VIDEHA

२७३. कव (पद्यमे खाल) / -क/ क२/ के

२७३. डेहि- डहि

२७१. वल्लो/ वल्लोये

२७४. लोएत/ लएत

२७५. जएत/ जएत/

२१०. खएत/ खएत/ खओत

२११

. खएत/ खएत/ खेत

२१२. खिखएरौक/ खिखरौक/ खियरौक

२१३. गुक/ गुकल

२१४. गुकले/ गुकल

२१३. खएतल/ खओतल/ एतल/ एतल

२१३. जहि/ जाग/ जग/ जे/

२११. जखत/ जेतए/ जगतए

२१४. खएव/ खएव

२१५. केक/ कएक

२१०. खगव/ खगव/ खगव

२१५. जख/ जखए/ जख (नामति जख नगनीह ।)

२१२. बुकएव/ बुकएव

२१३. कर्तृखएव/ कर्तृखएव

२१४. तहि/ ते/ तग

२१३. गायरौ/ गाएरौ/ गएरौ

२१३. सके/ सकए/ सकय

२११. सेवा/ सवा/ सकए (भोत सवा जेव)

२११. कहेत बली/ देखेत बली/ कहेत डलो/ कहे डलो- खलिा चलेत/ पडेत

(पडे-पडेत अर्थ कखला काव परिवर्तित) - खी बूसे/ बूसेत (बूसे/ बूसे छी कदा बूसेत-बूसेत)/ सकेत/ सके । कलेत/ कले । दे/ देत । डे/ डे । बूसे/ बूसेक । बखरौ/ बखरौक । बिग/



बिष। बातिक/ बाहुक बुंसो आ बुंसोत केव अण-अण जगहन प्रयोग समीचन अछि। बुंसोत-
बुंसोत आबे बुंसमिष। हमर बुंसो छी।

२५६. दुखीब/ द्वाब

२५७. भेष्ट/ भेष्ट/ भेष्ट

२५८.

अण/ अण/ अना (लेव अण लेव अण)

२५९. तक/ धवि

२६०. ग२/ हो (meaning different - जनरों ग२)

२६१. म२/ सँ (हुदा द२, न२)

२६२. उ२. (तीन अक्षरक मेन रँदना प्रकृष्टिक एक आ एकठा दोसबक उ२योग) आदिक रँदना ह
आदि। मह उ२/ मह उ२/ कर्ता/ कर्ता आदिये उ स२अक कोना आर२कता मैथिलीमे ले अछि। र२

२६३. रँसी/ रँसी

२६४. रँना/ रँना रँना/ रँना (बहेरँना)

२६५

२६६. रावी/ (रँदनेरावी)

२६७. राती/ राती

२६८. अ२बिष्टिय/ अ२बिष्टिय

२६९. मेथ/ मेथ

२७०. म२बका/ म२बका

२७१. वाली/ वाली (

भेष्टे/ भेष्टे)

२७२. वागव/ वागव

२७३. हरी/ हरी

२७४. बा२वक/ बा२वक

२७५. आ (come)/ आ (and)

२७६. प२ताग/ प२ताग

२७७. २ केव रारहाव शैक अ२मे मा२, यथा२तर री२मे ले।

२७८. कहैत/ कहै



३५०.

बहव (डव)/ बहे (डवे) (meaning different)

३५१. तागति/ ताकति

३५२. खवाग/ खवारै

३५३. रौगग/ रौगि/ रौगिगि

३५४. जार्ति/ जार्ति

३५५. कागज/ कागज/ कागत

३५६. गिरे (meaning different - swallow)/ गिरव (थस्य)

३५७. बह्दिय/ बह्दिय

गोस्त्रीयचिन्तनधुनिकजीवनयोर्भिः संश्लेषः ।



रिद्यारचस्पति डा. सदशन्दनाः [1]

=====

कल्लिकारः-

सकावामेकं चिन्तनम्, बह्दियनिर्माणम्, रिद्यिकर्णम्, संस्कृतसंश्लेषम् ।

शोभाः-

निधिलेखिन् रिद्ये शोभासुखीयं स्वरुं रिद्यत एर । सा शोभाः काविकी आद्यटिकी
आद्यहोनिर्माणिकी आत् । कथं शोभा एतादृक् महनीयं स्वरुं भजते ? उतवम् अस्ति
स्वप्नसुमेर । जगति सरुव प्रतिस्पर्हा दृष्टते । रज्जुः न्युनता उपायोगकर्तृणां आधिक्यं तु
दृष्टत एर । एरमेर कार्वा यत् सांश्रुतं जगति सरुव अशोभाः रिष्कातः आतर्कः बृष्ण



स्तुत्यं हिमा अनाटावः द्वाटावः अवाटावश्च प्रवर्तमानः रिश्यामर्षं रितीययन्ति, निवागमः रौणाः
युराणः वृक्षाश्च निहन्त्यश्च अरिनाऽपद्रियन्त्यश्च पथिगृहे यात्रायाम् जनाः आमोमन्त्रवक्तितमन्त्रभरन्ति ।
मानरीयः रिश्यामः खण्डितः दृष्टते । ऐतिकमुद्यानि जीरणादपाप्तानि भवन्ति ।
धर्मद्वेषेच्छार्थकामश्च समाद्रियते ।

अस्माकं प्रवतः निवाजते दृढतरोऽयं प्रश्नः यत् शिष्टिः एव समाश्याः कावणभूता
अथवा अस्ति कश्चन प्रद्वेषः शत्रुः यः अशीष्टिं जनयति, रिष्कात्तद्गोदयति, आतर्कं ररुहयति,
अनाटावद्वाटावदीन् प्रसूयति । यद्यस्ति तर्हि तस्य निवासः कथं भवितुमर्हति येष अस्माकं बाह्यैश्च
निर्मातावः युराणः विकसितबाह्यैक्ये भावतस्य श्रुतिं शीघ्रा रिश्याकन्यामाश्रयन्ति कवियाश्रितेर
एतस्य शोधपत्रस्य रिचयनस्तु भवति ।

=====

नवम् दुर्वलं लोके रिग्या तत्र सुदुर्वल ।

करिष्वं दुर्वलं तत्र शिष्टिस्तत्र सुदुर्वल ॥

भ्रुमन्तरीकवाशु गृह हागे सरत्रे प्रतिस्पर्छां दवीदृष्टते । सरत्रे जनाः स्वकीयकार्यमिच्छार्थं
सरथा मणे करन्ति । न हि सरत्रे जयश्रीप्राप्तिः स्वाभाविकी । तर्हि मम रिष्कात्तः संजायते ।
जनाः सरथा अगान् उपानम्यन्ति । अरसादग्रस्तां भ्रुवा स्वकीयकर्म अपि ते न करन्ति । ते
चिन्तयन्ति यत् किम् अलम् ? किमेतस्य फलम् ? फलतः दिवादिदिनं ते गतोऽपि लैवाश्रिता
प्राप्नुवन्ति । ते शिष्टिं बहिताः सन्ति गति न । यतो हि सहजा शिष्टिः तु जीरमात्रस्य प्रते
भवति तत्रापि मन्त्र्याणां प्रते तु रिशेयक्ये भवति । मन्त्र्या तु सहजा सहर
उपोद्याश्रितिशिष्टयः अपि भवन्ति । गुरुजनाद्यकस्या, अन्तासरशात् अपि सम्दर्भितकार्ययोग्याता
भरितुमर्हति । अस्माकं महनीयग्रन्थस्य लैकानि उदहकानि मिनन्ति । यत्र जनाः अन्तासद्वावा
कठिनतर्मा कार्ये रिधाय जीरणसमवाश्रये जयं प्राप्नुवन्तुः । तर्हि शिष्टिर्गति अरसादादीनां कावाकपा
गति मन्त्र । तर्हि किमन्त्र ?

उच्यते “मण एव मन्त्र्याणां कावा ररुहयोः” । कि नाम मणः ?
सकम्परिकम्पायैकं मणः भवति । अलम् एव प्रस्तुयते रिक्म्पाः । तदस्य वृक्षा निर्धारिते यत्
एतत् उचितम् एतत् न उचितम् गति ।

एरमेर सा शिष्टिः सकावामेक अथवा सकावामेकमार्गसि कार्यं करोति । यदि जनाः
सकावामेकचिन्तनद्वावा प्रेरितो भ्रुवा कार्यं सम्पादयन्ति तर्हि सरत्रे स्व-शास्त्रवराश्रित्भरति अपर्वा
चिन्तनं तमरणति माश्रं दर्शयति गति ।

एतस्मात् कावात् यजूर्दे शिरस्र्कम्पसुञ्ज वथकपकमाधामेण मययः जीरणं कथं
यापनीयमिति निदर्शयन्ति । यथा प्रशिक्षितः वथचानकः अश्विनियन्त्रापुरिकं वथं नयति तथैव
उचितान्तरितं माश्रं चिन्ता सम्याक् कपेण गन्तराश्रानं गन्तराम् । अतो अस्माकं स्र्कम्पः[2] शिरमयाः
नाम कन्याकवः श्यात् । अत्र सकावामेकचिन्तनस्य रीजम् अश्रुर्गिहितं रिद्यत एव । यतो हि यदि
सकावामेकं चिन्तनम् एव न श्यात् तर्हि कथं उचितान्तरितः रिरेकः श्यात् ।

गथे तु स्पष्टं यत् सकावामेकं चिन्तनम् एव बाह्यैश्च उन्नतेः आरश्रकम् । कि
सकावामेकचिन्तनेन भरतुमर्हति गति रिशेदकपेण यदि रिरेकेना कर्यात्तु गतो स्पष्टता
समापतियति । हिन्द्याम् एकं कथनम् अस्ति “मण के हार हार है मण के ज़ीते ज़ीत” । साधु

एर उँउम् अत्र केनचित् । एतत् सकावमेकं चिन्तुर्न कथ्यागच्छत् गति रिचावीयम् । एतस्य प्रते पृथ्वाभूमि कप्पे कानिचित्तुल्लानि भवन्ति तद्दश्रुत्वागति ।

तत्र आदौ वैर्यस्य अरुहितिः भवति । ज्वरले साहज्यार्थं वैर्यस्य भूमिका तु रिदितम् एर । उँउम् अपि नीतिकारिः “**द्विदता धीवतया रिवाजते, कर्त्तव्यं चेष्टतया रिवाजते**” । तदस्य आशि समागतति । आशि सर्रथा रँनरती भवति । यदि आशि आतर्हि सहजतया सकावमेकं चिन्तुर्न भवति । महाभावते यदा शैलस्य प्रते सेनापतिभावनिमित्तम् अरसवः ददाति दूर्योधनः तदा शैलाः ज्ञानाति यत् रर्न किं कर्त्तुं प्रभवामः तथा स आशिगीपुत्र कथयति-

“ गते दाणे गते जीव कर्णे च मयितिजये ।

आशि रँनरती वाजन् शैला जेष्यति पाँडवान् ॥ 41”

सन्तुष्टिः अपि पकमारुथकी । यदि सन्तुष्टिः न आतर्हि सकावमेकं चिन्तुर्न कथमपि नागच्छत् गति । उँउम् अपि मनीषिभिः ‘ **सन्तुष्टाय पर्ययं सुखम्** । ’ अत्रसुख्यागच्छति प्रेवकतुल्लानि अस्माकं पवितः यादृश्यातारवर्णं भवति तस्यैर चिन्तुणमपि जायते । अतो सर्रथा प्रवृज्जनां पवितः एर रानः आत् यत्र सर्रथा श्रेयस्करं चिन्तुणम् एर जायते । तदस्य चिन्तुर्न नष्क्यागच्छति अतो नष्क्यस्य महती भूमिका भवति सकावमेकचिन्तुणस्य प्रते । अर्जुनः यदा शैवरेधनपवीष्क्यायाम् आसीत् तदा स केरर्न कल्पितथगस्य ज्ञेयम् एर पथेन् आसीत् । यदि स एर न प्रतरान् आत् तर्हि तत्र शैवाश्रिताम् एर आगत् रिद्धुर्नान्नशासनं करियातीति निश्चेष्टः । नष्क्येण सहैर सकावमेकचिन्तुणस्य प्रते आरुथकता रिद्यते सद्गतितादर्शस्य । यत् कर्त्तुम् गच्छति ज्वरले तस्य प्रते केचित् नियमाः श्युः अथवा रिद्धुर्नान्नम् आगच्छति । आदर्शेण सह ज्वरलस्य रिदिपेशे सुपेशे साहज्यमपि आरुथकम् । अथवा शैवाश्रितम् आगच्छति । समग्रकप्पे नीतिनियमान्मालो यदि कार्यं न सिध्यति तर्हि पुनवारलोकणं आत् । उँउमपि ‘ **यत्रे प्रते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः** ।

अत्र ध्यातराम् अस्ति साकलान रिश्चिकणायाम् एर अतीप्रम् । तत्रैर अर्न्तया ज्ञानायाम् अथवा वाष्ट्रेश्चरिकासः गति । एतदर्थं सकावमेकं चिन्तुणस्य सहैर भत् गवशाग्नगमर्न सर्रथा आरुथकम् । यतो हि भत् गवशाग्नधावी अतीरमहनीया । एर्न रिहाय ज्ञानां, वाष्ट्रीणाद्गत् रिश्चिन्तु कणां शैर भरिन्तुर्नहिति । अत्र भत् गति शैतिक नियमान् अग्नपानर्न न केरर्न ज्ञानां प्रते आरुथकम् अपितु तत्तद्वशेषे याः नियामकसंस्थाः रिद्यन्तु तस्मां प्रते अपि । अथवा अस्माकं देशे श्रुष्टाचकारिरोपि आन्दानम् प्रचलितम् अस्ति । तत्र मुनतः संस्थान् तत्तद्विशयानामग्नपानर्न न भवति, कर्मकवाः स्वकीर्णं कार्यं रोऽत् ज्ञेयं गति एर कावाम् । अतो संस्थान् प्रते भत् गवशाग्नधावीवग्नपानर्नम् अतीर महत्पूर्णम् गति ।

यदि उँउम् भत् गवशाग्नपानर्न आतर्हि क्व रिप्रतिपत्तिः ? क्व असहिष्णुता ? अहमेर श्रेष्ठः गति मन्थानाः ज्ञानाः सर्रव असहिष्णुतां जषयन्ति । मुनतया संघर्षस्य गदमेर कावाम् । मदीयः धर्मः श्रेष्ठतवः गति धर्मोद्यादस्य कावाम् । अस्माकं महर्षयः सर्रयां समाधानपवर्कं राकं पुर्रमेरोद्गाथितरन्तुः सन्ति ।

“ एकं सद् रिथी रँरुधा रदन्ति । “

प्रसादशुभ शिरतोयार्थं तुति वचयन् नूनमेर जषयितार्थं निगदितरान्-

करुणा रेचिद्यादृष्टुं कर्त्तव्यं नापञ्चयाम्,



बृतीमेरु गयाम्भूमि पयसार्थीर अर ।

उडुम् अत्र तेष उडुं यत् विरिधनदीनां जनम् यथा अङ्गिमर्या निमङ्गति तथैर विरिधमताणां स्थितिः
क्रुया गति ।

निश्चर्यः -

विरिधतापादनाः जनाः सर्रथा सुश्रेयार्थं यतन्ति । तत्र जीरणसगवाश्रुषे सकावामेकचित्तुणश्च
महती अपेक्षा ररते । यतो हि अग्रह क्रुष्टमिण नाम लेवाश्रु महतीराधिकपे अस्मान् प्वतः
रिद्यते । यस्याः समाधानं सकावामेचित्तुणश्च एर सम्भरति । यदा जनाः एकराव लेवाश्रु प्राणुरन्ति
तदन्व तत्रैर ररिहाः भरन्ति । तेया निरावणे मति एर वाश्रुश्च सद्गतिः सम्भरा । यतो हि
हराणः देशेश्च आधावकपाः । यदि ते एर लेवाश्रु भजन्तु तर्हि वाश्रुश्च का गतिः ? अस्तु
धत् प्रभुत्वापायद्वावा जनाः सर्रथा सकावामेक चित्तुणं विधास आमोन्नतिसरैर वाश्रुन्नतिप्वरम्सर्व
रिम्भकनाशं कर्रविरेर एतश्च पत्रशुभाश्रुम् । यज्जुर्दे वाश्रुमगनकपे अस्मन्मानीविभिवशि
भनीतम्-

आ अरुण् अरुणो अरुणरुसी जायतमावाश्रु वैजन्तुः शुव गयराति राधी महावयो
जायतम् । दोग्ध्री धेनुर्गोठान्द्राणासुः मष्टिः प्वरिधुर्योया जिष्णु वथेष्टा मभेयो हराश्च
यज्जमानश्च..... ।

॥ शम् ॥



सन्दर्भः

- श्रीमद्भगवद्गीता शीर्षवताया, प्रकाशिसंस्थान-गीताप्रेस गौवखण्वर्य-2008
- श्रीमद्भगवद्गीता (हिन्दी अक्षरवाद) प्रकाशिसंस्थान- गीताप्रेस गौवखण्वर्य-2009
- Vi dy ābhūṣaṇa, Rāj endr anāt ha. *Kāl i dāsa Grant hāvalī*. Kol kat a: Basumat i , (7th Edi tion).
- Chakrabart i , Mhit (1997), “Val ue Educat i on changi ng Per spect i ves”, New Del hi , Kani shka Publi sher s, Di stri but or s
- Gupt a, N.L. (1997), “Educat i onal Ideal s and Insti tut i on s i n Mahabhar at a”, New Del hi : Mhit Publi cat i on s.
- Kondada Ramayya, P. (1997) - “The li ght of Ramayana”, Hyder abad : Ar sha Vi jnana Trust .
- Kul shr est ha, S.P. (1969) - “Test and Manual for a test of Democr at i c Val ues”, Lucknow: Indi an Psychol ogi cal Cor por at i on.
- Venkat ai ah N. (1988) - “Val ue Educat i on”, New Del hi : A.P.H Publi shi ng Cor por at i on.
- Google.co.in (googl e sear ch)

[1] व्याकवर्णितभागाध्यायः, ज.ना.ब्र.आ.सं.म.रि.अगमा, दवर्तंगा, रिहावः। प्राग्भारतशिक्षारिद् सदस्यः
भारतसरकाराधीनः

[2] स्वभावविपरिवर्तनान्तरिगन्तव्ययाम्नीयतेतिः स्वतिरिजिन गव ।

द्व्युत्पत्तिर्वा यदजिर्वा जरिर्वा तन्वा मलः शिरसकम्पमत्तु । शिरसकम्पसुम्तु, यज्जुर्दे ।

[3] नीतिग्रन्थादुद्धृतः ।

[4] महाभावतात् ।

DATE-LI ST (year – 2012-13)

(१४२० क्रमिकी साव (

Marriage Days:

Nov.2012- 25, 26, 28, 29, 30



547X VIDEHA

Dec.2012- 5,9, 10, 13, 14

January 2013- 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013- 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013- 21, 22, 24, 26, 29

May 2013- 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31

June 2013- 2,3

July 2013- 11, 14, 15

Upanayana Days:

January 2013- 16

February 2013- 14, 15, 20, 21

April 2013- 22

May 2013- 20, 21

Dviragaman Din:

November 2012- 25, 26, 28, 29

December 2012- 2, 3, 14

February 2013- 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013- 1

April 2013- 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013- 12, 13

Mundan Din:

November 2012- 26, 30

December 2012- 3

January 2013- 18, 24



February 2013- 1, 14, 15, 20, 28

April 2013- 17

May 2013- 13, 23, 29

June 2013- 13, 19, 26, 27, 28

July 2013- 10, 15

FESTIVALS OF MTHILA (2012-13)

Mauna Panchami -08 July

Madhusravani - 22 July

Nag Panchami - 24 July

Raksha Bandhan- 02 Aug

Krishnastami - 10 August

Kushi Amavasya / Somvati Vrat - 17 August

Vishwakarma Pooja - 17 September

Hartalika Teej - 18 September

ChauthChandra-19 September

Karma Dharma Ekadashi -26 September

Indra Pooja Aarambh- 27 September

Anant Caturdashi - 29 Sep

Agastyarghadaan- 30 Sep

Pitri Paksha begins - 30 Sep

Jimootavahan Vrat / Jitija-08 October

Matri Navami - 09 October



547X VIDEHA

Somvat i Amavasya Vr at - 15 Oct ober

Kal ashst hapan- 16 Oct ober

Bel naut i - 20 Oct ober

Pat r i k a P r a v e s h - 21 Oct ober

Mahast ami - 22 Oct ober

Maha Navami - 23 Oct ober

Vi j aya Dashami - 24 Oct ober

Koj agar a- 29 Oct

Dhant er as - 11 November

Di yabat i , shyama pooj a-13 November

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-14 November

Bhr at r i dwi ti ya/ Chi tr agupt a Pooj a- 15 November

Chhat hi -19 November

Devot t han Ekadashi - 24 November

r avi vr at ar ambh- 25 November

Navanna par van- 25 November

Kar t i k Poor ni ma- Sama Vi sar j an- 28 November

Vi vaha Panchmi - 17 December

Makar a/ Teel a Sankr anti -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 08 Febr uar y

Basant Panchami / Sar aswati Pooj a- 15 Febr uar y

Achl a Sapt mi - 17 Febr uar y

Mahashi var at r i -10 Mar ch



Hol i kadahan -Fagua -26 Mar ch

Hol i - 28 Mar ch

Var uni Trayodashi -07 April

Chai ti navar atr ar ambh - 11 April

Jur i shi t al -15 April

Chai ti Chhat hi vr at a -16 April

Ram Navami - 19 April

Ravi Br at Ant - 12 May

Akshaya Tritiya -13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savitri -bar asai t - 08 June

Ganga Dashhar a -18 June

Somavat i Amavasya Vr at a - 08 July

Jagannat h Rat h Yat ra - 10 July

Har i Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gur u Pbor ni ma -22 Jul

VI DEHA ARCHI VE

अक ब्रैल पत्रिकाक सभ्ठी पुवाष-रिदेह ज, तिवहूत आ देरशागवी कशमे Vi deha e journal 's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह जअक ३.०पत्रिकाक पहिन -

रिदेह जमा सँ आगाँक अक ३.०पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>



२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maitihili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

इडियो संकलनअ मैथिली. Maitihili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४. मैथिली वीडियो संकलन Maitihili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-videos>

३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / मिथिला चित्रकला. Mithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

बिदेहक एहि सब मल्लयोगी विकसव सेहो एक खेव जाई ।

७. बिदेह मैथिली क्विज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूत अग्रोकेषव :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

+ बिदेह मैथिली साहित अंग्रेजीमे अणुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

९. बिदेहक पूर्व-कप "भानसविक गाछ" :

<http://gajendratihakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गडिअ :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह फागल :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिन तिवहता (मिथिलाअरव) जानबूत (बैंगल)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह: खेव: मैथिली खेवमे: पहिन खेव बिदेह द्वावा



547X VIDEHA

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archiv.blogspot.com/>

१३. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१३. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१४. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०. प्रकाशिन श्रुति.

<http://www.shrutipublication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>

२२. http://groups.yahoo.com/group/VI_DEHA/

२३. गजेन्द्र ठाकुर गजेन्द्र

http://gajendratyakur123.blogspot.com

२४. लषा लुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>


२३. बिदेह लेडियोकरिता आदिक पहिल पोडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>



547X VIDEHA

२७.  Vi deha Radi o

२१.  Joi n of fi ci al Vi deha f acebook gr oup

२४. बिदेह मैथिली नाँठे डेस

[ht t p://mai t hi l i -dr ama.bl ogspot .com/](http://maithili-drama.blogspot.com/)

२६. समादिया

[ht t p://es amaad.bl ogspot .com/](http://esamad.blogspot.com/)

३०. मैथिली फिल्म

[ht t p://mai t hi l i f i l ms .bl ogspot .com/](http://maithilifilms.blogspot.com/)

३५. अचिन्हार आखर

[ht t p://anchi nhar akhar kol kat a.bl ogspot .com/](http://anchinharakhar.kolkata.blogspot.com/)

३२. मैथिली हाङ्कु

[ht t p://mai t hi l i -hai ku.bl ogspot .com/](http://maithili-hai.ku.blogspot.com/)

३३. मानक मैथिली

[ht t p://manak -mai t hi l i .bl ogspot .com/](http://manak-maithili.blogspot.com/)

३४. विहानि कथा

[ht t p://vi hani kat ha.bl ogspot .i n/](http://vihani.katha.blogspot.in/)

३३. मैथिली कविता

[ht t p://mai t hi l i -kavi ta.bl ogspot .i n/](http://maithili-kavita.blogspot.in/)

३६. मैथिली कथा

[ht t p://mai t hi l i -kat ha.bl ogspot .i n/](http://maithili-katha.blogspot.in/)

३१. मैथिली समालोचना

[ht t p://mai t hi l i -s amal ochna bl ogspot .i n/](http://maithili-samalochna.blogspot.in/)



महत्त्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILBLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



बिदेह:सदेह:१: २: ३: ४:३:७:१:+२९९० "बिदेह"क छिष्ट संघवर्ग: बिदेह-डी-पत्रिका
 (<http://www.videha.co.in/>) क छूत बरणा समिहित ।

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।



Details for purchase available at publisher's (print-version) site
<http://www.shruti-publication.com> or you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c) २००४-१३. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम बहि अछि ततए संग्रहादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । ISSN 2229-547X VI DEHA **सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: उमेश मंडव । सहायक सम्पादक: निर कमार सा आ क्लृप्ती (मलाज कमार कर्ण) । ज्यो-सम्पादन: नागेश्वर कमार सा आ गङ्गाकर विद्यालक्ष सा । कव-सम्पादन: ज्योति सा टोषरी आ बग्नि लेखा मिहा । सम्पादक-मोक्ष-अनुषा: सा. ज्यो रमा आ सा. बज्जीर कमार रमा । सम्पादक- नाथक-बगमि-चवचि-रौल ठाकुर । सम्पादक- सुनो-सम्पर्क-समाद- पुनम मंडव आ हिर्यका सा । सम्पादक- अश्वराद विजाग- विनीत उषेव ।**

बचनाकार अणम मूलिक आ अणकाशित बचना (जकब मूलिकताक संपूर्ण उतबदासिह लेखक गणक मध्य डहि) ggajendra@videha.com केँ मेल अटैचमेण्टक कगमै .doc, .docx, .rtf वा .txt हगमैठेमे पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकार अणम सक्रिणु परिचय आ अणम केल कएन गेल ह्माठे पठैतह, मे आशा करैत छी । बचनाक अंतमे ठागण बहय, जे ङ बचना मूलिक अछि, आ पहिने प्रकाशिक हेतु बिदेह (पाष्किक) ङ पत्रिकालेँ देन जा बहन अछि । मेल प्राप्त होयरीक बाद यथामुभर शीघ्र (सात दिनक भीतब) एकब प्रकाशिक अंकक सूचना देन जायत । ' बिदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका अछि आ एंमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ सरिहित बचना प्रकाशित कएन जागत अछि । एहि ङ पत्रिकालेँ त्रीमति नम्रा ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिकेँ ङ प्रकाशित कएन जागत अछि ।

(c) 2004-13 सर्वाधिकार सुरक्षित । बिदेहमे प्रकाशित सज्जा बचना आ आर्कागरक सर्वाधिकार बचनाकार आ संग्रहकर्ताक नगमे छहि । बचनाक अश्वराद आ पुनः प्रकाशिक किरा आर्कागरक उणयोगक अणिकाक किररीक हेतु ggajendra@videha.com पब संपर्क कक । एहि सागठकेँ त्रीति सा ठाकुर, मधुनिका टोषरी आ बग्नि शिवा द्वारा डिजागण कएन गेल ।



सिद्धि बडु



